समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

अगस्त २००४ ♦ वर्ष ५४ ♦ अंक ८ ♦ एक प्रति १० रुपए ♦ वार्षिक १०० रुपए

हम क्या होंगे

आधुनिक परिवेश

दौरे ही दौरे

सरकार के १०० दिन

कुर्सी कुर्सी कुर्सी

नारी करुणामयी

अनुभव बांटे

देश के नये रुपक

राजस्थान फाउण्डेशन के साथ

१५ अगस्त झंडोत्तोलन

अखिल भारतीय समिति राऊरकेला में

भीषण बाढ़ व राहत कार्य - प्रादेशिक सम्मेलन आदि आदि

With best compliments from

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Exporters & Manufacturer of Sponge-Iron

RUNGTA HOUSE
Chaibasa – 833 201
Jharkhand, India
Phone: (06582) 256861,256761, 256661
Cable: Rungta
Fax : 91-6582-256442
E-mail : rungtas@satyam.net.in
Website:http://www.rungtamines.com

Mines Division :

Barajamda – 833 221
Dist. Singhbhum (W)
Jharkhand, India
Phone : (06596) 262221, 262321
Fax: 91 – 6596 – 262101
Cable : Rungta

Regd. Office:

8A, Express Tower
42A, Shakespeare Sarani
Kolkata – 700 017, India
Phone : 033 - 2281 6580, 22813751
Fax : 91-33- 2281 5380
E-mail : rungta_cal@sify.com

Sponge –Iron Division

Main Road,
Barbil – 758 035
Dist. Keonjhar
Orissa, India
Phone : (06767) 276891
Telefax : 91- 6767- 276891

इस अंक में

अनुक्रमणिका	३
जनवाणी	४
अध्यक्ष की कलम से / *श्री मोहनलाल तुलस्यान*	५
आधुनिक परिवेश में / *हरीशंकर सिंघानिया*	६
एक भूमि है - *कविता*	७
मनमोहन सरकार के १०० दिन / *सीताराम शर्मा*	८
नारी सच्ची मित्र / *भानीराम सुरेका*	९
देश के विकास के लिए / *राम अवतार पोद्दार*	
सामाजिक व्यक्ति कौन / *मौजीराम जैन*	११
१९८४-८५ के दौर / *नन्दकिशोर जालान*	१२
स्वर्ग में या नर्क में / *छगनलाल व्यास*	१४
अनुभव बांटने को / *सोम गोयनका*	१५
प्यारा राजस्थान, एक नया विश्वास - *कवितायें*	१६
अन्तर्जातीय विवाह / *श्यामसुन्दर हरलालका*	१७
दहेज आधुनिकीकरण / *गिरधारीलाल जगतरामका*	१८
कुर्सी... कुर्सी... कुर्सी... / *ओमदत्त जोशी*	१९
झमकू न जस / *सुनील जैन*	२०
मन की बात / *कविता*	२०
धर्म व माया की तुला पर बैठे पंडे	२१
साड़ी से बाड़ी तक / *मनोहरलाल गोयल*	२२
गीत नहीं गावू हूं - *कविता*	२२
चार कविताएं...	२३
मां बेटी रो हाल देखर... / *सावित्री चौधरी*	२४

युग पथ चरण

★ १५ अगस्त-झंडोत्तोलन-राजस्थान फाउन्डेशन के साथ अखिल भारतीय समिति - राऊरकेला प्रादेशिक सम्मेलन की रिपोर्टें

★ बाढ़ में राहत कार्य अ.भा. मारवाड़ी महिला सम्मेलन, अन्य संस्थाएं - सम्मान, श्रद्धांजलि - भूल सुधार

२६-३४

समाज विकास

अगस्त, २००४

वर्ष ५४ ● अंक ८

एक प्रति- १० रु.

वार्षिक- १०० रु.

समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।

२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।

३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।

४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।

५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।

६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।

७. भारत के कोने-कोने में फैले हुए ९ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।

८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु

ग्राहक बनिये / बनाइये
लिखिये / लिखाइये

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७, फोन : २२६८-०३१९ के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता- ७०००१३ में मुद्रित।

संपादक-नंदकिशोर जालान

ज न वा णी

इस स्तम्भ के अंतर्गत सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर पाठकों के मतों का स्वागत है। साथ ही समाज के आंतरिक एवं गहन विषयों तथा समाज विकास में प्रकाशित सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव भी आमंत्रित है। - सम्पादक

आपका पत्र पाकर मैं गदगद हो गया। मन में उत्कट अभिलाषा है कि आप जैसे संत पुरुष के साक्षात दर्शन कर पाऊं, जिन्होंने कई दशकों से अपनी वाणी व व्यक्तित्व से समाज को गौरवान्वित व मार्ग-दर्शन दिया है। राजस्थानी भाषा के प्रति मेरे मन में जो लगाव व पीड़ा थी, उसे ही मैंने व्यक्त किया था। इस विषय में मेरा ज्ञानवर्धन कर आपने जो स्नेह दर्शाया है, मैं आपका आभारी हूं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि राजस्थानी भाषा का शीघ्र ही सर्वमान्य व्याकरण स्वीकृत होगा और पूरे समाज में इसके पठन-पाठन की व्यवस्था हो पाएगी।

- भारत कुमार दहलान
कटिहार (बिहार)

आपकी क्रियाशीलता और लगन को देखकर मैं आश्चर्यचकित रहता हूं। आप जैसे महानुभावों के लिए सम्मेलन इस मुकाम तक पहुंचा है। 'समाज विकास' की प्रगति में आपका विशेष सहयोग सदैव रहा है। समय-समय पर अपने विचार पंक्तिबद्ध करके भेजने का प्रयास करूंगा।

- डा. श्यामसुन्दर हरलालका
कार्यकारी अध्यक्ष
पूर्वोत्तर प्रा. मा. स., गुवाहाटी

'समाज विकास' के सभी अंक अनमोल एवं संग्रह करने के योग्य होते हैं। जुलाई अंक में प्रकाशित अध्यक्षीय आलेख 'समाज व्यक्ति से ऊपर होता है' बहुत ही प्रेरक एवं मनन करने वाला है। इस आलेख से सुसंगठित समाज निर्माण करने का संदेश ध्वनित होता है। माननीय श्री मोहनलाल तुलस्यान की लेखनी में मोहिनी शक्ति है जो हमें सामाजिक एकता के लिए रचनात्मक दिशा प्रदान करती है।

नई सरकार के नये बजट का विश्लेषण तर्कसंतर्कसंगत बन बड़ा है। नई सरकार से जिस तरह के साहसिक बजट की उपेक्षा थी, यह उसके अनुरूप नहीं है इस बजट में आर्थिक विकास की गति को तेज करने के लिए दृष्टि का अभाव है। सेवा-कर एवं उप-कर लगाने का बजट में प्रावधान किया गया है जिससे महंगाई बढ़ेगी। बजट के संदर्भ में मान्य सीताराम शर्मा का कहना कि कुल मिलाकर यह बजट आम भारतीय के लिए लॉलीपॉप है, बिल्कुल सही है। इतिहास के पन्नों से प्रस्तुत सम्मेलन की झांकी अवलोकनीय बन पड़ी है। श्री प्रकाश लूनावत का आलेख समाज में बढ़ती तलाक की समस्या पर गहन प्रकाश डालते हुए इसके निदान के लिए समाधान भी बतलाता है। श्री नन्दलाल सिंघानिया एवं यशपाल जैन के आलेख पठनीय एवं मननीय है जिनमें से पहला आलेख धर्म और रिलीजन के अन्तर को स्पष्ट करता है और दूसरा जातिवाद की महाव्याधि को उजागर करता है।

- युगलकिशोर चौधरी, चनपटिया

'समाज विकास' पत्रिका के जून अंक में आपके द्वारा प्रकाशित 'घर घर की कहानी' बड़ी ही शिक्षाप्रद एवं समाज के विकास में मार्ग-दर्शन का काम करेगी। बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति (बिहार व झारखंड) पटना एवं सम्पूर्ण शिक्षा समिति परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

आप महानुभावों का ध्यान अपने मारवाड़ी समाज के सभी वर्ग के लोगों के हितों को ध्यान में रखकर निम्नलिखित बिन्दुओं पर दिशा-निर्देश हमारा लक्ष्य है।

१. सर्वप्रथम आधुनिक शिक्षा प्रणाली को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि यह अपने उद्देश्यों से क्या भटक गई है। आज की शिक्षा मूलत: व्यवसाय रूप में परिणित होकर रह गई है उससे विद्यार्थी का विकास अवरुद्ध हो जाता है। इसे रोकने के उपाय सोचने होंगे।

२. आज के इस आर्थिक युग में आज राज्यों में हिंसा, लूट-पाट, हत्या के कारण यहां से व्यवसायी पलायन कर दूसरे राज्यों में चले गये जिससे बेरोजगारी बढ़ रही है इस पर विचार-विमर्श हो।

३. शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु एकजुट होकर सम्पूर्ण सामूहिक प्रयास करें।

कुछ विशिष्ट जानकारियां

राजस्थानी भाषा को आठवीं सूची में सम्मिलित करने के प्रयास चल रहे हैं जिसे राजस्थान की पिछली विधानसभा में पारित प्रस्ताव का सुफल मिलेगा। इस विषय में यह भी वास्तविकता है कि केन्द्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ने राजस्थानी भाषा को साहित्यक मान्यता दे रखी है। रु. २५०००/- प्रतिवर्ष पुरस्कार देती है और अन्य भाषाओं से राजस्थानी में अनुवाद संबंधी रु. ५०००/- प्रतिवर्ष पुरस्कार दिया जाता है। राजस्थान के शिक्षा विभाग द्वारा इस दिशा में कुछ प्रयास हो रहे हैं। कई जगह हायर सेकेण्डरी स्कूल में ग्यारहवीं कक्षा में राजस्थानी भाषा की पढ़ाई शुरू की गई है। जोधपुर, अजमेर, उदयपुर विश्वविद्यालयों में एम.ए. तक की पढ़ाई राजस्थानी के मार्फत करने का प्रबंध है। दूरदर्शन एवं आकाशवाणी पर भी कभी-कभी राजस्थानी भाषा के कार्यक्रम आजकल दिखाए जाते हैं।

- ***राजस्थान में वायुवेग से बिजली उत्पादन की योजना प्रारम्भ की जा रही है।***
- ***जयपुर से लगभग ३० मील दूर के एक गांव में लोगों ने मिलजुलकर दस वर्षों में उस बंजर स्थान को आदर्श गांव में बदल दिया। वहां बड़े रूप में खेती होने लग गई, लगभग २४०००/- प्रति माह डायरी को दूध बेच कर मिलने लग गये पानी की समस्या हमेशा के लिए मिट गई।***
- ***तमिलनाडु में धर्म परिवर्तन कानून हटाये जाते ही कई हिन्दुओं ने अन्य धर्म अपना लिया।***

४. मारवाड़ी समाज के सभी वर्गों का सम्पूर्ण विकास हो - मानसिक, शारीरिक, आर्थिक व पारिवारिक विकास हो।

५. हम आपसे आशा करते हैं कि उपरोक्त बिन्दुओं पर विचार कर हमें आदेश व दिशा-निर्देश देंगे, हम आभारी रहेंगे।

- प्रह्लाद राय शर्मा
महासचिव, बिहार मारवाड़ी सम्मेलन
शिक्षा समिति, पटना

हम कौन थे क्या हो गए

मोहन लाल तुलस्यान

आज मैं गुजरे समय, वर्तमान और आगत समय के धरातल पर कुछ ऐसी सामाजिक विसंगतियों पर क्रमशः चर्चा करना चाहता हूं जो एक ही धागे से बंधी हुई हैं, परन्तु पहले यह स्पष्ट भी करना चाहूंगा कि ये वो विसंगतियां हैं जिनको आधुनिकता की अंधी दौड़ में दंभ से सीना फुलाए हिस्सा लेता अपना समाज न केवल अपना रहा है बल्कि इनके पोषण में अपनी शन समझ रहा है, जिसका परिणाम अंततः समाज के सामने शर्मनाक ही आना है।

मेरा यह उद्देश्य होने के साथ-साथ यह कोशिश भी है कि भ्रम में डूबा हमारा समाज इसके दुष्परिणामों के गहरे खड्ड में गिरने से पहले संभले। यह वैचारिक मीमांशा सुधार के प्रयास की प्रथम कड़ी है, इसमें सुधार की अगली कड़ियां समाज के प्रबुद्ध व विवेकी-जन जोड़ेंगे तभी इस विवेचना की सार्थकता है।

विवाह या फिजूलखर्ची का प्रदर्शन ?

'विवाह' दो जीवन, दो परिवार, दो गोत्रों के मिलन की सनातन परम्परा ही नहीं बल्कि सृजन-चक्र को गतिमान रखने के लिए विधाता द्वारा रचा गया मूलभूत आधार है। 'समाज' इसकी कसौटी है। इसलिए इसकी पालना-परिरक्षा हेतु बीते जमाने में विवाह की बातचीत व विवाह विधिकर्म बहुत सीधे-सादे ढंग से किए जाते थे। दूरदर्शी बड़े-बुजुर्गों ने इसे दिखावे और अनावश्यक तामझाम से सदैव दूर ही रखा। दूल्हा-दुल्हन को विवाह के समय आशीर्वाद स्वरूप यही शिक्षा दी जाती थी- "यह विवाह सामाजिक मान्यताओं के अनुरूप हुआ है अतः इसे विधाता का वरदान समझ कर समर्पण भाव से इसकी लाज रखें, इसका मान ही पारिवारिक व सामाजिक मान है।" फलतः पुराने जमाने में सात फेरों और सात वचनों का धागा उन्हें आजीवन एक-दूसरे से आबद्ध रखता था।

सम्पन्नता का दंभ, पश्चिमी संस्कृति की चकाचौंध, जीवन के आधुनिकीकरण के प्रभाव ने लाखों-करोड़ों का खर्च कर शान दिखाने का माध्यम बना दिया है। इतनी रकम अनावश्यक साज-सज्जा और आडम्बरों पर खर्च की जाती है जिनसे साधारण परिवार के कई विवाह सम्पन्न हो सकते हैं। इस फिजूलखर्ची के प्रदर्शन को क्या कहा जाय, सामाजिक उत्थान या पतन ?

रकम तय और दहेज

एक वाक्य आजकल से पहले बेटे के परिजनों द्वारा पूछा जाता है 'विवाह में कितना लगाएंगे ?' यह वाक्य आर्थिक रूप से सम्पन्न बेटी के बाप के लिए तो सहज है, पर साधारण परिवार की बेटी के बाप को यह वाक्य एक ऐसी भयानक आन्तरिक घुटन देता है कि घुटन से उसको अपनी सांसें डूबती हुई सी महसूस होती है। क्या इस वाक्य के बिना विवाह की बात तय हो पानी असम्भव है ? क्या विवाह से 'पहले कितना लगाएंगे' तय किया जाना आवश्यक है ?? मुझे तो यह वाक्य समाज की देह पर कोढ़ के दाग-सा प्रतीत होता है, इस एक वाक्य के बारे में आपकी क्या धारणा है ? साथ ही दहेज भी एक ऐसी विसंगति है जिसने कई परिवार तबाह कर दिए हैं। दहेज रूपी दावानल नित-नित न जाने कितनी ही नववधुओं को अपना ग्रास बना रहा है। अंधाधुंध की जाने वाली फिजूल-खर्ची, शानो-शौकत के प्रदर्शन ने इस आग में घी का काम किया है। अगर साधारण परिवार के किसी सदस्य को तीन-चार कन्याएं हो गई तो उसे जीवन भर घुट-घुट कर जीना पड़ता है। वह अपनी पहली पुत्री के विवाह में इतना कर्जदार हो जाता है कि दूसरी-तीसरी कन्या के विवाह की बात सोचनाउसे आत्महत्या करने जैसा प्रतीत होता है। जिस परम्परा से दो परिवार जुड़ते हैं, भविष्य की नींव रखी जाती है, वहां ढोंग, दिखावे, आडम्बर, फिजुलखर्ची, लागत और पैसे के लेनदेन की बात कहां और कितना औचित्य रखती है यह मैं आज तक नहीं समझ पाया। दहेज की विचारधारा सामाजिक मूल्यों को अपंग कर रही है। अतः मैं यही कहूंगा कि दहेज अवश्य लें, भरपूर लें मगर नगद या सामान की नहीं बल्कि सुसंस्कार, सही शिक्षा-दीक्षा, शुद्ध आचरण, मर्यादित पारिवारिक परिवेश की मान्यताओं का लें। यह तभी संभव है जब हम बुजुर्गों की तरह सादा जीवन-उच्च विचार की भावना को जीवन में आत्मसात करेंगे। इसी से पारिवारिक, सामाजिक कल्याण सम्भव है। भटकाव के भय से मुक्ति है।

विवाह सम्बन्ध और तलाक

दंभ, उच्च शिक्षा के अहं और पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव में रची बसी आज की युवा पीढ़ी विवाह को ईश्वर का वरदान न समझ कर बन्धन समझने लगी है और वह अल्पावधि के बाद ही इससे मुक्त होना चाहती है। मुक्ति के लिए वह जिस सांघातिक हथियार का प्रयोग करती है वह हथियार है - तलाक! 'तलाक' यह केवल एक शब्द नहीं बल्कि एक लज्जाजनक कुकृत्य है जो दो परिवारों की प्रतिष्ठा को चूर-चूर कर देता है। समाज के प्रदीप्त ललाट पर एक काला टीका है यह तलाक! यह विचारधारा आगत समय में समाज को किस मोड़ पर लाकर खड़ा करेगी इस पर गंभीरतापूर्वक विचार करना अति आवश्यक है। बुद्धिमत्ता, कर्मठता, उदारता का पर्याय समझे जाने वाले समाज में विवाह सम्बन्ध विच्छेदन की बात कितनी लज्जाजनक है यह मुझे खुलासा करने की आवश्यता नहीं।

यह बात नहीं है कि पुराने जमाने में तलाक नहीं होते थे। होते थे पर उनकी परिस्थितियां अलग हुआ करती थीं। अगर सौ-पचास गांवों में से किसी एक गांव में ऐसी घटना होती थी इसकी चर्चा सारे गांवों में होती थी, इसकी निंदा सारे गांवों में होती थी। परन्तु आज तो जैसे तलाक एक फैशन-सा हो गया है। मामूली सी तू-तू-मैं-मैं हुई तो नौबत तलाक तक पहुंच जाती है। यह चलन किसी तरह भी समाज के लिए शुभ नहीं है। बच्चे देश का भविष्य होते हैं, समाज के प्रसार के आधार होते हैं, अगर उनकी शिक्षा-दीक्षा में हम आडम्बर, शान-शौकत, फिजूलखर्ची, अपसंस्कृति को डाल देंगे तो जीवन नरक-तुल्य हो जाएगा। मारवाड़ी समाज ने हमेशा मानवता, दानवीरता, सहृदयता, कर्मठता एवं सुसंस्कारों को प्राथमिकता दी है। आज यही समाज अगर खोखले आडम्बरों और फिजूल शानो-शौकत में पड़ कर भरम जाएगा तो समाज की उन्नति कैसे हो पाएगी ?

हम कौन थे क्या हो गए और क्या होंगे अभी
आओ विचारें बैठ कर ये समस्याएं सभी

आधुनिक परिवेश में मारवाड़ी समाज

✍ हरिशंकर सिंहानिया, पूर्व अध्यक्ष, अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन

मारवाड़ी समाज के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो पता चलेगा कि सदियों पुराना जो मारवाड़ी समाज अपने सामाजिक एवम् सांस्कृतिक विचारों के लिए अन्धविश्वास से जुड़ा हुआ माना जाता था, उसका आज के आधुनिक युग में एक अपना अलग से परिवेश है। इस नये रूप में इस समाज ने किस प्रकार पूर्वाचीन एवं आधुनिक मान्यताओं में समन्वय स्थापित किया है, इसे जानने के लिए जरूरी है कि इस समाज की आधुनिक एवं सामाजिक स्थिति का जायजा लिया जाए।

किसी भी समाज की उन्नति चाहे वह सांस्कृतिक क्षेत्र में हो या आर्थिक क्षेत्र में, उस समाज के सामाजिक ढांचे पर निर्भर होती है क्योंकि उस समाज के सामयिक आचार-विचार ही सामाजिकता को एक लय प्रदान करते हैं जो वक्त के साथ-साथ अपना तारतम्य बनाये रखती है। संस्कृति प्राचीन परम्पराओं में पली होने के साथ-साथ आधुनिक परिवेश से समन्वित हो तो और भी अच्छा होता है- क्योंकि अर्वाचीन व वर्तमान के संदर्भों के विश्लेषण व समन्वय का जो रूप होगा वह एक परिष्कृत रूप होगा और इससे उस समाज विशेष के नये रूप को दर्शाया जा सकता है- जाना जा सकता है।

जहां तक आर्थिक उन्नयन का सवाल है यह सर्व-विदित है कि इस समाज के लोगों में अर्थ के प्रति शुरू से ही लगाव रहा है जो किसी भी समाज के लोगों की लगन एवं कर्तव्य निष्ठा का प्रतीक है। सामाजिकता के अन्तर्गत हर समाज का प्राणी सामाजिक दायित्वों के अन्तर्गत कर्म करता है। यह अलग बात है कि उस किये गये कर्म में किसी की कार्यक्षमता अधिक फलवती होती है तो किसी की कम, किन्तु किसी भी काम को एक निश्चित ध्येय को ध्यान में रखते हुए किया जाए तो निश्चित ही उसका वांछित फल प्राप्त होता है। मारवाड़ी समाज के लोगों के बारे में कहा जाता है कि जब भी वे धन कमाने का ध्येय रखकर काम में लगते हैं तो निश्चित ही उन्हें वांछित फल प्राप्त होता है। इस समाज के बारे में तो लोगों का यह भी कहना है कि ये लोग एक रुपये में ३ अठन्नी बना लेते हैं जबकि दूसरे समाज के लोग एक रुपये में मिलने वाली २ अठन्नियों में से एक खोटी ही ले आते हैं। इससे स्पष्ट है कि इस समाज के व्यक्तियों की बुद्धि एवं चातुर्य जहां एक तरफ अपनी दक्षता का धयान रखती हैं- दूसरी तरफ अपने आसपास के वातावरण को ध्यान में रखते हुए अपनी कार्यक्षमता का प्रयोग करती है।

मारवाड़ी समाज- जो अपनी प्राचीन एवं परम्परागत संस्कृति के मूल्यों को आज भी धरोहर मानता है, वे उसे विरासत में मिले हैं। जहां लगन व कर्मठता उसके खून में हैं वहीं व्यवहार कुशलता एवं आपसी सद्भाव के गुण उसे अपनी प्राचीन संस्कृति से ही मिले हैं। आर्थिक उन्नयन के साथ-साथ उसने अपनी सांस्कृतिक प्रतिभा को भी जीवित रखा है। उसकी सामाजिक आचार संहिता को दूसरे समाज सराहते हैं- ग्रहण करने की कोशिश करते हैं।

हम मानते हैं कि जिस समाज में प्राचीन काल से पर्दा प्रथा चली आ रही है वह अन्य समाजों के सामने एक पिछड़ेपन की संज्ञा के रूप में जाना जा सकता है। लेकिन इस समाज की परम्परा के अनुसार पर्दा प्रथा पिछड़ेपन की नहीं अपितु बड़े-बूढ़ों के सामने एक आदर एवं सम्मान का प्रतीक है। युग परिवर्तन के साथ-साथ यह पर्दा प्रथा प्राय: समाप्त हो गई है। किन्तु जहां तक बुजुर्गों के सम्मान का सवाल है आज भी इस समाज की बहुएं पर्दे की ओट से न सही अपने माथे पर पल्लू रखकर उनका आशीर्वाद लेती है। इस परम्परा को अगर कोई पिछड़ापन कहे तो यह कहने वालों की संज्ञाहीनता ही होगी।

जैसा कि सर्वविदित है कि किसी भी संस्कृति के उन्नयन में सामाजिकता महत्वपूर्ण स्थान रखती है। मारवाड़ी समाज के साथ भी वक्त के साथ बदलाव आया है- इस बदलाव से इस समाज का सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक उन्नयन कहां तक हो पाया है यह तो आंकड़ों से जाना जा सकता है, लेकिन इन समाज के आचार-विचारों पर आधुनिकता का जो प्रभाव आया है- नि:संदेह सामाजिक परिवेश में इसे आंकना जरूरी हो जाता है। आज इस समाज के व्यक्तियों में सिर्फ आर्थिक जागृति ही नहीं, सर्वरूपेण प्रगति हुई है। न केवल पुरुष अपितु महिलाओं में भी एक अभूतपूर्व बदलाव आया है जो प्रगति का द्योतक तो है ही, साथ ही इस समाज की सामाजिकता का सापेक्ष रूप भी दर्शाता है। माना कि आधुनिक परिवेश ने कुछ संदर्भों में मारवाड़ी समाज की परम्परागत मान्यताओं को नकारा है लेकिन ये मान्यतायें सिर्फ अपने रूढ़िवादी एवं अन्धविश्वासी रूप के कारण ही नकारी गई हैं अन्यथा जो मान्यताएं सापेक्ष रूप में भी थीं आज और भी परिष्कृत होकर सामने आई हैं। युग परिवर्तन के साथ विचारों में वैमनस्य शायद आया हो परन्तु आदर की भावनाएं आज भी बुजुर्गों की युवाओं के साथ सहृदय बने रहने का संदेश देती हैं। आज भी बुजुर्गों की सही सलाह मानी जाती है- आदरणीय है। बदलाव तो आना ही चाहिए था और आया भी है लेकिन इससे इस समाज के मूल्यों का अवमूल्यन नहीं बल्कि संवर्धन हुआ है। आचार संहिता अपने अर्वाचीन रूप से विकसित होकर नये स्वरूप में आई है जो आवश्यकता है इस युग के बदलते परिवेश की।

पुरुषों के साथ महिलाएं भी आधुनिक परिवेश में एक नये रूप में आई हैं। महिलाएं आज सिर्फ घर की दहलीज तक ही सीमित नहीं है बल्कि वे व्यावसायिक क्षेत्र में भी पुरुषों के साथ अग्रसर हैं। आने वाला समय इस समाज में पनपी कुछ रूढ़िवादी कुरीतियों को तोड़कर अपनी सामाजिक संचेतना का सही रूप अन्य

सामाजों के सामने रख पाएगा, इसकी अपेक्षा है।

आज के नये परिवेश में मारवाड़ी समाज अपनी उस प्राचीन सामाजिकता के अन्धानुकरण की सीमा से बहुत दूर आ गया है जिसमें उसका स्वरूप केवल एक व्यापारी वर्ग तक ही सीमित न होने के कारण अन्य समाजों के साथ मिलजुलकर उनकी संस्कृति एवं सामाजिकता को अपने आप में सन्निहित कर लेने की उसकी अदम्य इच्छा को प्रकट करता है। इस बदलते परिवेश में इस समाज की सामाजिकता अपना प्राचीन स्वरूप भले ही भूल जाए परन्तु परम्परागत विचारों के सौजन्य से आधुनिकता का रंग उस पर इतना ही चढ़ पाता है जितनी कि उसको जरूरत होती है। फिर सामाजिकता भी तो सभ्यता की निशानी है जिसमें समाज के लोग अपनी-अपनी विलक्षणता का प्रदर्शन करते हैं ताकि उनको विरासत में मिली संस्कृति किसी भी तरह के वातावरण में अक्षुण्य रहे।

जहां तक युग परिवर्तन का प्रश्न है- परिवर्तन तो होना ही है, बात सिर्फ युगों के अन्तराल में होने वाले नये सन्दर्भों की है- आने वाला हर युग बीते युग की पृष्ठभूमि के आधार पर ही आगे बढ़ता है- उसके साथ बीते युग की परम्परायें चलती हैं- मान्यतायें अपना संवर्धित रूप बनाती हैं और लोग परिवर्तित रूप को उस युग की देन मानकर बीते युग को भुला देते हैं। वस्तुत: परिवर्तन एक संकेत है- इसे नकारा नहीं जाना चाहिए। मारवाड़ी समाज में जो आधुनिक मान्यतायें आज आ रही हैं, नि:संदेह प्रगति का द्योतक हैं किन्तु पुरानी परम्पराओं का परित्याग अनिवार्य नहीं- बल्कि उनकी विशेषताओं को विरासत मानकर ही आने वाले युग की स्थापना करना उचित होगा।

विश्लेषण के तौर पर जो मारवाड़ी समाज अपनी परम्परागत आचार-संहिता के मूल्यों पर कायम था वह आज बदलते परिवेश में अपने आपको कहां तक समाहित कर पाया है- जानने के लिए जरूरी है कि आधुनिकरण की पृष्ठभूमि में मारवाड़ी समाज अपने मूल्यों को कैसे सन्निहित करता है। मस्तिष्क के मनोबल से बदले परिवेश में नये-नये आयाम प्रतिस्थापित करने के लिए संस्कृति के साथ-साथ सामाजिकता में बदलाव भी जरूरी है। हमारे समाज के रीति-रिवाज आज भी आदर-भावना से ओत-प्रोत हैं। उन्हें स्वीकारते हुए किस तरह से हमारी भावी पीढ़ी अपने को आधुनिक युग में ढालने में सक्षम होती है, यह निर्भर करेगा समाज के प्रबुद्ध बुजुर्गों के दिशानिर्देश पर। उनका मार्गदर्शन युवा पीढ़ी को किस तरह अपने लक्ष्य तक पहुंचने में सहयोगी होगा- आने वाला वक्त ही बतायेगा।

निष्कर्षत: जिस मारावाड़ी समाज की अपनी गौरवशाली संस्कृति पिछले सैकड़ों वर्षों से उसके आचार-विचारों को प्रभावित करती रही है उसके उन्नयन के लिए आधुनिक युग में क्या-क्या अपेक्षाएं की जा सकती हैं- निर्भर करता है आने वाली पीढ़ी व वर्तमान पीढ़ी के समन्वयात्मक सहयोग पर। आधुनिकता किसी समाज को तभी प्रभावी बना सकती है जबकि उस समाज की आचार संहिता भी परिवर्तित रूप धारण करे ताकि समय के साथ-साथ विचारों का विकेन्द्रीकरण भी नये आयामों को तिरोहित कर सके। मारवाड़ी समाज जिस तरह से पिछले कई दशकों से अपने आर्थिक व सामाजिक उन्नयन में अग्रसर हैं, नि:संदेह आधुनिकता के परिवर्तित रूप को भी सहजता से स्वीकारता जाएगा, ऐसी अपेक्षा है।●

+++ ○○ +++

एक भूमि है एक देश है

- घनश्याम देवड़ा, नई दिल्ली

कन्या कुमारी से कश्मीर तक, एक भूमि है एक देश है।
रामेश्वर से अमरनाथ तक, व्यापक एक महेश है।।
पश्चिम तट पर सोमनाथ में, वही शम्भु अविनाशी।
महाकाल की उज्जयिनी है, विश्वनाथ की काशी।।
इस धरती की भस्म रमाये, व्यक्तिमाल कन्ठ डाले।
अब भी ढाल रहे शिवशंकर, कालकूट के प्याले।।
मृत्युंजय वे नीलकण्ठ वे देते यह सन्देश है।
कन्या कुमारी से कश्मीर तक एक भूमि है...
अति पवित्र यह देश, यहां का जल थल तीर्थ समान।
रोम रोम में राम रमे हैं, कण-कण में भगवान्।।
मातृ भूमि यह धरा हमारी, हम इसकी सन्तान।
सागर धोता चरण, शीश पर मुकुट शुभ्र हिमवान्।।
गंगा सिंधु नर्मदा शिप्रा ब्रह्मपुत्र कावेरी।
युग युग से करती आयी है इसी भूमि की फेरी।।
अतिशय पावन, परम सुहावन, जनमन भावन वेष है।
कन्या कुमारी से कश्मीर तक एक भूमि है...
कामरूप में कामाख्या जो, कोलकाता में काली।
विंध्याचल में वही विराजी माता शेरांवाली।।
सागर संगम पर कुमारिका तपस्वनी कल्याणी।
मूकाम्बिका, वैष्णवी देवी, ज्वालामुखी भवानी।।
आदि शक्ति की दिव्य देह यह चिन्मय भारत माता।
इस धरती से ही हमारा युगों युगों का नाता।।
दशों दिशाएं आलोकित हैं, गूंज रहा जयघोष है।
शाकम्भरी अन्नपूर्णा यह, इसका अक्षय कोष है।।
कन्याकुमारी से कश्मीर तक, एक भूमि है एक देश है।।

मनमोहन सिंह सरकार के प्रथम १०० दिन

बात कुछ बन नहीं रही है

✍ सीताराम शर्मा, उपाध्यक्ष

मनमोहन सिंह सरकार के शुरूआती दिन बहुत शुभ एवं सफल नहीं दिख रहे हैं। महंगाई सुरसा की तरह बढ़ रही है। मुद्रा स्फीति २-३ प्रतिशत से बढ़कर ७ प्रतिशत हो गयी है। तीन महीने में तीन बार पेट्रोल-डीजल-एल.पी.जी. का दाम बढ़ाया गया। गांव एवं गरीबों के दु:ख दर्द की दुहाई पर बनी सरकार अपनी प्राथमिकताएं खो रही है। किसान अभी भी आत्महत्या कर रहे हैं।

महंगाई की मार के साथ-साथ प्राकृतिक विपत्तियों ने भी देश को धर दबोचा है। पूर्वी भारत- असम, बिहार आदि भीषण बाढ़ एवं सूखे की चपेट में है। बजट कब आया और चला गया देश को पता ही नहीं चला। यूं लगा यह तो अन्तरिम बजट था, अगला बजट अगले वर्ष रखा जायेगा।

साझे की सरकार कांग्रेस के लिए गले की हड्डी बन रही है। साझे के नाम पर समझौते अधिक हो रहे हैं। दागी मंत्रियों को सरकार में शामिल कर 'भलेमानुष' मनमोहन सिंह फंस गये हैं। जब संसद में उनके मंत्री शिबू सोरेन को 'भगोड़ा, कहा गया तो उनकी अन्तरात्मा कांप गया और 'राजनीति' से ऊपर उठकर उन्होंने शिबू सोरेन का इस्तीफा मांग लिया।

मंत्रियों के दायित्वहीन, परस्पर विरोधी एवं अनर्गल बयानों की ऐसी बाढ़ आयी कि प्रधानमंत्री को उन्हें 'चुप' रहने का निर्देश देने पड़े। एक के बाद एक रेल दुर्घटनाएं हुई। साथ ही रेलों में हत्या एवं लूटपाट का दौर चला। रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव ने कहा कि 'मेरे हाथ में कुछ नहीं है। मैंने भगवान विश्वकर्मा की एक प्रतिमा अपने कार्यालय में रख दी है अब वे ही दुर्घटनाओं से रक्षा करेंगे, प्रधानमंत्री किस भगवान की प्रतिमा से रक्षा की दुहाई मांग रहे हैं?

मणिपुर में कानून-व्यवस्था एवं प्रशासन ठप्प हो गया है, राजनीतिक एवं संवैधानिक संकट गंभीर है, केन्द्रीय सरकार असंमजस में है कि क्या करे? पंजाब के कांग्रेसी मुख्यमंत्री अमरिन्दर सिंह ने सुप्रीम कोर्ट, प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, यहां तक कि अपनी नेता सोनिया गांधी को ठेंगा दिखाते हुए एक ऐसा राजनैतिक एवं संवैधानिक मोर्चा खोल दिया है जो राष्ट्र की एकता को खतरा पैदा कर सकता है। सरकार बेबस एवं लाचार बैठी है।

विदेश मंत्री जो अपने से 'योग्य' किसी को समझते ही नहीं कभी पाकिस्तान तो कभी ईराक पर दायित्वहीन बयान देकर रोज नये संकट खड़े कर रहे हैं। उन्होंने तो पाकिस्तान के राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ को अपने विदेश मंत्री से ही कूटनीति की शिक्षा लेने की सलाह दे डाली। ईराक में बंधक तीन भारतीय ड्राइवरों के मसले को एक जूनियर विदेश राज्य मंत्री के हाथों सौंप कर छुट्टी पा ली गई है। यह तो मीडिया है जो इस सवाल पर लड़ाई लड़ रहा है।

वामपंथी दल सरकार पर अपना दबाव बनाये रहते हैं। विदेशी निवेश पर गहरे एवं गंभीर मतभेद है। साथ ही सरकारी कारखानों में विनिवेश पर वामपंथी धरना एवं हड़ताल की धमकी दे रहे हैं। बढ़ती मंहगाई एवं घटती ब्याज दरों पर भी वामपंथी काफी नाराज है।

मनमोहन सिंह सरकार के प्रथम १०० दिनों की कहानी बहुत सुहानी नहीं है। सरकार फिसलती नजर आ रही है, उसकी पकड़ मजबूत नहीं है। सरकार में दिशा, इच्छा शक्ति एवं मजबूती की कमी साफ झलक रही है। आने वाले १०० दिन मनमोहन सिंह सरकार के भविष्य के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण एवं गंभीर होंगे। ●

जब हम लाखों पौंड खर्च करके और अथाह परिश्रम द्वारा किसी नये युद्धपोत अथवा दूसरे प्रकार के शस्त्रास्त्रों का निर्माण करते हैं और जब उसमें कोई भूल रह जाती है तो हम क्या करते हैं? बिना जरा भी समय गंवाये उसको तोड़ कर नया बनाते हैं। उसी तरह आज अपने धर्म और सदाचार और न मालूम दूसरे क्या-क्या नाम देकर जो कुछ गढ़ रखा है, वह जीवन के तथ्यों से विपरीत है, परिस्थितियों के जरा भी अनुकूल नहीं। इन सबको तोड़ डालिये- तोड़ डालिये और नये का निर्माण कीजिए। आज की दुनिया में यही खराबी है कि वह अपने पुराने इंजन, डायनेमों को तोड़ने को तैयार है, लेकिन जो धार्मिक, नैतिक और राजनीतिक विचार आज की परिस्थितियों की दृष्टि से बेमतलब है, उन्हें तोड़ने और बदलने को तैयार नहीं। - बर्नार्ड शा

पाठकों एवं लेखकों से निवेदन :

'समाज विकास' समाज की ज्वलन्त समस्याओं का एक विवेचक पत्र है।

लेखक-लेखिकाओं, कवि-कवयित्रियों आदि से निवेदन है कि वे अपने लेख, कहानियां, कविताएं, किस्से एवं सच्ची घटनाएं आदि हमें भेजें। देश और समाज की समस्याएं अधिकतर समानधर्मा होती हैं, तथापि उस परिप्रेक्ष्य में समाज का थोड़ा-सा विश्लेषण उचित होगा।

पत्र व्यवहार का पता :- सम्पादक, 'समाज विकास', १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७

"नारी सच्ची मित्र, करुणामयी कल्याणी, सुखकारी है"

✍ भानीराम सुरेका, महामंत्री, अ. भा. मा. सम्मेलन

अपने समाज में सबसे महत्वपूर्व भूमिका नारी समाज की है, देश की निर्मात्री, बच्चों की पालनहार, धरती जैसी सहनशीलता रखने वाली नारी ही है। बच्चों को सुबह जल्दी तैयार करके स्कूल भेजने व उसमें श्रेष्ठ संस्कार भरने व आगामी पीढ़ी के लिए, देश के लिए कर्णधार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका नारी की है। बच्चों को समाज की आंख और राष्ट्र की पंख नारी ही बना सकती है, क्योंकि वह खुद ईश्वर के दिव्य गुणों की मूरत है, वह ज्योति है, मोती है, नारायणी मां है। आज नारी जागृत बनी है। ऊंचे पदों पर महिलाएं आती जा रही हैं, राजनीति में महिलाओं का स्थान उज्वल रहा है, अपने देश में ५ राज्यों की महिलाएं मुख्यमंत्री रह चुकी हैं या मुख्यमंत्री हैं। परमात्मा की देन से फिर से अनेक महत्वपूर्ण भूमिका स्त्री को सौंप दी है, इसलिए स्त्री नर को नारायण बना सकती है, पत्थर को पारसमणि बना सकती है। इसके लिए स्त्री को भी स्वयं की शक्ति समझना चाहिए और आंखों में पवित्रता, मुख में मधुर वाणी व शान्ति को गले लगाना होगा। कर्म खर्च करें, बच्चों को सुसंस्कार दें, संतोषी बनें, ध्यान का अभ्यास करें, घर के वातावरण को शान्ति और सकारात्मकता से भरपूर बनायें। यही सच्ची नारी का गुण और कर्त्तव्य है।

मैं पिछले महीने मुम्बई में था तो मानव संसाधन महिला एवं विकास विभाग की केन्द्रीय राज्यमंत्री श्रीमती कांति सिंह व उनके पतिदेव से महिलाओं व उनके कार्य करने के तौर-तरीकों की चर्चा हुई, उनका कहना था कि शारीरिक सौन्दर्य किसी महिला को पूर्ण नहीं बनाता। बच्चों व औरतों के कल्याण के लिए पुरुषों को भी कार्य करना चाहिए, आर्थिक व शारीरिक दृष्टि से उनको सुरक्षित करना पुरुषों का काम भी है। औरत के बिना पुरुष का अस्तित्व नहीं है। कहते हैं, हर सफल व्यक्ति के पीछे औरत का हाथ होता है। ईश्वर ने नर-नारी को समान बनाया है फिर भी नारी को मनुष्य से अधिक शक्ति स्वरूपा माना गया है।

मैं नारी शक्ति से निवेदन करूंगा कि वे अपने आपको पहचाने, मन की शक्ति को असीम करें, अपनी अंतरात्मा, क्षमताओं को जागृत करें। आपके लिए कोई भी काम कठिन नहीं है। आज औरतों ने हर क्षेत्र में तरक्की प्राप्त कर ली है। विज्ञान, साहित्य, अंतरीक्ष, संगीत, खेल, सौन्दर्य, मिस यूनिवर्स, सांसद आदि क्षेत्रों में सुनाम अर्जित किया है। कोई आपकी कीमत जाने या न जाने किन्तु आप अपनी कीमत जरूर समझें। आप अपनी ताकत-मूल्य किसी से कम मत समझें। जब आप अपने को आंकेंगे तभी लोग आपका मूल्य समझेंगे व आपको सम्मान देंगे। आत्मबल के कारण ही एक चींटी अपने वजन से कई गुना अधिक बोझ उठाकर चलती है। स्त्री जीवन में सबसे ज्यादा चोटें सहन करती है इस लिए उसके आत्मबल में वृद्धि होती है। परिस्थितियों से आप भयभीत न हों, आपकी आत्मा में असीम शक्ति है। संघर्ष तो हर चीज के लिए करना पड़ेगा, जितनी शक्ति आप अपने अन्दर पैदा करेंगी, उतनी ही आपकी सामर्थ्य बढ़ती चली जाएगी। अत्याचार को सहना महापाप है। "परित्राणाय साधुनां, विनाशाय च दुष्कृताम्" के भाव को दृढ़ करें और आप अपना फर्ज निभावें।●

सम्मेलन के महामंत्री सुरेका जी मुम्बई में केन्द्रीय सरकार की मानव संसाधन महिला एवं बाल विकास की मंत्री श्रीमती कांती सिंह व महाराष्ट्र के गृह राज्यमंत्री श्री कृपाशंकर सिंह से विचार-विनिमय रत।

देश के विकास के लिए नये रूपक बनाना जरुरी

✍ राम अवतार पोद्दार, संयुक्त महामंत्री : अ.भा.मा. सम्मेलन

१५ अगस्त १९४७ को स्वाधीनता मिलने के बाद एक ऐसे आधुनिक देश की नींव रखी गयी थी जिसमें समता, धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक न्याय के मूल्य सर्वोपरि थे। स्वाधीन भारत में शोषण मुक्त समाज, हर व्यक्ति की अस्मिता और आजादी की कल्पना की गई थी। इन्हीं सवालों पर स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी गयी थी।

तब से अब तक ५७ वर्ष गुजर चुके हैं और आज भी यह सवाल कायम है कि साधारण जन के जीवन में आजादी का अर्थ क्या है एवं क्या वह स्वाधीन देश के नागरिक के रूप में जन्म लेने पर गर्व कर सकता है?

इस सवाल पर सोचना सवालों के एक अंतहीन जंगल की ओर जाने की तरह है, जहां हमारा सामना उन स्वप्नों, आदर्शों, मूल्यों और उद्देश्यों के बचे-खुचे अवशेषों से होता है जिनके लिए स्वाधीनता की लड़ाई लड़ी गयी थी। लोकतंत्र, समता, बहुलतावाद, सामाजिक न्याय जैसे मूल्यों की सुध लेने या जवाहर लाल नेहरू के नियति से साक्षात्कार की नियति को जानने की इच्छा इस बीच हमारे राजनीतिक तंत्र में लगातार घटती गयी और यह मान लिया कि सन् १९४७ में एक बार हासिल हो चुकी आजादी दरअसल हमेशा की लिए उपलब्ध है और अब किसी तरह का आत्म निरीक्षण जरूरी नहीं है। कभी-कभी व्यक्त किए जाने वाले सरोकारों को छोड़कर हमारी राजनीति आजादी की सार्थकता को लेकर अक्सर आत्म प्रवंचना का शिकार रही।

देश का बुद्धिजीवी वर्ग भले ही अधूरी आजादी, आंतरिक औपनिवेशीकरण, नव औपनिवेशीकरण, इंडिया बनाम भारत जैसी परिघटनाओं को लेकर चिन्ता व्यक्त करता रहा, लेकिन राजनीति इससे निरपेक्ष ही रही क्योंकि उसका रास्ता या तो सत्ता तक जाता है या सत्ता से आता है।

सत्ता की राजनीति या राजनीति की सत्ता ने देश में विकास की संभावनाओं को हमेशा क्षीण बनाया। येन-केन-प्रकारेण सत्ता हासिल करने की मनोवृत्ति ने नेताओं को तिलिस्म रचने की प्रेरणा दी।

स्वतंत्र भारत में कई ऐसे तिलस्मी नेता हुए हैं जिन्होंने शब्दों की बाजीगरी से सत्ता हथियायी और फिर खुलकर सत्ता का दुरुपयोग किया। सत्ता के माद्यम से लूट की खुली छूट लेने वाले ऐसे नेताओं ने अपना वजूद क़ायम रखने केलिए समाज की संरचना, लोगों की एकता को विभिन्न तरीके से तोड़ा और फिर इस टूटन का फायदा उठाकर लोगों को बेवकूफ बनाते रहे।

एक नागरिक के रूप में यह कितने शर्म की बात है कि हमारी जातीय, सामाजिक, धार्मिक पहचान तो है पर राष्ट्रीय पहचान को गौण कर दिया गया है। देश में हिन्दू है, मुसलमान है, सिख-ईसाई-जैन-बौद्ध या कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, यादव, डोम, चमार, बुनकर सभी है लेकिन भारतीय कोई नहीं है।

जहां तक विकास की बात है तो यह कहना गलत है कि इस बीच भारत ने विकास नहीं किया। दरअसल विकास ही हमारे लोकतंत्र का ऐसा प्रमुख मुद्दा बना कि उसने आजादी के पर्याय का भी रूप ले लिया। इस विकास के बल पर देश दुनिया के नक्शे में सम्मानित जगह बना सका और अर्द्ध विकसित की सीढ़ी से उठकर विकासशील देश की श्रेणी में आ गया। लेकिन अर्द्ध विकसित से विकासशील बने भारत की एक बड़ी विडंबना यह रही है कि तरक्की का जो ढांचा अपनाया गया और अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था के दबाव में उसने जो रूप अख्तियार किया, उसके कारण समाज में कई तरह के विभाजन हुए । संपन्न और विपन्न के बीच का फासला लगातार बढ़ता रहा।

देश के प्रथम और आखिरी आदमी के बीच की दूरी कलह का कारण बनती है और यह भारत में स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है। इस विषमता ने असंतोष और उससे भी आगे प्रतिरोध की प्रवृत्ति को जन्म दिया है। देश में बढ़ती चोरी, डकैती, अपहरण, लूट के आंकड़े इसके गवाह है।

आम आदमी की सुरक्षा निरंतर खतरे में पड़ती रही है। सुरक्षा तंत्र पर नेताओं और प्रभावशाली सम्पन्न लोगों का शिकंजा कसा है। इसी शिकंजा के चलते नेता बड़े बड़े घोटालों को अंजाम देकर भी सुरक्षित बच निकलते हैं। कानून व्यवस्था में गरीब की कोई पूछ नहीं है। आम आदमी समस्याओं में उलझकर सरकारी दफ्तरों के चक्कर काटते-काटते मर जाता है। उसकी कोई नहीं सुनता और न ही उसकी न्यूनतम जरूरतें पूरी हो पा रही हैं।

देश में नीतियों, विचारों, आदर्शों तथा सोच की कोई कमी नहीं है। हां इनका क्रियान्वन नहीं हो रहा है। इनके क्रियान्वयन के लिए सबके पहले जरूरी है आत्म निरीक्षण और यह सबके लिए जरूरी है। आम और खास हर तरह के लोग यह तय करें कि आखिर कमी कहां है, क्या है एवं उसे दूर करने का उपाय क्या है।

नई सोच के तहत नई व्यवस्था का रूपक बनाना वक्त की जरूरत है। इस नई व्यवस्था के बनाने में सर्वाधिक योगदान युवा वर्ग का हो सकता है। चूंकि युवा सबसे उर्जावान, प्रतिभावान होते हैं, अतएवं वही किसी बड़े परिवर्तन की पहल में प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं।

आज की युवा पीढ़ी तो पहले की सभी पीढ़ियों से अधिक शिक्षित, सूचना तकनीकी के वैश्विक ज्ञान से लैस है, वह इतनी प्रतिभाशाली है कि दुनिया की तस्वीर बदल सकती है । इस प्रतिभा का सदुपयोग जरूरी है। बेकारी की सही पहचान न होने की स्थिति अगर यह प्रतिभा कुंद होती है या इसका दुरूपयोग किया जाता है तो इसके परिणाम भयंकर हो सकते हैं।

आज का युवा दिगभ्रमित है। वह परंपरा और आधुनिकता के बीच की चक्की में पिस रहा है। जरूरत युवाओं को जागरूक, विकासोन्मुख, देशहितैषी बनाने की है और यह आज सबसे बड़ी चुनौती है।●

सामाजिक व्यक्ति कौन ?

✍ मौजीराम जैन, पूर्व उपाध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

वर्तमान परिस्थिति में एक सशक्त सामाजिक संगठन की बहुत आवश्यकता है। समाज में सबका सहयोग भी संगठन को मिलना चाहिए। इसके विपरीत आज सामाजिक संगठन बहुत दुर्बल है और लोगों का सहयोग भी नाम मात्र है। आज सामाजिक संगठन के ऊपर भी राजनैतिक प्रभाव पड़ रहा है। संगठन को कमजोर करने की प्रबृत्ति चल रही है। हर सामाजिक व्यक्ति को सोचना चाहिए कि सामाजिक संगठन अगर मजबूत नहीं होगा, तो हमारी भी प्रगति नहीं हो सकती। क्योंकि प्रजान्त्रिक शासन में इसी की बात सुनी जाती है, जिसका सामाजिक संगठन मजबूत हो और वही समाज उपकृत हो रहा है।

जिसके मन में परहित का चिंतन हो, वही सामाजिक व्यक्ति कहलाता है और समाज के कमजोर वर्ग की सहायता कर सकता है। कम से कम जहां पर रहते हैं, उसके परिसर में कोई दु:खी न हो, कोई मौलिक आवश्यकताओं से वंचित न हो और अगर हो तो उसकी यथाशक्ति सहायता कर सके, वही प्रकृत में सामाजिक व्यक्ति कहलाता है।

सामाजिक व्यक्ति वह है, जिसका किसी भी कार्य का विपरीत प्रभाव समाज के साधारण वर्ग के ऊपर न पड़े। व्यर्थ के प्रदर्शन और फिजुल खर्च से बचें तथा पैसों का उपयोग समाज के हित में करें, यह प्रकृत में सामाजिक व्यक्ति का परिचय होगा।

समाज में भ्रूण हत्या जैसे जघन्य अपराध पनप रहे हैं इसके ऊपर अंकुश लगाना बहुत जरूरी है। शादी के बाद छोड़ने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। सहन शक्ति इतनी कम हो गई है कि शादी के बाद कोई मतभेद होने से यही एक रास्ता दिख रहा है, यह समाज के लिए खतरनाक बन सकता है। जहां तक संभव हो बिधुर का विवाह बिधवा से ही होना चाहिए। इन सब बातों से ऊपर समाज के हर व्यक्ति को सजग रह के कार्य करना है।

देश हित में सबका हित है

प्रथम पंक्ति में आते हैं राजनैतिक दल, जिनके ऊपर शासन का भार रहता है। जनता उनके पीछे आती है। देश के सर्वांगीन विकास के बारे में चिंतन करना, हर राजनैतिक दल का उद्देश्य होना चाहिए। लोकतंत्र में किसी एक दल का महत्व नहीं रहता, लोग जिसको चुनते हैं, वही शासन का भार संभालता है। आज देखा जा रहा है कि हर राजनैतिक दल अपने आदर्श, निती, देशहित सब भूलकर केवल दूसरी पार्टियों के आलोचना और निंदा में अपना समय बर्बाद कर रही है। शासन दल और विरोधी दल दोनों का लक्ष्य होना चाहिए देश को कैसे आगे बढ़ाएं परन्तु दोनों एक-दूसरे के विरोध में ही अपनी प्रशंसा सोच रहे हैं।

प्रजातंत्र से पहले राजाओं का शासन था, जिसमें बहुत से राजा अच्छे थे, जो प्रजा का ध्यान रखते थे और जनहित तथा राजहित का कार्य करते थे। परस्पर सौहार्द था, एक-दूसरे का सहयोग करते थे। लेकिन पीछे आकर एक-दूसरे से लड़ने लगे, जिससे प्रजा दु:खी हो गई। राज्य में गरीबी, भुखमरी जैसी बिमारी फैलने लगी, जिससे देश कमजोर हो गया। इस कमजोरी और आपस के वैरविरोध का लाभ उठाकर विदेशी राज्य ने आक्रमण किया। उन्होंने यहां के राजाओं के भीतर फूट डालकर कुछ लोगों को अपने तरफ करके यहां प्रवेश कर लिया ऐसे देशद्रोही राजा अनेक थे, जिनमें राजा जयचंद्र का नाम प्रथम याद किया जाता है।

प्रजातंत्र शासन में जिसको बहुमत मिलता है वह राज करेगा। इनका अर्थ यह कदापि नहीं कि सारा दायित्व सिर्फ इन्हीं का है, आज उनको बहुमत प्राप्त है, कल दूसरे को होगा, इसलिए देशहित सबके लिए प्रथम होना चाहिए। देश की उन्नति कैसे हो देश में सौहार्द का वातावरण कैसे हो, इसके ऊपर ध्यान रखना सबका दायित्व है। आज राजनैतिक दलों में केवल एक-दूसरे का विरोध करना ही प्रथम कार्य बन गया है। जो दल शासन कर रहा है उसके बदल जाने से उसके कार्यों को पलटाना चाहे वो देश के हित में हो या न हो विरोधी दल का ध्येय बन गया है। सिर्फ वोट की राजनीति चल रही है, जैसे भी हो वोट मिलना चाहिए। इसके लिए लोगों को, समाज को, धर्म को बांटना पड़े तो कोई आपत्ति नहीं, खुद की स्वार्थ की पूर्ति होनी चाहिए। किसी भी कीमत पर वोट मिलना चाहिए, उसके लिए देशहित को निलांजलि देने में कोई हिचक नहीं रहती। जाति और धर्म के नाम पर लोगों को बांटने की राजनीति जोर पकड़ रही है।

भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है। बड़े-बड़े शासक दल बड़े-बड़े नेता, सरकारी अफसर, सब इस बीमारी से ग्रसित हैं। सरकारी ऑफिसों में न्याय नहीं, कार्य नहीं, केवल पैसों का बोलबाला चल रहा है। ऐसे में देश कैसे चलेगा और आगे का परिणाम कितना भयावह होगा सोचा नहीं जा सकता।

आज जनता के मन में बड़े अधिकारियों और मंत्रियों के प्रति कोई श्रद्धा नहीं रही। हमने पं. नेहरू का जमाना देखा है। जिस रास्ते में से पण्डित नेहरू निकलते थे, जेठ के महीने में भी लोग घंटों तक धूप में सिर्फ उनको देखने के लिए खड़े हो जाते थे। आजकल के नेताओं का तो ये हाल है कि भाषण सुनने के लिए पैसा देकर भीड़ इकट्ठा करना पड़ रहा है।

सरकार के सबसीडी पौलिसी से साधारण वर्ग को कोई फायदा नहीं हो रहा है। सहायता राशि जरूरतमंद के पास पहुंचती ही नहीं। सिर्फ गरीबों की सहायता की बात की जाती है, नियम बनाये जाते हैं, सही में गरीबों को कोई लाभ नहीं होता। साधारण लोग लाखों तादाद में बंधुआ मजदूरी के हिसाब से अन्यत्र चले जाते हैं। उनकी इस बदहाली में विरोधी स्वर भी मौन है। यह देश की हालत है, जिस पर चिन्तन आवश्यक है।●

उत्तर प्रदेश सम्मेलन का सशक्तिकरण

युवा मंच के प्रथम अधिवेशन के लिए पश्चिमी दक्षिणी भारत में

✍ नन्दकिशोर जालान

तत्कालीन सभापति, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

सम्मेलन का संगठन भारतव्यापी होने के कारण पदाधिकारियों के दौरे एक अनिवार्य आवश्यकता तो है ही, साथ ही दौरों से संगठन एवं उसके कार्यों में भी अधिक सजीवता आती हैं। इस देश में कुछ ऐसी विदेशी संस्थाएं हैं जिनका देश के हर भाग में जाल सा बिछा हुआ है। इन संस्थाओं के सुयोजित, सुसंगठित रहने का एक मात्र कारण है कि निश्चित समय पर उनके सदस्यों की बैठकें होती हैं, उनके प्रान्तीय एवं राष्ट्रीय पदाधिकारी विभिन्न शाखाओं के दौरे समय-समय पर करते रहते हैं। सम्मेलन के प्रांतीय संगठनों में भी वे ही संगठन सर्वाधिक गतिशील है जहां इस विधा को कमी वेशी अंशों में निभाया जाता है।

पिछले तीन महीनों में सम्मेलन के सभापति की हैसियत से मुझे और सम्मेलन के अन्य कार्यकर्त्ताओं द्वारा जो दौरे हुए उन पर एक दृष्टिपात करना उचित होगा।

इनमें से जुलाई और अगस्त के दौरे सम्मेलन के उत्तर प्रदेश के प्रान्तीय संगठन को सशक्त करने के प्रधान उद्देश्य से किये गये थे। सितम्बर में हुए दौरे का मुख्य मुद्दा सम्मेलन के अन्तर्गत अखिल भारतीय युवा मंच को गोहाटी (असम) में तारीख १८-२० जनवरी १९८५ को आयोजित होने वाले अखिल भारतीय युवा अधिवेशन से होने वाले सम्बन्धित दौरों के अग्रभाग के रूप में था।

जुलाई

उत्तर प्रदेश के पूर्वी अंचल का दौरा तारीख १५ जुलाई से ता. २०-७-८४ तक किया गया। जिन स्थानों पर समाज की सभाएं हुईं उनके नाम हैं कानपुर, बाराबंकी, फैजाबाद, आजमगढ़, मऊनाथभंजन, गाजीपुर, वाराणसी, मिर्जापुर और इलाहाबाद। इन दौरों में मेरे अलावा उत्तर प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन के तत्कालीन महामंत्री श्री रमेश मोरोलिया, अखिल भा. सम्मेलन के महिला मंच की अध्यक्षा श्रीमती सुशीला सिंघी, गोरखपुर से श्री रामकृष्ण टेकड़ीवाल आदि-आदि साथ थे। बैठकें बस्ती और गोरखपुर में भी होने वाली थीं किन्तु मोटर खराब हो जाने के कारण वहां के बन्धुओं के कार्यक्रम में हम लोग नहीं पहुंच पाये। बनारस की बैठक के बाद श्री रामकृष्ण टेकड़ीवाल वापस लौट गये थे और उन्हें बाद देकर मिर्जापुर और इलाहाबाद की बैठक हुई थी।

उत्तर प्रदेश के पश्चिमी अंचल का दौरा तारीख २० से तारीख २४ अगस्त तक किया गया। दौरे के प्रारम्भ कानपुर की बैठक से हुआ और अन्य स्थान जहां पर समाज के बन्धुओं की सभाएं हुईं उनके नाम हैं- सीतापुर, शाहजहांपुर, फरुखाबाद, कैयामगंज, अलीगढ़, खुरजा, हाथरस और फिरोजाबाद। इस दौरे में मेरे अलावा केन्द्रीय सम्मेलन के समाज सुधार समिति के मंत्री श्री राजा मुरारका, कानपुर शाखा के महामंत्री श्री नन्दकिशोर झुनझुनवाला एवं केन्द्रीय महिला मंच की सक्रिय कार्यकत्री श्रीमती रुक्मिणी मुरारका थीं।

सितम्बर

सितम्बर महीने में तारीख २१ से २८ तक असम, मणीपुर और मेघालय का दौरा किया गया। इस दौरे में मेरे अलावा पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के सभापति श्री जयदेव खण्डेलवाल, महामंत्री डा. गिरधारीलाल सराफ, युवा मंच के स्वागताध्यक्ष श्री प्रमोद कुमार सराफ पूर्वोत्तर प्र. युवा मंच अध्यक्ष श्री सुरेश बेड़िया, श्री हरि प्रसाद शर्मा, श्री अनिल जैन और श्री पवन सिकरिया भिन्न-भिन्न अंचलों में साथ रहे एवं शिलांग की बैठक में पूर्वोत्तर प्रदेश के कार्याध्यक्ष श्री जगन्नाथ बावरी भी उपस्थित रहे। इस दौरे में कई सभाओं में काफी बड़ी उपस्थिति रही। इस दौरे का प्रारम्भ जोरहाट से किया गया और उसके बाद डिब्रूगढ़, नॉर्थ लखीमपुर, गोहाटी, शिलांग, सिलचर, इम्फाल एवं अन्य जगहों में सभाएं हुईं। असम के कामरूप जिले में इस समय बाढ़ का काफी प्रकोप था जिसके कारण रेल तथा रास्ता दोनों ही लगभग २० दिन तक पूर्णरूप से कटा रहा। बाढ़ के इस प्रकोप के फलस्वरूप हमारे प्रारम्भिक कार्यक्रम के मातहत हमें कामरूप और ग्वालपाड़ा जिला का दौरा करना था उसे स्थगित करना पड़ा। दूसरी ओर जब हम सिलचर पहुंचे तो एकाएक रास्ते के

कट जाने से हवाई यात्रा के लिए लोगों की जो भीड़ इकट्ठी हो गई थी उसके फलस्वरूप हम सिलचर से इम्फाल को २० मिनट की हवाई यात्रा नहीं कर सके। उसके बदले मोटर से लगभग ११ घंटे चलकर और प्राय: सुना और कई अंशों में काफी टूटी-फूटी सड़कों को पार करके हमें इम्फाल पहुंचना पड़ा।

उत्तर प्रदेश के दौरे में समाज के उस अंश के दर्शन करने का और स्थिति परिस्थिति समझने का मौका मिला जहां भाषा में विभिन्नता नहीं के बराबर है एवं रीति रस्मों के अन्तर की खाई बहुत पतली व आर-पार की जाने वाली सी है। असम के दौरे में सम्मेलन के संगठन का दिन पर दिन निखरता रूप दृष्टिगोचर हुआ और युवा मंच ने रोटरी एवं लायंस क्लब की पद्धति पर समाज के युवकों के जो सशक्त संगठन खड़े किये थे वह देख कर ऐसा लगा कि यह वह शक्ति है जो आवश्यकता पड़ने पर कुछ भी कर सकती है, या बलिदान दे सकती है। इन दौरे के मध्य अनेक नई बातों का साक्षात्कार हुआ तो कुछ पुरानी बातें भी पुन: पुन: उभर कर आईं, यथा-

१. उपरोक्त दौरों में कई जगहों की जिन सभाओं में हमें समाज के संगठन के प्रति जो लालसा और आकांक्षा के दर्शन हुए वे अवर्णनीय है। इससे ऐसा लगा कि यदि समाज के संगठन का कार्य ठीक से किया जाये और उसके लिए आवश्यक अर्थ उपलब्धि की सुविधा रहे तो देश के कोने-कोने में फैले हुए समाज के एक शक्तिशाली संगठन की कमी महसूस होती है वह न रहे।

२. देशव्यापी समाज की सुरक्षा के लिए सजग रहने वाले और प्रभावी प्रतिनिधित्व करने वाली एक मात्र संस्था अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की अनिवार्य आवश्यकता सभी को बोधगम्य थी, यथा-

अक्टूबर १९८४ में एक मोटर को दूसरी मोटर से आगे निकालने को लेकर जलपाईगुड़ी में जो मारपीट हुई थी और वहां ही नहीं बल्कि आसपास के शहरों में समाज में जो आतंक फैला था उसकी सूचना मिलते ही पश्चिम बंगाल सरकार से सम्पर्क करने का कार्य और आवश्यक प्रतिनिधित्व करने का कार्य प. बंगाल प्रान्तीय सम्मेलन ने ही सशक्त रूप में किया था।

३. हमारी जन सभाओं में दहेज के विरुद्ध प्रतिज्ञाएं करने वाले एक के बाद एक आगे आ ही जाते थे। वक्ताओं ने इसके लिए जन समूह को उभारा था। लेकिन दहेज की कारुणिक स्थितियों का प्रभाव मानस पर पड़ना बाकी नहीं रहता है।

पिछले दिनों के दो दृश्य मेरे स्मरण पटल पर छाये हुए हैं। जब राजस्थान में एक जगह और असम के नार्थ लखीमपुर के अधिवेशनों में सैकड़ों लोगों ने प्रतिज्ञा ली कि वे दहेज के लिए परोक्ष-अपरोक्ष रूप से कोई भी मांग नहीं करेंगे। नार्थ लखीमपुर के युवकों ने तो मंच पर बैठे सभी पदाधिकारियों को प्रतिज्ञा दोहराने के लिए विवश किया कि वे दहेज नहीं लेंगे, प्रदर्शन नहीं करेंगे।

४. ऐसे स्थान प्राय: नहीं के बराबर मिले जहां अग्रवाल, माहेश्वरी, जैन, ओसवाल, ब्राह्मण एवं मारवाड़ी समाज के अन्य वर्ग के व्यक्तियों का सम्मेलन को छोड़कर अन्य कोई मंच हो।

५. पश्चिम उत्तर प्रदेश के एक स्थान पर यह प्रश्न उभर कर आया कि अग्रवाल और मारवाड़ी एक ही जाति के द्योतक नहीं हैं, जबकि अन्य स्थानों पर ऐसा किसी ने प्रश्न नहीं उठाया बल्कि समाज के सभी वर्गों का सहयोग उन बैठकों में मिला।

६. समाज के युवकों में सामाजिक समस्याओं के प्रति जिस चिन्तन और लगन के दर्शन की आकांक्षा थी वह रूपक देखने को बहुत कम मिला। आज के ५०-७५ की आयु की पीढ़ी ने गांधी युग के लोगों ने एक लड़ाई स्वतंत्रता के लिए लड़ी थी और दूसरी लड़ाई हर समाज की विकृतियां को उस समाज से निकाल फेंकने की थी, उस युग से आज की युवा पीढ़ी के न गुजरने उन मान्यताओं के उनके मानस में किसी भी प्रकार का स्थान न बन पाना, यही कारण इस कमी के पीछे लगे। बात ऐसी नहीं दिखी कि समस्याओं की जानकारी उन्हें न हो। लेकिन उनके समाधान के प्रति आग के जो अंगारे उनमें रहने चाहिए थे, मात्र उनका अभाव सा था। उन्हें हवा देकर सचमुच में उन्हें अंगार बना देने की आवश्यकता लगी।

७. कई स्थानों पर स्त्रियों की उपस्थिति काफी संतोषप्रद थी और उनमें पढ़ी-लिखी, बुद्धिवादी महिलाएं थीं। एक स्थान एक बहु को देखा जो एक ओर चुल्हा-चौका करती थी और दूसरी ओर व्यापार संबंधी कागजातों में एवं इन्कम टैक्स के मसलों में भी रूचि लेती थी।

८. महिलाओं की शिकायत समय-समय पर आती थी कि उनकी शिक्षा-दीक्षा के उपयोग का साधन और वातावरण नहीं बन पा रहे हैं। सम्मेलन की संस्था को और अधिक आगे आकर सचेष्ट होना आवश्यक है।

९. अनेक जगह यह प्रश्न लोगों को सालता लगा जहां विवाह के पहले आजकल लड़कियों को देखने एवं अच्छी तरह उन्हें जांच-पड़ताल करने का सुयोग मिलता है। उसके उपरान्त भी विवाह के कुछ समय बाद कुछ युवक अपनी पत्नियों को छोड़ देते हैं और जो तथ्यहीन कारण दर्शाते हैं। हमारे दौरे में शायद कोई ऐसा शहर था जहां ऐसी कोई घटना घटित न हो चुकी थी।

१०. प्रान्तीय सम्मेलनों की सुदृढ़ता एवं उनके निरन्तर निर्देश प्रसारण की शिकायत मुखर थी। लोग चाहते थे कि जन सम्पर्क बढ़े और निरन्तर चालू रहे। सम्मेलन के द्वारा समाज सम्बन्धी साहित्य के नियमित प्रकाशन की मांग हर जगह दृष्टिगोचर हुई। लोगों का कहना था कि प्रचार के युग में सम्मेलन की प्रचार मशीनरी बहुत कमजोर है और उसे युग के अनुकूल बनाना आवश्यक है।

युवा मंच का प्रथम अधिवेशन- १९८५ पश्चिम व दक्षिण भारत का दौरा

मेरे सहित गोहाटी के श्री निरंजन विरासरिया एवं तिनसुकिया के श्री संजय गोयल द्वारा गठित शिष्टमंडल द्वारा दिनांक २९ दिसम्बर से ७ जनवरी '८५ तक, दिनांक १८, १९ एवं २० जनवरी '८५ को गोहाटी में सम्मेलन के युवा मंच के हाने वाले प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन सम्बन्धित संगठन के लिए मद्रास, बंगलौर, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश के वारंगल, आदिलाबाद, निजामाबाद, करीमगंज आदि एवं नागपुर, अकोला, बम्बई, इन्दौर, रायपुर आदि स्थानों का दौरा किया। इन दौरों में प्रादेशिक सम्मेलन के

मंत्रियों का पूर्ण सहयोग मिला। उनके साथ रहने से दौरे का महत्व और भी बढ़ गया तथा सांगठनिक कार्यों में उनसे विशेष बल मिला। दौरे का कार्यक्रम पूर्ण सफल रहा। इस दौरे के फलस्वरूप विभिन्न व्यक्तियों को विविध स्थानों पर संयोजक, सलाहकार या अध्यक्ष व मंत्री बनाया गया।

उपर्युक्त दौरों में बम्बई में दिनांक ५ जनवरी १९८५ शनिवार को सीताराम पोद्दार बालिका विद्यालय के सभागृह में मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री चिरंजीलालजी सराफ की अध्यक्षता में आयोजित एक जन सभा में मैंने अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा कि समाज को उन्नत बनाने के लिए युवा वर्ग में चेतना लाना अत्यावश्यक है अन्यथा समाज उन्नति की ओर अग्रसर नहीं हो सकेगा। संसार के सभी महापुरुषों ने अपने क्षेत्र में समाज को सही दिशा प्रदान करने का बीड़ा अपनी युवावस्था में ही उठाया था और आगे चलकर अपने लक्ष्य पर निरन्तर बढ़ते हुए वे समाज को सही मार्गदर्शन दे सके। अत: युवा वर्ग में चेतना लाने के लिए युवा वर्ग का एक मंच होना आवश्यक है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन के युवा मंच की स्थापना की गई है जिसका प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन गौहाटी में दिनांक १८, १९ और २० जनवरी को होने जा रहा है। अ. भा. मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा किए गए सामाजिक क्षेत्र के कार्यों पर विहंगम दृष्टिपात करते हुए कहा कि सम्मेलन के कार्यकर्ताओं ने समाज के जनमानस को बदलते हुए समाज में व्याप्त कुरीतियों के त्यागने एवं समाज को आगे बढ़ाने के लिए स्त्री-शिक्षा, विधवा विवाह, पर्दा प्रथा उन्मूलन तथा समाज में व्याप्त अनेक अन्य कुरीतियों के निवारण में सफल प्रयत्न किया गया है। आज समाज में दहेज के रूप को रोकने का प्रयास जारी है। इसे रोकने के लिए युवा वर्ग में चेतना लानी होगी अन्यथा हमारा समाज अपनी छवि को सुधारने में सफल नहीं हो सकेगा।

सभा के प्रारम्भ में मारवाड़ी सम्मेलन बम्बई के मंत्री श्री गौरी शंकर मोदी ने हम सभी का परिचय कराया। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री चिरंजीलाल सराफ ने आज की सभा का उद्देश्य बताते हुए सभी उपस्थित सज्जनों से अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन युवा मंच के गौहाटी में होने वाले प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन के प्रतिनिधि बनकर अधिकाधिक संख्या में अधिवेशन स्थल पर पहुंचकर उसे सफल बनाने में अपना योगदान देने का अनुरोध किया।

मारवाड़ी सम्मेलन गौहाटी के युवा कार्यकर्ता श्री निरंजनलालजी ने गौहाटी में युवकों का एक मंच स्थापित करने की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हालांकि हमारा समाज सभी क्षेत्रों में उन्नति की ओर अग्रसर है फिर भी देश के अन्य प्रान्तों के लोग हमें हिकारत की नजर से देखते हैं। अत: हमारी छवि सुधारने तथा समाज द्वारा किए जा रहे समाज हितकारी कार्यों का देश के सभी लोगों को जानकारी प्राप्त कराना जरूरी है। एतदर्थ युवावर्ग को नेतृत्व की बागडोर संभालनी ही होगी।

गौहाटी के नवयुवक कार्यकर्ता श्री संजीव कुमार ने कहा हमारे समाज द्वारा किए गए जनकल्याण कार्यों का सही ढंग से विज्ञापन न होने के कारण हमारे द्वारा किए जाने वाले जनकल्याण कार्यों का श्रेय देश के अन्य समाज के व्यक्ति ले लेते हैं। अत: हमारे समाज के युवकों को आगे आना होगा।

अंत में मारवाड़ी समाज के वयोवृद्ध कार्यकर्ता श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका ने, जिन्होंने देश के स्वतंत्रता संग्राम में एक क्रांतिकारी के रूप में कार्य किया था एवं विधवा-विवाह के प्रश्न पर समाज से बहिष्कृत हुए थे, दहेज की सही परिभाषा बतलाते हुए कहा कि अपने लड़के-लड़कियों के विवाह में बिना किसी प्रकार के लेन-देन की सौदेबाजी व दिखावा किए अपनी हैसियत के रूप में राजी खुशी अपनी लड़की को किसी भी रूप में दी गई वस्तु दहेज की श्रेणी में नहीं आती है। समाज के सभी लोग उस बात का प्रण ले लें कि हम अपने विवाह पर किसी से कुछ न मांगेंगे तथा अपनी लड़की का विवाह ऐसे घर में नहीं करेंगे जहां लेन देन की सौदेबाजी होती है तो दहेज की समस्या ही नहीं रहेगी।

अन्त में सम्मेलन के सभापति श्री चिरंजीलालजी सराफ द्वारा आभार प्रदर्शन करने के पश्चात् सभा विसर्जित की।●

स्वर्ग में या नरक में

✍ छगनलाल व्यास

एक महान संत थे। संत जहां जाते वहीं उनके प्रवचन सुनने को भीड़ इकट्ठा हो जाती। एक दिन वे जिस गांव में पहुंचे, वहां गांव के किनारे पर ही एक वेश्या मिली। उसने संत का स्वागत करते हुए उन्हें रात्रि-विश्राम अपने निवास पर करने का निवेदन किया। संत के लिए सभी समान थे, उन्होंने सहजता से निवेदन को स्वीकार किया।

प्रात: काल पूरे गांव में चर्चा थी कि संत भी वेश्या के रूप-जाल में फंस गये हैं। लेकिन मुंह पर किसी के कहने की हिम्मत नहीं थी। इसी बीच गांव में किसी की अर्थी उठने लगी। वेश्या ने अपनी लड़की से कहा- 'बेटी ! जा आज जो व्यक्ति मरा है वह स्वर्ग में जा रहा है या नरक में.. पता लगा।'

संत अवाक थे। मुझे क्या- किसी को भी स्वर्ग-नर्क का पता नहीं लगता है और इस वेश्या की बच्ची यह कैसे पता लगाएगी। इसी शंका को उन्होंने वेश्या के सामने रखा।

वेश्या ने सरलता से प्रत्युत्तर दिया- कुछ पल ठहरिए।

लड़की दौड़ी-दौड़ी आयी और अपने मां से बोली- 'व्यक्ति स्वर्ग में जा रहा है।'

संत के लिए यह अभी तक पहेली ही थी। उन्होंने पुन: स्पष्टीकरण चाहा।

वेश्या ने कहा- यह लड़की अर्थी के पीछे-पीछे कुछ कदम की दूरी पर चली- तब लोगों की बातों से लगा- वह बड़ा भला व्यक्ति था, सदा नेक चलता था। भगवान ने इसे कहां खोस लिया। इससे लगता है वह स्वर्ग का मार्ग पकड़ेगा..।

इस प्रकार किसी व्यक्ति के जाने पर लोग उसे स्मरण करें, उसके गुणगाण करे तब वह अवश्य स्वर्ग का भागीदार लगता है और किसी के मरने पर लोग उसकी बुराइयों को गिनने लगे तब वह नर्क में जाता स्पष्ट लगता है।

संत को वेश्या से यह ज्ञान मिला और पूरे गांव में प्रवचन के दौरान जिक्र किया कि ज्ञान कहां से भी प्राप्त किया जा सकता है।●

अनुभव बांटने को

✍ सोम गोयनका, अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन

अनुभव की प्रक्रिया जन्म के साथ-साथ ही प्रारम्भ हो जाती है। शिशु भी, अनवरत् प्रकार-प्रकार के अनुभव करते हुए अपनी जीवन यात्रा में अग्रसर होता है। ऐसे अनुभव आपके इर्द-गिर्द के वातावरण से प्राप्त होते हैं। यानि यह उसके पारिवारिक परिवेश, व्यवस्था, संस्कार जनित होते हैं। बुद्धि के विकास की अवस्था पर पहुंचने पर जब बालक विवेचना बोधत्व को प्राप्त होता है तब वह अपने बौद्धिक क्षमता के हिसाब से निष्कर्ष निकालते हुए अनुभवशील होता है।

परमात्मा के सृजन व्यवस्था के अधीन, व्यक्ति का जीवन बहुआयामी होता है। जीवन के सांस्कृतिक, शैक्षिक, राजनैतिक एवं व्यक्तिगत रूचियों के सोपानों से गुजरता हुआ, वह अपने जीवन को संजोता है। इन विधाओं का जीवन में, उसका तौर-तरीका, सुख-दु:ख की अनुभूति का अनुभव, उसकी अपनी प्रक्रियाजनित है। लेकिन व्यक्ति अपने जीवन में आत्मलोचन की विधा से बचने की ही कोशिश करता है। यह एक स्वाभाविक कमजोरी है कि व्यक्ति सहज रूप से किसी परिणाम के लिए अपने को दोषी नहीं मानता। जब ऐसे परिणाम दु:खद होते हैं तब वह प्रारब्ध और पूर्व जन्मों के कर्मों का सहारा लेते हुए अपने को सम्बल प्रदान करता है। दार्शनिकों ने भी तो अपनी पौराणिक अभिव्यक्तियों में इसको प्रतिपादित किया है और दर्शन की सार्थकता को देखते हुए इसकी आलोचना भी नहीं की जा सकती क्योंकि टूटते हुए व्यक्ति को एक सम्बल मिलना 'डूबते को एक तिनके का सहारा जैसा है'। प्रतिकूल परिस्थितियों में अनुकूलता की रोशनी जीवन जीने को प्रेरित करती है और व्यक्ति टूटता नहीं है।

अपने प्रतिफल विकास के दौर में, बालकपन की अवस्था में अभिभावक के संरक्षण में उनके मार्ग-दर्शन और अनुभव से वह अपनी राह निर्धारित करता रहा। बाद में व्यस्कता प्राप्त होने पर जब वह स्वयं अभिभावक के वर्ग में होता है तो उसके उत्तरदायित्वों के पहलू बदल जाते हैं। गृहस्थ जीवन का धर्म, जीवन-यापन का धर्म, आध्यात्मिक धर्म, सबका निर्वाह करते हुए सुख और शान्तिमय जीवन जीने का संदेश उसने अनुभवों की घूंटी से विरासत में प्राप्त किया है। मनुष्य इसी प्रकार अनुभवों को बांटते हुए अपने जीवन जीने की प्रक्रिया में तल्लीन है।

अब ५० बसंतों की जीवन यात्रा के उपरान्त इस पड़ाव पर पहुंचकर, जहां मैं हूं, मन के भावों को अनुभव रूप में बांटने की प्रक्रिया से रोक नहीं सकता। वे स्वत: ही बिखरना चाहते हैं। कोई भी इसे ग्रहण कर आंशिक रूप से भी यदि रूपान्तरित होता है तो- मैं, अभिव्यक्ति के इस प्रयास को सार्थक समझूंगा।

ज्ञान एवं शिक्षा एक जैसे दिखते हुए भी मेरी नजर में दो अलग-अलग विषय बिन्दु हैं। आवश्यक नहीं कि ज्ञानी शिक्षित ही हो और शिक्षित ही ज्ञानी। आज की शिक्षा का दौर बहुत पुराना नहीं है। विश्वविद्यालयीन परम्परा के प्रारम्भ के बाद ही किसी विशिष्ट विषय की पारंगतता में डिग्रियां प्राप्त लोगों को शिक्षित वर्ग कहा जाने लगा। सामाजिक प्रगति के साथ-साथ ऐसी शिक्षा की आवश्यकता भी थी, क्योंकि विशेष दक्षता के इस युग में विशिष्ट शिक्षा प्रणाली प्रयोजनीय थी। अत: कहा जाएगा कि ऐसे शिक्षित व्यक्ति की शैक्षिक सीमा उसकी ऐसी शिक्षा की परिधि तक ही सीमित है लेकिन इसके विपरीत ज्ञानी व्यक्ति की गहराई असीम है। इस विवेचना से मैं यह संदेश देना चाहता हूं कि शिक्षा के अभाव में व्यक्ति अपने को कभी हीन न समझें। वह स्वयं के भीतर स्थित ज्ञान तत्व को समझने की कोशिश करे, जिससे वह अनुभव कर सके कि वह मूलरूप में क्या है ? मेरा मानना है कि अपने इस सृजन में प्रभू सत्ता ने प्रत्येक व्यक्तियों को कुछ अहम् ज्ञान तत्व से अवश्य ही ओत-प्रोत किया है। कमी यह रह जाती है कि हम स्वयं यह नहीं समझ पाते कि हममें कौन-सी शक्ति सम्भावनाएं छिपी हुई है। ऐसी शक्ति क्षमता से सामंजस्य रखते हुए जीवन की कोई भी विधा से सफलता की दहलीज का स्पर्श किया जा सकता है। निराश होने की तो आवश्यकता ही नहीं है। संकल्पों का रूपान्तरण स्वमेव ही होता चला जाएगा, जिसे हम सफलता की संज्ञा देंगे। ऐसी सफलता के बोझ से अहम की सृष्टि न हो, इसलिए इसे प्रारब्धजनित कह देने में नुकसान नहीं है। अपने निजी जीवन की यात्रा के प्रारम्भिक दौर में हम दो मित्र किस प्रकार जुड़े ? दोनों के एक जैसे सपने और संकल्पों को कैसे रूपान्तरित किया ? या यूं कहिए कि करने के प्रयास में क्या उभर आया कि आज ऐसा प्रतीत होता है कि ऐसी उपलब्धियां क्या हमारी क्षमता सीमा में थी ? निश्चित ही क्षमता सीमा में थी, तभी तो हुई, लेकिन अहम् बोझ से बचने के लिए मैं कहूंगा कि प्रारब्ध से हुई।

वैवाहिक जीवन से पूर्व कोई पर्याप्त विशिष्ट शिक्षा भी नहीं थी और व्यापारिक परिवार से सम्बन्धित होने के कारण कुछ कर गुजरने की ललक थी। पारिवारिक परिवेश जनित ज्ञान तत्व का जब बोध हुआ, तब मसाले का उद्योग कुशलता के साथ किये जाने की बात चित्त ने स्वीकारी। इसी एक सही संकल्प ने दोनों मित्रों के प्रयासों को भरपूर सफलता के रूप में रूपांतरित कर दिया।

आज 'गोल्डी मसाला समूह' की उपलब्धियों से हम तृप्त हैं किन्तु ठहराव नहीं है। अब हम अपने को इस अनुभव को बांटने के काबिल समझते हैं। भौतिकवाद में, सामाजिक रूप से स्वीकृत सफलता आर्थिक उपलब्धियों की कसौटी पर परखी जाती है। ऐसी सफलता कुछ खास सिद्धांतों के आधार पर प्राप्त की जा सकती है। सर्वप्रथम, उत्कृष्ट संकल्पों का होना आवश्यक है। इसे आपके ज्ञान तत्व की स्वीकृति प्राप्त होनी चाहिए। इसके बाद इसके कार्यान्वयन की विधा का रूचिपूर्ण होना आवश्यक

है। जब ऐसी स्थिति बन जाती है तो आवश्यक श्रम स्वत: ही नि:सृत होने लगता है। यह एक अनवरत् प्रवाहित धारा की भांति आपको गन्तव्य तक पहुंचाती है।

यह यात्रा कर्मयोग की यात्रा है, जिसे ध्यान योग की अवस्था सी ही कहा जा सकता है। एक लक्ष्य स्थिर करके कर्मनिष्ठ होना ध्यान योग से कम नहीं है। अत: यह कहा जा सकता है कि इस विधा के स्वावलम्बन से भी हम आध्यात्मिक के उस बिन्दु तक पहुंच सकते हैं, जहां ध्यान योग से पहुंचने का सिद्धांत ऋषियों ने प्रतिपादित किया है।

ऐसी स्थिति के अधीन चाहत के अनुसार संकल्प का रूपान्तरित अवश्यम्भावी है, किन्तु उस पड़ाव पर पहुंचकर उपलब्धियों के अहम् बोझ भाव से बचना होगा। इसके अलावा ऐसी उपलब्धियां तरह-तरह के अभिशापों से भी व्यक्ति को आतंकित करती है। इस अवस्था से बचने के लिए ऐसे सफल व्यक्ति को ऐसे पुरुषार्थ का भी पोषण करना होगा जो अभिशप्त स्थितियों पर विजय प्राप्त कर सके।

व्यक्ति की ऐसी पुरुषार्थ की अवस्था उसे व्यक्ति से व्यष्टि के आयाम तक पहुंचाती है, जिस अवस्था में वह समाज, राष्ट्र और उससे भी ऊपर के हितों की बात सोचना प्रारम्भ करता है और चाहत होती है कि इस धरातल पर भी उसे कुछ करने की निमित्तता प्राप्त होती रहे। ऐसा सौभाग्य प्राप्त होने पर व्यक्ति कृत्य-कृत्य हो जाता है। ऐसी स्थिति जन्य अनुभूति से आनन्द की उस अवस्था का बोध होने लगता है, जो परमानन्द तक पहुंचता है। यह है व्यक्ति का अन्तिम पड़ाव, जहां पहुंचना व्यक्ति की क्षमता के बाहर की बात नहीं है। यही अभीष्ट होना चाहिए।

परमश्रद्धेय स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरी जी महाराज, हरिद्वार-भारत माता मन्दिर के संस्थापक गुरू जी महाराज ने बड़े ही सरल शब्दों में कहा है कि **"यदि हमारा संकल्प श्रेष्ठ है तो क्रिया भी श्रेष्ठ होगी, यदि देश में नैतिकता लाना चाहते हैं तो अच्छा संकल्प करें।"** ●

प्यारो राजस्थान

ओ म्हारो प्यारो आरो राजस्थान हे
सगळा सूं इधको सब सूं बिरलो है
ओ म्हारो प्यारो निरालो राजस्थान हे
लोग लुगायां मस्त निडर जीवै
राणा प्रताप मीरा रो प्यारो राजस्थान है
एक दूजे ने सुसनेउ सूं बरतै
भाईचारे रो अनुपम राजस्थान है
रंग बिरंगा गाभा ओढे अर पैरै
रुपालो गरबीलो म्हारो राजस्थान हैं
ऊंचा-ऊंचा धोरा चमकै चांदी सा
देव रमै बो ही प्यारो राजस्थान है
सूरवीरां री धरती है घणी महकाऊ
मीठी बोली वालो लाडीको राजस्थान है
रेकारे ने समझै सगला गाली
इज्जत सम्मान सूं भर्यौं राजस्थान हे
प्रेम देवे प्रेम लेवे बो प्रदेश है
भारत रो हिरदै ओ राजस्थान है
धरम अर धरती कदै नीं छौड
बो सब सूं न्यारो प्यारो राजस्था है

❑ **डॉ. गुलाबचन्द कोटड़िया**
चेन्नई

एक नया विश्वास

जिन्दगी की दौड़ में आगे निकलना है हमें,
प्यार अपने देश का जन-जन में भरना है हमें।
हम दुराचारी नहीं, सद्भाव भरते हैं सदा,
वख्त के हर दौड़ को, पहचानते हैं हम सभी
एक समर्पित भाव हम भरते हैं अपने राष्ट्र में
स्वार्थी संसार से डरना नहीं है अब हमें
प्यार अपने देश का जन-जन में भरना है हमें।
हम प्रकृति के पुजारी, पथ नया श्रृजन करें,
अपनी भारत भूमि को, समवेत सादर नमन करें
ले के हाथों में तिरंगा, विश्व में बढ़ते चलें
एक अधूरी चाह को, आओ हम पूरी करें।
स्वर्ग अपने देश को मिलकर बनाना है हमें
प्यार अपने देश का, जन-जन में भरना है हमें।
हर खेत में हरियाली और हर हाथों में काम हो
हम प्रगति पथ पर चले हैं, होठों पर मुस्कान हो।
सत्य की परछाइयों पर आंच न कोई आयेगी
इस नए भारत की तुलस्यान, शक्ति और बढ़ जाएगी।
एक नया इतिहास अपने हाथों सें लिखना है हमें
प्यार अपने देश का जन-जन में भरना है हमें।

❑ **जगदीश प्रसाद तुलस्यान**
मुजफ्फरपुर

अन्तर्जातीय विवाह - बढ़ते कदम

✍ डा. श्यामसुन्दर हरलालका
पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन, कार्यकारी अध्यक्ष

भारतीय समाज धर्म, नैतिकता व जातिवाद, सामाजिक परम्परा व रूढ़िवाद के शिकजों में वर्षों से बंधा हुआ था, जिसके चिंतन का विन्दु इस रेखा से बाहर कभी नहीं झांकता था।

स्वाधीनता के बाद शिक्षा का प्रसार, रोजगार के साधनों में क्रांतिकारी परिवर्तन, वैज्ञानिक व तकनीकी साधनों का उपलब्ध होना, आर्थिक स्थिति मजबूत होना भारतीय समाज की जीवन शैली में बहुत बड़ा बदलाव लेकर आया है। सुरक्षा के नये आयामों से संयुक्त परिवार का बिखराव, पारिवारिक नैतिक मानदंडों में गिरावट, पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण, भोग संस्कृति व भौतिक जीवन की सामाजिक मान्यता ने हमारे सोच-विचारों में बहुत बड़ा परिवर्तन किया है।

अधिक शिक्षा व रोजगार के साधनों से भौतिक प्रगति की लड़ाई में हमने कब अपने जीवन मूल्यों की बलि चढ़ा दी, हमें पता ही नहीं चला। धन वैभव, ऐश्वर्य सत्ता आदि बातों ने ही समाज को अत्यधिक प्रभावित किया है।

मारवाड़ी समाज विभिन्न वर्गों में बंटा हुआ है, जिसमें अगरवाल, महेश्वरी, श्वेताम्बरी, दिगम्बरी, ब्राह्मण, जाट, माली आदि प्रमुख है। इन समाजों में भाषा, वेषभूषा, खान पान आदि की समानता है मगर इनमें आपस में विवाह-शादियां नहीं होती है। इसके अलावा विभिन्न प्रदेशों में अन्यान्य भारतीय समुदाय बसते हैं, जिनके साथ भी शादी-विवाह की मान्यता नहीं मिली है।

दो समुदाय के बीच होने वाले शादी-विवाह को अन्तर्जातीय विवाह की संज्ञा दी गई है। पांच शतक पहले इस प्रकार के विवाह की कल्पना करना भी घातक था। ऐसी स्थिति में लड़के-लड़कियों को परिवार व समाज से निष्कासन करना, विभिन्न प्रकार की यातना देना व दो समुदाय के बीच हिंसक संघर्ष होना अस्वाभाविक नहीं था।

आज उच्च शिक्षा के लिए लड़के-लड़कियों को बराबर का अवसर प्राप्त है। मध्यम वर्ग अपनी लड़कियों के भविष्य को स्वावलंबी बनाने हेतु उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं, फलस्वरूप सह-शिक्षा में दोनों वर्गों की भागीदारी से आपसी मेल-जोल, प्रेम प्रसंग आदि को बढ़ावा मिला है और दो समुदायों के बीच विवाह अभिभावक के लिए एक मजबूरी है। कुछ अभिभावक दहेज न देने की स्थिति में भिन्न समुदाय के लड़कों के चयन में लड़की से अपनी रजामंदी जताते हैं।

शहरीकरण और जीविकोपार्जन के क्षेत्र में होने वाले आपसी मेल-मिलाप ने भी अन्तर्जातीय विवाह के लिए प्रोत्साहित किया है।

इन दिनों मारवाड़ी समाज के चिंतन में एक परिवर्तन बहुत साफ दिखाई देता है। अगरवाल, महेश्वरी, जैन समुदाय में लड़के-लड़कियों के आपसी अन्तर्जातीय विवाह में विशेष अड़चन नहीं दिखाई देती है, लेकिन लड़की के अभिभावक लड़के वाले की सम्पन्नता के प्रति जागरूक अवश्य है। इन जातियों में काफी सामाजिक मान्यता सम्पन्न विवाह हो रहे हैं। लेकिन अभी तक लड़के-लड़कियों के आपसी निर्णय व जिद्द के कारण ही अभिभावक झुक जाते रहे हैं।

गत चालीस वर्षों का लेखक का अनुभव रहा है कि जिन समुदाय में खान-पान, भाषा, वेष-भूषा, रीति रिवाज व भौतिक सम्पन्नता में समानता है, उनमें यह विवाह सफल रहा है। जिन लोगों ने बंगाली, असमिया, गुजराती या अन्य भाषाई लड़कियों से शादियां की है वे अधिकतर सफल ही रही है, मगर मारवाड़ी लड़की इस समाज से बाहर जाकर पछतावा करती हैं कारण जीवन भर निरामिष भोजन के बाद आमिष भोजन, विभिन्न भाषा, रीति रिवाज, व पारिवारिक वातावरण उन्हें रास नहीं आता।

बढ़ती हुई उम्र, सामाजिक स्वछन्दता, टीवी, वीडियो का उत्तेजित यौन वातावरण, अश्लील साहित्य भी एक प्रमुख कारण है कि आज समाज के लड़के-लड़कियां शादी से पहले प्रेम प्रसंग में फंसकर अन्तर्जातीय विवाह बंधन में बंध रहे हैं।

मारवाड़ी के किसी भी वर्ग में आपसी सौहार्दपूर्ण वातावरण में अन्तर्जातीय विवाह का हमें स्वागत करना चाहिए, इससे हमारा दायरा बढ़ेगा, विभिन्न समाज में एकता व भाईचारों की नींव अधिक मजबूत होगी।

गत कुछ वर्षों में अग्रवाल, जैन, महेश्वरी व गुजरातियों में काफी शादियां हुई, जिसे समाज की मान्यता प्राप्त हैं। लेखक को बहुत सी शादियों में भाग लेने का अवसर मिला, तो देखा कि दोनों तरफ के लोगों में पूर्ण उत्साह है, वे इस प्रकार की शादियों की तारीफ भी कर रहे हैं। लड़की किसी भी वर्ग की हो उनका मुख्य मापदंड लड़के की योग्यता, पारिवारिक वातावरण व सम्पन्नता ही देखी जाती है। मैं ऐसे बहुत से युवकों को जानता हूं, जिन्होंने असमियां लड़कियों से शादी करके घर बसाया है, व उन लड़कियों से मिलने पर आश्चर्य भी होता है कि वे पूर्ण रूप से घुल मिल गई हैं। उनकी वेषभूषा, बोल-चाल, रीति रिवाज आदि से लगता नहीं कि वे कभी भी अन्य समाज से आई हुई हैं।

सन् १९६७ में जब मैं गुवाहाटी विश्वविद्यालय में छात्र-संघ का नेतृत्व करता था, उस समय मेरे एक मरवाड़ी सहपाठी को असमिया लड़की से प्रेम हो गया। लड़की भी एम.ए. की छात्रा थी, व गुवाहाटी के बहुत सम्पन्न असमिया परिवार से नाता रखती थी। लड़का छात्रावास में रहता था, दोनों ने कामाख्या में जाकर विवाह कर लिया, लेकिन लड़की के घर वालों ने इसे नहीं स्वीकारा। उन्होंने लड़की पर काफी जुल्म किये मगर वह एक

दिन अपने पिता की कैद से भाग गई और लड़के के साथ उसके शहर में चली गई। उधर लड़के के घरवालों ने भी घर में घुसने नहीं दिया, फलत: वे बहुत ही दयनीय स्थिति में दिन गुजारने लगे और अपने घर के सामने ही रहने लगे। एक अर्से के बाद देखा गया कि लड़की की मिलनशारिता, मारवाड़ी बोल-चाल, गीत, रीति-रिवाज, में अन्य मारवाड़ी लड़कियों से बहुत आगे है और मारवाड़ी समाज में उसे मान्यता मिलने लगी। बहु के गुणों की चर्चा सुनकर घरवालों ने भी उसे अपना लिया और बाद में लड़की के पिता ने भी स्वीकार कर लिया। आज वे बहुत सुखी-सम्पन्न हैं। उस लड़की को देखकर हमें गर्व होता है। वह एक शिक्षा संस्थान की प्रधान आचार्य है।

अब स्थिति वह नहीं है जो हमने ३५ वर्ष पूर्व देखी है। अब आये दिन असमियां लड़कियों से शादी की चर्चा सुनते रहते हैं। बहुत सी शादियों में सरीक भी होते रहते हैं। मैं एक मारवाड़ी डॉक्टर लड़की, एक कालेज की अध्यापिका को जानता हूं जिसने असमिया लड़के से शादी करके खुशहाली की जिन्दगी जी रही है। ऐसे काफी उदाहरण मौजूद हैं।

अन्तर्जातीय विवाह विश्व भर में स्वीकार्य हैं। विभिन्न वर्ग जाति व धर्म के लोगों में शादियां आम बात हो रही है, मगर सफलता के बारे में हमें आज भी शंका है। भारतीय हिन्दु समाज में जहां लड़के-लड़कियों के विचारों में समानता है, उच्च शिक्षित है, उनमें सफलता की आशा अधिक हैं। अन्तर्जातीय विवाह को बढ़ावा मिलना चाहिए, मगर सफलता के पहलुओं की बली बेदी पर नहीं।●

दहेज-आधुनीकरण

✍ गिरधारी लाल जगतरामका, कलकत्ता

जब से मारवाड़ी सम्मेलन से जुड़ा तब से ही दहेज (दायजा) की चर्चा समाज में होती रही है। पौराणिक काल से यह प्रचलित है जिसकी कथा मैंने तुलसीकृत राम चरित मानस में पढ़ी। शंकर पार्वती तथा राम जानकी के विवाह के प्रसंग में दहेज की खूब बड़ाई की गई है। हां यह जरूर लिखा गया कि दोनों ही पक्षों ने दहेज मांगा नहीं। परंतु इन कथाओं से यह समझ में आता है कि भारतीय समाज में दहेज की प्रथा हमारे जीवन का एक अंग हमेशा से बनी रही है। हां पुराने जमाने में इसका रूप सुंदर था कारण देशवासीं समृद्ध व सम्पन्न थे। जैसे समय के साथ सब बाते बदलती है वैसे ही दहेज का रूप विकृत होता गया। चूंकि हमारा समाज धनी वर्ग का है इसलिए दहेज पर धन की काली परत धीरे-धीरे चढ़ती गई। अच्छाई की जगह बुराई भी आ गई। कब कैसे व क्यों बेटे वाले बेटी वालों को नीचे मानने लग गये। मैंने एक कहावत सुनी है कि 'सग्ग की जड़ सग्गो होव है'- इस कहावत के अनुसार संबंधियों में ऊंच नीच का प्रश्न कैसे हुआ।

कुछ वर पक्ष वाले कन्या पक्ष से गुलामो जैसा व्यवहार करते हैं मानो लड़की के बाप को खरीद लिया है। इस कुप्रथा में महिलाओं की भूमिका भी बहुत ज्यादा रही व अभी भी है।

समाज में अच्छाई तो घटती जा रही है। हमारे सभी भाई तो करोड़पति नहीं है। ज्यादा लोग तो किसी तरह घर चलाते हैं। एक लड़की का विवाह आते ही उनका सब कुछ बिक या गिरवी हो जाता है। बेचारे खून का घुंट पी पी कर ही सारा जीवन बिता देते हैं।

दहेज में नगद सामग्री देनी तो एक साधारण प्रथा है जिसे नेग की संज्ञा दी जाती है। कहने को तो अनेक महानुभाव कह देते हैं कि हमें कुछ नहीं चाहिए पर खातिर ठीक होनी चाहिए।

यहीं से आधुनिक दहेज प्रारंभ हुआ है। ढुकाव (रिसेप्शन) में एक से एक बढ़ कर दिखावा व जो भी ज्यादा से ज्यादा हड़कम हो सो किया जाता है। इस कम्पटिशन को बढ़ाने में आज कल के केटरर यानि हलवाई वालों की बड़ी भारी भूमिका हो रही है। यह व्यापार के नाम पर लूट पाट है। केटरिंग वालों को पैसा कमाने हैं इसलिए रोज रोज नए आविष्कार करते हैं। स्वागत समारोह में ऊंचे से ऊंचे दाम की सजावट तो कराते ही हैं खाद्य व्यंजन इतनी तरह के सजाये जाते हैं जिनकी कोई गिनती नहीं। मारवाड़ी पन की कम, सारी देशी-विदेशी बानगी, ज्यादा रखी जाती है। कहीं कहीं तो सैकड़ों की संख्या में होती है। ढुकाव में पहले तो हाई टी होती है बाद में जेनरल बुफे सजती है तथा तीसरी सज्जन गोठ सजाई जाती है। सब पर अनाप सनाप खर्च होता ही है। विवाह स्थल भी बढ़िया से बढ़िया होना चाहिए जहां एक दिन का कई लाख भाड़ा व पंडाल आदि भी सुन्दरतम आदि। सारा भार बेटी के बाप के सर पर। मैं तो समझता हूं यह आडंबर व दिखावा हमें पूरी तरह डुबा देगा। केटरिंग वालों के इशारे पर हम नाचते हैं। भोजन सामग्री सैकड़ों तरह की देख कर ऐसा लगता है कि यह मानवों के लिए नहीं दानवों के लिए सजा है कारण दानव ही इतना खा सकता है।

सजावट व इतना ज्यादा दिखावा करने के पीछे एक राज यह भी है कि अपने बड़प्पन की पब्लिसिटी। भारी भड़कम रूबाब दिखा कर गांव से रुपया भी तो कर्ज पर लेना है। स्टेटस सीम्बल होना जरूरी है।

अंत में समाज के प्रबुद्ध लोगों ने निवेदन यही है कि इस भयंकर बीमारी से बचने के लिए हर जगह विचार गोष्टी (सेमीनार) करना चाहिए तथा सभी वर्ग के लोगों को अपनी बात कहनी व क्या ठीक है समाज को बताना जरूरी है।

बड़ी अच्छी बात है कि श्री मोहनलालजी तुलस्यान ने सम्मेलन की बागडोर संभाली हैं। मुझे आशा है कि उनके नेतृत्व में इस प्रथा में काफी सुधार वे करा सकेंगे। साथ ही मातृशक्ति को स्त्री जाति के हित में क्रांतिकारी निर्णय लेने की दरकार है। मैंने सुना है कि ब्यूटीपार्लर दुल्हन को सजाने के नाम पर ८ से १५ हजार का खर्च भी कन्या पक्ष कर डालता है। आशा है आप अपने विचार खुलकर समाज विकास को अवश्य लिखेंगे।●

कुर्सी...कुर्सी- और कुर्सी.....

✍ ओमदत्त जोशी, ब्यावर (अजमेर)

मिनरी रा भाग री छींको टूट्यो अर म्हारा रामजी बेगा ही उछल'र अध्यक्ष री कुरसी माथे जा बैठ्यो, हंस निकालण तांई। अध्यक्ष जिस्या पद वाली कुरसी म्हारे कुरसी माथे बैठता ही कैई कुरसी रा जनमजात भूखा री छाती माथे साँप लौटण लाग्या। म्है उणां ने फूटी आँख ही नी सुवायो। पण अब करै तो कांई करै? म्हैं बैठग्यो जो बैठ ही ग्यो। छाती माथै मूंग दलण नै।

अध्यक्ष बणावत रा ठेकादारा नै इण बात री भणक पड़ी तो वे गस खाय नै जठै हा बठै ही बेहोस होयग्या। घणी ताल पछै होस आयो अर फटाफट आपरा चमचां री एक आपतकालीन बैठक बुलायी। बैठक में एक खूंसट आको, अकड़'र बादलां ज्यूं गरजो- 'अध्यक्ष री सीट माथै बैठण वाळां रो इण चमचागिरी री वरियता सूची में किस्या नम्बर माथे नाम है?' आका री कानफोड़ दहाड़ सूं सगळा थर-थर कांपण लाग्या ज्याणे बलि चढ़ावण पेली बकरो धूजण लागे। धौलां दोपारां, हजार-हजार वाट रा लट्टू जोय-जोयनै, आंख्यां माथे चरमा लगा-लगा'र म्हारो नाम चमचागिरी री वरिष्ठता सूची में सम्भालण लाग्यो। एक-एक नाम नै बीस-बीस बार पढ़ लियो पण म्हारो नाम उण सूची में कठैई नी पढ़ण में आयो। अर मिलतो भी कियां? म्है तो चमचागिरी जिसी राजनीति रै नैतावां सूं दुआसलाम तो दूर री बात आंख्यां हीज नी मिलायी? फेर म्हारो नाम उणां री हाजरिया वाली सूची में कियां आवतो? घणी देर होयगी नाम सम्भालण वाळां नै तो फेर आको अड़ायो ऊंट री जिया- 'अरे ! सगळा आंधा होयग्या कांई? नाम सम्भालण में इतनी देर कियां लगी? म्है इतो पढ़ियोडो नी हूँ जिण रा तो ये फोड़ा है...

इतरा मैं बैठक में हाजर हुयोड़ा सगळा चमचा, चमक्या जाणे आभे मे चाणचक वीजळ चमकी हुवै। सगळां री जुबान माथे ताळा लागग्या। उथलो देवण खातिर एक दूजां रै कुणियाँ रा ठेस्सा देण लाग्या। गळा में घण्टी कुण बाँ? एक चमचो, सावचेत हो'र, रोवण जिस्या सुर सूं केवण लाग्यो- हुजूर इण चमचागिरी वरिस्ठता सूची में तो उणां रो कठे ही नाम नी है? सगळा पाँच-पाँच बार इण सूची रो एक-एक आखर पढ़ लियो...।'

इतरो सुणता ही आको, चमचा माथे, आपरो, आफरो उतारण लाग्यो-मूण्डा सूं आवळ-खावळ बकण लाग्यो- 'हरामखोरां! आ बेओपती बात कियां हुई? एक म्यान में दो तलवारां नीं रहै सकै? म्हारी जी हजूरी नी करण वालो आज तक अध्यक्ष री कुरसी माथे नीं बैठ्यो फेर ओ कियां बैठग्यो। अबे वेगा सूं बेगा इस्यो उपाय करो कै उणां नै कुरसी सूं उतारो। इण उपायां में आछा-बुरा, खरा-खोटा, भूण्डा, जो भी बदनामी करण चाहो करो पण वो कुरसी माथे नीं रेहणो चाहिजै। ओ काम आज नीं अबार सूं ही करण लाग जाओ...।' आंधां मे काणो राजा बणियोड़ो आको ओ फैसलो सुणाय दियो।

सगळा चमचा म्हारा सूं कम पढ़िया- लिखिया हा पण उचपलाई, दुराचारी बेअक्कली, झूठ, मक्कारी, जगड़ा-फसाद, दादागिरी, जूठी बातां रो परचार, परसार अर समाज में एक-दूजां नै लड़ावण अर काँटा बिखेरण में ऊँची-ऊँची डिगरियां लियोड़ा हा। भायां-भायां में फूट पकावण में परवीण, किणी री बढ़ती नै देख छिजण वाळा रो एक इस्यो जमघट है जिणमें म्हारा जिस्या सीधा-साधा, अल्ला री गाय रा सुभाव वाळा रै कियां दोसती हुवै। उणां रै हाथ में माळा है पण पेट में कुदाला है। इस्या कुरसी लपक पचड़ा में नीं पड़तो पण जन भावना नै नी टाल सक्यो। हल्दी लागी नी फिटकड़ी रंग चोखो आयग्यो। आपरा काम रो काम धियान सूं धियान। नी माधू रो लेणो अर नी ऊधो रो देणो। पण अध्यक्ष री कुरसी माथे बैठतां ही म्हारी टांग खींचण लाग्या। वे आँख रा आंधा अर कान रा काचा हा उणां री तो नींद हराम होयगी। मिटिगा पर मिटिंगा होवण लागी। कदेही, कठेही तो कदे कठेही गुपत बैठका होवण लागी। उण में फकट इण बात री चरचा होवती कै, इण अध्यध्य सूं कुरसी कियां हड़पनी है। इण में म्हारी कार्यकारिणी रा भी दो-तीन पदाधिकारी उण बैठकां रा सुवाद लेवण लागग्या। वे भी ऊँचों पद चाहवता। उणां रो भी चमचागिरी सूची में नांम हो। इस्या मौका माथे वे आपरा आकावां नै राजी करण रा सगला दावपेंच लगा'र आपरी सांची सुवामीभगति रो परिचय देवण रा जतन करण में लागग्या।

म्है सोचण लाग्यो- अध्यक्ष री कुरसी माथै वाळा नै खूंसट आकावां रा तलवा चाटणा पड़ै, बंधक मजूर री ज्यूं उणां री तन-मन-धन सूं देवा करणी पड़ै। उणां री घणी बेगारां करणी पड़ै जद-जार चमचागिरी री वरिस्ठता सूची में नाम आगे सूं आगे आवै। पण म्है तो इस्यो कोई काम नीं कर्‌यो पछे फेर व म्हनै क्यूं चावण लाग्या। म्है भी परजातंत्र रा राज रैवण वाळो इस्यो गुलामी रो मारग क्यूं अपनाऊँ? म्हारा सैयोगी म्हारी हिमत बंधावत रिया वे आ केवता-हिम्मते मरदां, मददे खुदा। इण सूं म्हारो आतमबल जागतो रियो।

अब म्हारा समरथकां री भी बैठकां होवण लागी उण में विपकसी आकावां रा चमचा भी आय'र म्हारै बीच बैठ जावता रंगा सियार री जियां। सगळी बातां री सी.डी. आपरै चहैता आकावां रै सामै दिखावता इण सूं वे सावचेत हो जावता। घर रा भेदी लंका ढावै जिस्या काम होवण लाग्या। आपरी भड़ांस निकालण खातिर कागद-पतर रो सिलसिलो सरू हुयो। म्हारी पारटी भी पाछै नी री। उणां रा इतरा बरसा रा काळा कारनामा ने जनता रै बीच उजागर होता देख'र गावा फाड़र लाग्या। अबै वे अणओपती, झूठी बातां रा बंडल लिखण लाग्या। म्हारी समिति माथे अविसवास सारूं धरां-धरां लीतरा-फाड़ता मंगता ज्यूं दर-दर री ठोकरां खावण लाग्या। जूठां-सांचा लिखावट कराय एक दिन बेअक्ल, छिजण वाळा, बड़बोला, खुसामदी, जूठां रा बादसाह, अविसवास रो एक पानो देवण ने तीस-चालीस मिनखा

रो हुजूम म्हारा सगो मॉ जायो, म्हारो आदर जोग बहनोई है, सीधा-साधो सगो है। म्हनै क्यूं उणां रै विरोध रो पानो देया रिया है। यां सगळा आदरजोग सम्बन्धां ने बलि देय दी एक कुरसी रै खातिर जो आखी उमर री नी है जद कि वे सनबन सात पीढ़ियां रा है। म्हनै सपना में भी आ उमेद नी है। सोचण लाग्यो कुरसी दुनियां में कांई-कांई करवायदे। भाई-भाई रो जानी दुसमण। मामा-भाणेज रा पवितर रिस्ता नै तोड़ देवै कुरसी। मितर नै सतरू बणाय देवै और तो और कांई-कांई अजूबा काम करवाय देवै आ कुरसी।

म्हारी कुरसी हड़प लालचां नै म्हारा आवतां देख'र म्है मिनखी ज्यूं घर रा पाछला ही पाछला कमरा में घुस'र बैठग्यो। म्हारा बारे नीं आवण सूं बे नारा लागावण लाग्या। गली-मोहल्ला वाला भी इण भीड़ नै देखण लाग्या। म्हारे बारे नी आवण पर वै धरती पकड़ होयग्या। म्है कठा तांई दुबक'र बैठो रेवतो। म्हारी घर आळी, इजतदार लुगाई नै आ बात आछी नीं लागी, वा म्हारा कन्ने आय बोली- इयां लुक छिप'र बैठण सूं कांई लाभ है? सामनो करो नीं तो छोड़ द्यो कुरसी नै?

म्है, म्हारी घरआली नै समझावण लाग्यो- म्है चालीस बरसां सूं 'विद्या ददाती विनियम' रो पाठ पढ़ावतो आ रियो हूँ, आपरा बेटा-बेटियां, पौता-पौतियां नै भी इण गेला माथे चला रियो हूँ। जीवण रो आदरस ही इण ने मान्यो फेर तूं ही बता यां दुस्टा रै सामे क्यान करूं समझौतो?

घरआली बोली- 'आज रै जमाना मुजब ढलनो पड़सी अर नी ढल सको तो छोड़ द्यो कुरसी। आज कुरसी माथे वे ही लोग बैठला जो छली, कपटी, झूठा है। सीधा अर ज्ञानी लोगां नै ये मिनख नीं टिकण दे एक घड़ी? आप तो म्हारो केहणो मानो अर सम्भालद्यो इण बेदाग कुरसी नै कबीरजी री ज्यान -जयो की त्यौं धर दीनी चुनरिया।'

घरआळी री बात म्हारे काळजे री कौर माथै करारी चोट मारी अर म्है आपरा आदरसां री बलि चढायां बिना ही तुरत कुरसी छोड़ दी लफंगां ताई।●

झमकू नै जस

✍ सुनील जैन, हरनांवा (नागौर)

सेठाणी सेठां ने दवाई सरू करदी, पण सिगरेट नीं छोड़ी। घणी जुगत करी पण सेठां रै आगै सेठाणी री अेक नीं चाली।

मांदगी इतरी बदगी'क सेठां रा हाड़का निकळगा। लोग तो कैवे हा'क सेठ तो घणा दिनां रा पावणा कोनी। इणरो इलाज तो मरयां ही होसी। गालड़ा बैठगा, दांत निकळगा, आंख्या ऊंडी बैठगी और दुकान हौळे-हौळे आवण-जावण लागगा। पण सेठ सिगरेट नीं छोड़ी तो नीं ई छोड़ी।

सेठा री चाळीसवीं सालगिरह मणाण रो सालों-साल री भांत दिन आंयो। सेठजी सेठाणी घर में साफ-सफाई कर, आपरा हेताळू मिलळवाळा अर भाई गनायताा ने नूंतो दियो अर आच्छो जीमण बणायो। मना-गना सेठ जीवण सूं हारगा हो, आ सोच अर ठाह कोनी सांवरो कद उठाय ले? सेठां री मनगत सेठाणी जाणगी ही, इण सारू बा सेठां नै राजी राखण री कौशिक करै ही। सगळा मिजमान अर बास गवाड़ी रा आदमी भैळा हुआ तो सेठां रै धर्म भाई चुनड़ी आळौ फैंटो बंधायो। एक जणो जबरी कामळ औढ़ाई। इण भांत सेठां नै न्यारी-न्यारी भेंट देवण लागगा। अबै सेठां रै बेटा री बारी आई तो बो आपरै बापूजी ने राजी राखण सारू एक चांदी री सिगरेट राखण री डब्बी अर सिगरेट जगाणै आळी लाईटर पेस करी। सेठ अणूंता राजी हुया, बेटा ने छाती रै चेप आशीष दिवी। भेंट देवण री आखरी वैला उणां री बेटी झमकू एक डब्बी लेर आयी और बोली- म्हारी इण भेंट ने अंगेजों अर म्है भेंट जद देवूं जद आप इण भेंट ने लेवण री सौंगन खावौ। सेठ झमकू रै माथै हाथ मेल सौंगन खाई'क थारी भेंट मैं काळजा री कीमती बसत मान अर अंगेजूलां। झमकू आपरी डब्बी सेठां ने पकड़ाय दी, सेठ डब्बी नै खोली तो उण में लिख्योड़ो हो के 'आज पछै कदैई सिगरेट पीवोला तो म्हारो लोई पीवोला। आपने म्हारा जीव री सौंगन है।'

सेठां री आंख्या डबडबाइजगी। बेटी ने छाती सूं लगाय, सिगरेटां री डब्बी अेका कानी मेल दीनी, जकी सिगरेट अबार जगाय'र हाथ में ली ही जिण रो अेक ही कस खींच्यो हो आंगणे नांख'र डावा पग री जूती सूं मसळ दी अर सिगरेट नीं पीवण री सौंगन ले लीनी। सिगरेट नीं पीवण सूं अर दवाई बैळासर लेवण सूं टीबी आळी मांदगी साल भर में खतम हुगी। सेठां ने नूंवो जलम मिलगो। सेठां री इगतालिसवीं वर्ष गांठ पर राजी- खुशी नूंवा जमारा में मनाई जी अर सेठ इणरो जस आपरी बेटी झमकू ने दीनों।●

मन की बात न कहना

- श्रीमती आशारानी लखोटिया,
'साहित्य रत्न', नई दिल्ली

मन की बात किसी को न कहना
गम पीकर के हंसते रहना।
बड़ा मुश्किल है
इंसां परखना
कौन पराया है
कौन है अपना।
अपनों को सदा खुश रखना
गैरों को हंसाते जाना।
मन की बात....
गम की घूंट
खुशी से पीना
यही है आधुनिक जीना
अपने आंसू न किसी को दिखाना
जहर पीकर मुस्काते जाना।
मन की बात....
नहीं कल का भरोसा करना
आज कर लो सो ही है अपना
अपने दिल में खुशियां बनाना
मीठी बोली से अमृत बरसाना।
मन की बात.....

'एन.डी.ए. से निवेदन'

- परशुराम तोदी पायस

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो।
क्या कमी रह गई, देखों और सुधार करो।
बिना कुछ किये ही, जय-जय कार नहीं होती।
जनता का दिल जीतने वाले की हार नहीं होती।

धर्म एवं माया की तुला पर बैठे पंडे

इक्कीसवीं सदी का दौर है। युग बदल रहा है, इन्सान का खान-पान, रहन-सहन और रीति-रिवाज सब बदल रहे हैं, सदियों से चली आ रही सभ्यता व प्राचीन परम्पराएं भी अपना स्वरूप बदलकर आधुनिकता के रंग में रंग रही है। जब धर्म-प्रधान समाज में भक्त व भगवान के बीच बदलाव आ रहा है तो भला पूजा के नाम पर मिलने वाली दान, दक्षिणा तथा ज्योतिष विद्या के द्वारा जीविकोपार्जन करने वाले पण्डों के अपने यजमानों से रिश्ते कैसे न बदले?

आदर, सत्कार, श्रद्धा व विश्वास की बुनियाद पर टिके ये रिश्ते भी अब व्यावसायिक बन गये हैं। यजमान से इच्छित दान प्राप्त करने वाले पण्डे व तीर्थ-पुरोहित, पूजा और कर्मकाण्ड के नाम पर मोलभाव करने लगे हैं। दक्षिण में रामेश्वरम् से लेकर उत्तर के प्रसिद्ध बदरीनाथ मंदिर तक के पंडों ने भगवान की पूजा को एक बाजार बना दिया है जहां जितना धनवान और साधन सम्पन्न व्यक्ति होगा, उसकी उतनी ही बड़ी दक्षिणा के बदले पूजा के लिए वैसा ही प्रबन्ध किये जाते हैं। भगवान के चरणों में श्रद्धा के पुष्प चढ़ाने वाले निर्धन व्यक्ति इच्छित दान के अलावा कुछ भी नहीं दे सकता, जबकि सम्पन्न व्यक्ति पंडे को मनवांछित दक्षिणा देकर मनवांछित आशीष भी लेता है। यही कारण है कि अब भारत के अन्य धर्म-स्थलों की भांति बदरीनाथ धाम के पण्डों द्वारा भी गरीब श्रद्धालु दुत्कारे जाने लगे हैं। इसीलिए पंडों के आचरण व व्यवहार की यह छाप दम तोड़ती धार्मिक मान्यताओं के बीच श्रद्धालुओं के अन्तर्मन पर चोट करते हुए उनके दिलो-दिमाग पर ऐसा असर करती है कि आनन्ददायक यात्रा दीर्घकाल तक पीड़ादायक संस्मरण बन जाती है।

बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर जाने पर अन्तर्राष्ट्रीय बस अड्डे पर कदम रखते ही सबसे पहले दीदार 'पंडों' के एजेंटों से होता है। जिस तरह धर्म नगरी हरिद्वार में पहुंचने वाली बस के पीछे भागते रिक्शा चालक यात्रियों के परिधान के रंग देखकर 'नीले कुरते वाला मेरा', 'टोपी वाला मेरा', 'लाल पगड़ी वाला तेरा' के सम्बोधन से अपनी सवारियों की तलाश करते हैं और बस से उतने ही पण्डों के एजेंट यात्री से उसके गृहनगर का क्षेत्र जानने लगते है। बदरीनाथ क्षेत्र में रिक्शे तो नहीं चलते, अलबत्ता इक्का-दुक्का डांडी/कण्डी वाले अवश्य मिल जाते हैं। पण्डों के एजेंट भी यहां यात्रियों के ऊपर ठीक ऐसे मंडराते हैं जैसे मधुमक्खी फूलों से रस चूसने के लिए मंडराती है। कहां के रहने वाले हो? कौन लोग हो? तर्पण नहीं करवाओगे? आदि कई सवाल बार-बार सुनकर चिढ़ सी हो जाती है। मुझे भी जब बार-बार यही शब्द सुनने को मिला कि 'आप कहां से आये हैं?' तो झल्ला कर मैंने भी ऊंची आवाज में सवाल दाग दिया 'तुम्हें कहां का चाहिए?' तब प्रश्न पूछने वाला इस अप्रत्याशित उत्तर को सुनकर अवाक रह गया। वहीं फिर किसी ने मुझसे सवाल पूछने की कोशिश नहीं की। दरअसल, तीर्थयात्रा और भगवान बदरीनारायण के दर्शनों के लिए आने वाले श्रद्धालुओं द्वारा करवाये गये पूजन, चढ़ावे और दान दक्षिणा से ही पंडों की आजीविका चलती है। इसके लिए वह बस, कार अथवा टैक्सी से आने वाले हर श्रद्धालु पर इसीलिए नजर रखते हैं कि वे आगन्तुक से कुछ प्राप्त कर सकें। एक समय था, जब बदरीनाथ के पण्डे भी अन्य तीर्थ-स्थलों की तरह अपने यजमानों और श्रद्धालुओं से ऐच्छिक दान ग्रहण करते थे। तीर्थ यात्री भी इच्छा शक्ति से दान पुण्य करते थे, लेकिन दान ग्रहण करने का तरीका व स्वरूप आज पूरी तरह से बदल चुका है। प्राचीन परम्पराओं का इतना ह्रास हुआ है कि अब पूजा व दक्षिणा तक के लिए मोलभाव होने लगा है। तप्तकुण्ड में स्नान के बाद पंचपुरी (हरिद्वार) के एक तीर्थ पुरोहित ने तर्पण व पूजा का विधान बताया, तो धार्मिक आस्था से जुड़े मेरे साथ वालों ने सहमति व्यक्त कर दी और हमें एक पण्डे के पास तप्तकुण्ड के तट पर बिठा दिया। पण्डे के प्रति श्रद्धाभाव रखते हुए मैं भी उस धार्मिक कार्य में शामिल हुआ, लेकिन तर्पण करते समय पण्डे के व्यवहार को देखकर सन्न रह गया, जब उसने यह कहा कि 'पण्डे को दक्षिणा क्या दोगे?

ऐच्छिक दान देने की अभिलाषा लिए मेरे मन में उसकी यह बात चुभी तो जरूर, फिर भी मैंने संयमित होकर जवाब दिया 'दक्षिणा तो ११ रुपये भी होते है।' यह सुनते ही वह पंडा घोड़े की तरह बिदकता हुआ बोला '११ रुपये में तो यहां टीका भी नहीं लगता।' उसके यह कठोर वचन सुनकर मेरी श्रद्धा की भावना धरातल पर आ गई।

भगवान बदरीनारायण के दर्शनों के बाद जिस माणा गांव में आकर श्रद्धालु गणेश गुफा, व्यास गुफा, भीमपुल, सरस्वती का उद्गम तथा जनजाति लोगों का समृद्ध 'कल्चर' देखने आते हैं तो यहां के पुजारी/ पंडों की नजर तीर्थयात्री की जेब पर ही टिकी रहती है। सिक्कों की खनक और चांदी की चमक से पंडों के ही आचार व्यवहार में परिवर्तन नहीं आता, बल्कि बदरीनाथ से लगे भारतीय आबादी के अन्तिम गांव माणा के छोटे-छोटे नैनिहालों व इस क्षेत्र की नई पीढ़ी में जो परिवर्तन की लहर देखी, वह समाज को उत्थान की बजाए पतन की ओर ले जाती है। पहाड़ी समाज की संस्कृति का जिस तरह क्षरण और नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, उसे मैंने अपनी खुली आंखों से देखा। उस गांव के सातवीं कक्षा में पढ़ने वाला कुदलीप नामक बालक वाहन चालक और यात्रियों की मांग पर मात्र ५ रुपया कमीशन लेकर माणा गांव में बनने वाली कच्ची शराब उन्हें उपलब्ध कराता हुआ दिखा, तो प्राइमरी में पढ़ने वाले कई लड़के-लड़कियों को भी बिस्कुट टाफी खाने के लिए भिखारियों की तरह यात्रियों के आगे हाथ फैलाते हुए देखा। पांचवी में पढ़ने वाला सूरज इन बच्चों में कुछ समझदार लगा। किन्तु यात्रियों से पैसे मांगने वाली बात को बुरा बताने वाला यह बालक भी अन्य बच्चों की भीड़ में शामिल था, जिनको समझाने व रोकने वाला यहां कोई नजर नहीं आया। इससे मन बड़ा आहत हुआ। पूरी यात्रा के दौरान मैं यही सोचता रहा कि भारत के विभिन्न प्रांतों और प्रदेशों से आने वाले तीर्थयात्री व श्रद्धालु तीर्थ-पुरोहितों का व्यवहार और सड़क पर हाथ फैलाने वाले बच्चों को देखकर उत्तरांचल की कैसी तस्वीर अपने मन में लेकर जाते होंगे।

(साभार दैनिक विश्वमित्र)

व्यंग

साड़ी से बाड़ी तक

✍ डा. मनोहरलाल गोयल, जमशेदपुर

दुनिया कहां से कहां पहुंच गयी और मैं अभी तक धोती भी नहीं छोड़ पाया। अपने लिए एक जोड़ी धोती खरीदने के लिए मैं बाजार गया था। कपड़ों की कई दुकानें एक साथ थी। मैं एक दुकान में घुसा। मुझे नहीं मालूम था कि धोती बेचने वाले दुकानदार भी अब साड़ी बेचने लगे हैं। साड़ियों की बिक्री में अधिक रूचि लेते हैं। सेल्समैन ने मेरा स्वागत करते हुए कहा- आइए श्रीमान ! कहिए कैसी चीज दिखाऊं? अपर्णा, सुपर्णा, उर्वशीय मैनका? लाजवन्ती, रूपकली, माधुरी, सुप्रिया का नया स्टॉक अभी-अभी आया है। रूप और रंग एक से एक है।

दुकानदार मेरा परिचित था। मैंने कहा- ये अप्सराएं कब से बेचने लगे? पहले तो सिर्फ कपड़े ही बेचा करते थे।

वह बोला- ये देवलोक की अप्सराएं नहीं, नारी को अप्सरा बना दें, ऐसी साड़ियों के नाम है। एक से एक डिजाइन, नए-नए आकर्षक रंग। इन साड़ियों को पहन कर कोई भी नारी देवलोक की अप्सरा से कम नहीं लगती। आप जब ये साड़ियां लेकर घर जाएंगे तो आपकी नाराज पत्नी अपना गुस्सा थूक देगी। कोप भवन से बाहर आकर अपना सारा प्यार आप पर उड़ेल देगी। अभी स्कीम भी चल रही है। एक के बदले दो साड़ियां। एक का दाम दें, दूसरी मुफ्त ले जाएं।

दुकानदार को बिना कुछ जवाब दिए मैं दुकान से बाहर आ गया। समझ गया कि यहां धोती नहीं मिलेगी। पूरी की पूरी दुकान साड़ियों से भरी थी और मुझे चाहिए थी- धोती।

मैंने दूसरी दुकान में प्रवेश किया- वैसा ही स्वागत। दुकानदार ने कहा- आप सही दुकान में आए हैं। एक साड़ी खरीदें।

मैंने आश्चर्य से पूछा- गाड़ी यानी कार ?

जवाब मिला, आपने ठीक समझा है। कार, बिल्कुल नयी लेटेस्ट मॉडल की- पूरे तीन लाख की।

मेरे उत्सुकता बढ़ी- पूछा साड़ी कितने की है?

दुकानदार ने बताया- पांच सौ से लेकर पांच हजार तक की। कोई भी खरीदे, स्कीम सभी पर लागू हैं।

मैंने सोचा- पांच हजार में भी नई कार बुरी नहीं है। साड़ी पहने वाली न सही। दुकानदार को कहा- पांच हजार वाली एक साड़ी और एक गाड़ी निकलवाइए।

दुकानदार हंसा- गाड़ी यानी कार तो तब मिलेगी, जब आपके नाम पर लॉटरी खुलेगी। प्रत्येक साड़ी की खरीदी पर एक उपहार कूपन मुफ्त दिया जा रहा है। इन कूपनों का 'ड्रा' होगा। भाग्यवान को कार मिलेगी। वह भाग्यवान आप हो सकते हैं। और भी सैकड़ों पुरस्कार है।

अपना भाग्य ही साथ देता, तो क्या अपने पास भी साड़ी पहनेवाली एक अदद लाड़ी (पत्नी) नहीं होती ? मैं आज तक कुंआरा नहीं बैठा होता। वहां से भी खाली हाथ लौटना पड़ा। मुझे साड़ी की नहीं, धोती की आवश्यकता थी। पुन: तीसरी दुकान में घुसा।

मुझे देखते ही दुकानदार का चेहरा गुलाब के फूल की तरह खिल उठा। नमस्ते कहकर स्वागत किया और बोला- आइए, साड़ी खरीदिए और ढेरों इनाम पाइए। अविश्वसनीय उपहार दिए जा रहे हैं। एक साड़ी के साथ एक गाड़ी और एक बाड़ी (घर) मुफ्त। बंगाल में घर को बाड़ी ही कहते हैं। यह बात तो पहले से ही स्पष्ट हो चुकी थी कि यह नगद का नहीं, उधार का सौदा है। खरीदी के साथ तुरंत और कुछ नहीं मिलने वाला है। जो कुछ मिलेगा वह उपहार कूपन के 'ड्रा' के बाद भाग्यवानों को ही मिलेगा। लेकिन घर में लाड़ी (पत्नी) के न होते हुए भी, मैं साड़ी क्या खरीदूं और गाड़ी तथा बाड़ी के लिए भगवान के भरोसे क्यों रहूं? अगर भाग्य से गाड़ी या बाड़ी मिल भी गयी, तो बिना लाड़ी के सब बेकार है। कहा भी गया है कि बिना घर वाली के घर, घर नहीं होता। और...

मैं भूल गया कि मुझे धोती खरीदनी है और धोती की खरीद के लिए ही मैं बाजार आया था। तब मैं एक अदद पत्नी के सपनों में भटक गया था। मैंने दुकानदार से कहा- अगर आप लाड़ी दिलाने का आश्वासन दें, तो मैं दस साड़ी खरीद सकता हूं। अपनी उपहार कूपनवाली स्कीम में आप एक गाड़ी और एक बाड़ी के साथ-साथ एक लाड़ी देने की बात और जोड़ दें। लाड़ी मुझे अभी तक नहीं मिली है। शायद मेरे भाग्य में यही लिखा हो कि वह गाड़ी और बाड़ी के साथ ही आनेवाली हो। लाड़ी मिलने की संभावना हो तो साड़ी भी खरीदी जा सकती है। अन्यथा बिना लाड़ी (पत्नी) के साड़ी खरीद कर मैं क्या करुंगा? साड़ी किसे पहनाऊंगा? स्वयंम् तो धोती की तरह साड़ी पहन नहीं सकता।●

गीत नहीं गावूं हूं

कवि : श्री अटल बिहारी वाजपेयी
रूपान्तरकार : श्री रामनिवास लखोटिया

बिण नकाब मूंडा है,
दाग घणा गहरा है,
टूटतो जादू, आज सांच सूं डरूं हूं।
गीत नहीं गाऊं हूं।
लागी थोड़ी इसी नजर,
बिखर्‌योड़ो कांच-सो शहर,
आपां रां मेळा मांय मीत नहीं पांऊ हूं।
गीत नहीं गाऊं हूं।
पीठ मांय छुरा जिशो चांद,
राहु गयो लकीर फांद,
आजादी री छिणां मांय बार-बार बंध जाऊं हूं।
गीत नहीं गाऊं हूं।

(साभार : म्हारी इक्कावन कवितावां)

गजल

तेज धार तलवारां वाळी, जीवण री पगडांडी आ।
आंसू री जळधारां वाळी, जीवण री पगडांडी आ।।
आसा रै आंगणिये सुख रा बीज राळ दे हाथां सूं,
आगम में फुळवारां वाळी, जीवन री पगडांडी आ।।
राम सरीखो जीवण जिणरो, वनखंड में ई राजा है,
हड़मत री हूंकारां वाळी, जीवण री पगडांडी आ।।
चार दिनां रो जीवण अर, आ जिनगाणी जोधारां री,
नभ रा नवलख तारां वाळी, जीवन री पगडांडी आ।।
रोज घुड़ै है सपन-धरूंदा, रोज मरम्मत होवै है,
ईटां, भाटां, गारां वाळी, जीवण री पगडांडी आ।
सूर, सती, संतां रै सारू, जुग जुग जोत जगै भाया,
ईसर-रै अवतारां वाळी, जीवण री पगडांडी आ।
'अचळेसर आनन्द' आपने, परमारथ-पथ पर मिळसी,
जस कीरत जैकारां वाळी, जीवण री पगडांडी आ।।

❑ अचलेश्वर आनन्द
जालोर

जय-जय भारत देश महान

जय-जय भारत देश महान।
उत्तर में उत्तुंग हिमालय, खड़ा विश्व में सीना तान।
दक्षिण में सागर की धरा, गाती भारत का यश गान।।
शस्य श्यामला भारत धरती, अद्‌भुत रत्नों की है खान।
गंगा-यमुना कल-कल स्वर में, गाती मानवता के गान।।
अर्पित इस पर तन-मन-प्राण।
जय-जय भारत देश महान।।
वेद और गीता रामायण, सुन्दर, शाश्वत पावन वाणी।
चांद लुटाता अमृत धारा, पक्षी गाते कीर्ति कहानी।।
राम-कृष्ण, गौतम गांधी ने, हंस-हंस इस पर जीवन वारा।
बलिवीरों ने शीश चढ़ाकर, आजादी को सदा दुलारा।।
रखेंगे हम इसकी आन।
जय-जय भारत देश महान।।
मूर्ति मनोहर राष्ट्रदेव की, इसका वैभव अमर निराला।
कालिदास, तुलसी, रवीन्द्र ने, पहनायी इसको जयमाला।।
विविध रंग के फूल यहां पर, मानवता की गंध लुटाते।
एक हमेशा देश रहेगा, सबको युग संदेश सुनाते।।
विहंसे शांति, सौख्य, धन-धान।
जय-जय भारत देश महान।

❑ युगल किशोर चौधरी, चनपटिया (बिहार)

'कालाहांडी के गांधी' नाम से विख्यात

❑ श्री पद्म सैन जैन
(भाई साहब)

जलती रहती है बाती
एक कतरा भी जब तलक दीपक में है बाकी।
अंधकार को रहता मिटाता जलती रहती बाती।।
बनकर के ज्योत ज्योति ज्ञान प्रकाश फैलाता चला जा।
तेरापंथ के राही समता भाव समाता चला जा।।
केशव माधव की आ रही आवाज,
जागो और जगाओ भाई साहब।
अनुशासन संगठन एकता का बनकर चिराग,
नई रोशनी फैलाता चला जा।।
भाई साहब बनकर संगठन का शाज,
सोये समाज को जगाता चला जा।
सत्य अहिंसा अणुव्रत की जलाकर मशाल,
ज्ञान उजियारा बढ़ाता चला जा।।

उपनाम

हम धरती पर भार बने फिरते हैं हरदम,
स्वाभिमान का राह पर मुझको
कौन कहेगा।
जिसको भी देखो वह आम रहता,
आशाओं के गीत जगत में कौन धरेगा।
धाराएं हरदम बदलेगी इस भूतल की,
भींगी पलकों पर, सावन को कौन धरेगा।
साक्ष्य दिखाने वालों ने ही साहस बनाया,
हर शहचर है, कौन हमारा दर्द हरेगा।
गहमा-गहमी होती रहती है जीवन में,
गहन अंधेरे में, आ करके कौन मिलेगा।
हम तो कामुक मन को, बाँध नहीं पाये हैं,
प्रेम मिलन की बातें, हंसकर कौन करेगा।
दावानल सा जलता रहता है दिल मेरा,
पर आँगन में दीप जलाकर कौन धरेगा।
जिसको देखो नहीं जंग में लगा हुआ है,
नत मस्तक है आज जमाना,
जीगर मिलेगा।
आँखें भर-भर देख रहा है हमें जमाना,
सुनी आँखों में काजल अब, कौन धरेगा।
बचपन की हर यादें ताजा हो जाती हैं
'तुलस्यान' उपनाम हमारा कौन धरेगा।

❑ जगदीश प्रसाद तुलस्यान, मुजफ्फरपुर

मां बेटी रो हाल देखर इण न गल लगा ली

✍ सावित्री चौधरी

दीपा नितका'ई अपणै घणी सूं दूरी बणायां राखती। जद बा, रोजीना रा घरेलू कामां सूं घणी थक जाती तो पीरै चली जाती। मां कन्नै जायर, उणरो तन-मन रो थकेलो मिट जावतो। दुख संताप बींरै दिल-दिमाग सूं अलौप होय जावता।

अठै तांई कै उण नै मां आगै आपरै दुखदायी जमारै रा रोजीनैरा रौणां बी याद नीं रैवंता। सुखी भविष्य री आसा में बा आपरौ आधै जीवण होम दियौ हो।

अेक कमेरी बहू अर लायक जोड़ायत बणनै वास्तै, बा केई हुनर सीख्या हा। खूब पढ़ी। सिलाई-कढाई, बातचीत रौ सलीकौ। सजणै-संवरणै री कला अर पकवान-मिठाई आद बणावणी।

मां, बींनै बीं दिन री याद करावती रैवती, जद बा पराई होय जासी। मायतां रौ बीं माथै कोई दावौ नीं रैसी, धीरै धरै बखत बीतण लाग्यौ। पढ़ाई पूरी कर घरै बैठया बीं नै एक साल बीतग्यौ। फेर दूजौ अर तीजौ बी सरकण लाग्यो हो।

पैली साल तो बा, चित्रकला सीखी ही। दूजे साल अर तीजै साल बणाव-सिणगार, नांच-गाणां अर सैर-सपाटां में बितायौ हो। पण फेर बा तंग आयर सगळा सूं मिलणौ जुलणौ ई छोड़ दियौ हो बीं नै बणाव-सिंणगार सूं चिड होयगी ही, सगळा रंग-चाव अर सौक मुरझाग्या हा।

सुरू-सुरू में जिका लड़का बीं नै देखरै आया हा, बै बीं री पसंद रा नीं हा। कोई कम पढयौडो हो, कोई ठस दिमाग हाळो, तो कोई धन-दायजौ रा लोभी हो।

फेर एक दिन बा आपरी नुमाइस करणै वास्तै साफ नाटगी, तो मां ठिणकती कैयौ हो, 'कांई करां बेटी ! दुनियादारी रौ धारौ है। बै लोग देखण खातर तो आवैला'ई ना।'

'नई नई' कँवती दीपा रो पड़ी ही मां तमक'र पूछयौ हो। कांई उमरभर कंवारी रैसी! थन्नै सरम नी आवैला?

बा कड़क'र बोली ही, 'म्हैं तो करूंगी नौकरी आखर कद तांई थारै दुकड़ा पर पलती रैवूंली।'

नौकरी री बात माथै भाई भाभी अर पिताजी खूब हंगामौ मचायौ हो। मां खूब रोई-झींकी हो। बेटी नीं परणांई-कमाई खाणै वास्तै।' पण, दीपा और बेइजती सहन वास्तै तियार कौणी होई। बीं रैहियै मैं पैली'ई केई घाव रिसरैया हा। बोली, 'आखर क्यूं, थे लोग म्हारै मन में हीन-भावना पैदा करया करो हो। म्हैं करूंगी नौकरी दुनिया नै बकणै देऔ, म्हैं परवा नीहं करूं कोई रीं ईज-'

जबरी अर पढ़ाई में तेज दीपा नै, एक दफ्तर में जल्दी'ई नौकरी मिलगी ही। सुमेर बी कलरक लागरयौ हौ बठै'ई। खुलै विचारां रो उमंग उछाव सूं भरपूर जवाण हो। बै दोनूं, कदै-कदै हियै जियै सूं बाता करता, एक-दूजै नै चावण लाग्या हा। एक दिन सुमेर अेकांत देख अपणेस सूं कैयो हो, 'दीपाजी ! थे चावौ, तो आपां जीवण-साथी बण सकां हा।'

सुण'र दीपा पैली तो हैराण रैयगी ही। कै सच्ची बीं नै सुमेर इती चावै है, इती पसंद करै है? फेर बी आप-बीती सुणा दी ही कै बिना धन दायजै रै बीनै किणी पसंद नीं करी ही। कोई बी बींरै रूप अर गुणां पै नहीं रीझयौ हो।'

'हीरै री कदर तो फगत जौहरी'ई जाणै है दीपाजी। म्हनै फगत थारी चावता है।' सुमेर घणै हेत सू कैयो हौ। फेर बै दोनूं, आर्य समाज में जायर ब्यांवकर लियौ हौ। पण, सुमेर रा घरआळा नाराज हा। बिना दानदायजै, बिना गाजै-बाजै, बिना बरातरै कैड़ों ब्यांव? किस्सो ब्यांव?

बा फडकतैम काळजै सासरै गई ही। बीं रौ हियौ केई संकावां सूं भर्‌यौ, दीयै की लौ जियां कांपरैयौ हो। सासू नेगचार नहीं कर्‌या। बड़बड़ करणै लागी ही, 'बापड़े सुमेर नैफांस लियौ पेरमजाल में। धिंगाणै'ई आ कंगलै घर री-रीतै हाथ'ई माथै आय पड़ी।

आखर क्यूं, एक नारी माथै जुलम नारी ढावै? कितै सरम अर दुख री बात है कै, गुण-सम्पन्न अर कमाऊ बहू रौ आदर-मान करणै री बजाय, दुतकारै है। बैरण समझ'र अन्याय करै है। धन-दायजौ नी ल्यावै तो आ बात।

पण, दीपा सांत रैई। मन में ठाठ ली ही एक सुपातर बीणनी बणनै री दिनूगै बेगी उठ'र घर का केई काम सलटायर, बा भागी सी दफ्तर जारी। पाछी आयर फेर घर करै धंधै में जुतजाती। फेर बी सासू गाळी बकती रैवती।

दुखी होयर एकदिन धणी आगै रोई, तो बीं रूप सामी आयग्यो, ''गाळियां सूं गूमड़ा नीं होवै मा नै चुप राखणी है, तो कीं नी की धन-दायजौ ल्यार दे। फेर तो चूं बी नीं करैगी।

पण दीपा साफ-नाटगी, मायतां रैजवाती जरूर पण कीं बी नीं लेयर आंवती। जिण सूं घर में नित रो महाभारत छिड़या रैवंता। दीपा, जी-जाण सूं घर, दफ्तर अर बड़ेरा री सेवा री जिम्मेवारी निभाती रैई। गम खायर, चुपचाप आसूं पीती रैई, मन ई मन में आली लकड़ी ज्यूं सिळती रैई ही। वै दोन्यू जणा दफ्तर में तरक्की करता गया। जद सुमरे दफ्तर रौ बडौ साब बणग्यौ, तो दीपा की नौकरी धिंगाणै छुड़ा दी ही, 'अब थू आच्छी नी लागै नौकरी करती। मां बी अैतराज करै है।'

सुमरे, बड़ौ साब कै बणयौ जिंया पंख उग्याया हा बींरै। घर में टिकतौ'ई कोनी। दिन भर रै कामां सूं, थकी-हारी दीपा, आधी रात तांई भूखी बैठी उंघती रैवती। सासू रौ हुकम हौ।

धणी आधी रात नै आवतां'ई लड़ण

लागतौ, 'आखर क्यूं बैठी रैवै है इती रात तांई। थारै जिसी और बी घरेलू लुगाइयां है। कांई बै, अपणौ धणी नै इंयां सतावै है?'

'हां-हां, सतावै है, देर सूं आंउ रात नै, तो मूंढौ क्यूं सूजालै है? क्यू दूर-दूर रैवै है म्हारै सूं। सूमड़ौ सुभाव -होय रैया है जदी तो।'

अैडी बाता सुण-सुण'र दीपा धाप'र दुखी हुयगी। घिंगणौ नौकरी छुड़ा'र घणखरा मरद, लुगाई नै फेर बात बात माथै सतावै है। पण कट्यौ पंछी समझ'र जरा-जरा सी बातां पै बींदै है बीनै।

घर रा काम तो पैलां सूं बी जादा करै है पण, नोट कोनी कमावै। जद तो घर रा कमाउ काम बी, मरदां नै आलतू फालतू लागै है। दीपा री दुखदाई जिंदगाणी नै पैलपौत जलमी बैटी ईज सुखी नीं कर सकी। घणी अर परिवार आळा, और बी उण जाण खाणै लाग्या हो। पैलपोत बेटी क्यूं जलमी?

पण, तौड़ै बखत वास्तै दीपा, बेटी में मगन होयगी ही। जद बेटी सकूल जाणै लागी, बा फेर होगी अकेली। फेर आंसू झरर लाग्या हा।

हर घड़ी रै मन-संताप कलसे अर दुखां सूं घबरा'र दीपा एक दिन मरणै की ठाण ली। उण दिन बा, राह तकै ही बेटी रै स्कूल सूं आवणै री। आज खूब लाड़-कोड करसी आखरी दफै।

जद बेटी, स्कूल सूं आयगी अर मां-मां करती उण रै कमरै में पूंगी, तो मां नै रोती देख, बींरा आसूं पूंछती बेटी रोय पड़ी, 'मां तूं क्यूं रोवै है? कै दूखै है? माथौ दूखै है, तो दाव देअूं? फूल सी बेटी री ममता, आसूं अर चिंता देख, चाणचक दीपा रै विचारा पसवाडो फोरयो।

बा सोचण लागी 'आखर क्यूं मरणौ चावूं हू म्है? धणी नै म्हारी चावना कोनी तो कांई हुयग्या? म्हारी बेटी ने तो मांरी चावना है, जरूरत है गरज है। जणी, जीणै बणी-लोग ठीक'ई कैवै है। बेटी तो म्है जलमी है। म्हारै बिना, इण नै पाल-पोस खूब पढा'र एक गुण-सम्पन्न नारी कुण बणासी?

दीपा नै अपणै आप माथै भौत'ई सरम आई कै, नवै जामनै री शिक्षित अर कमाउ नारी होयर ईज, क्यूं हिम्मत हारगी बा. रोजीना केई बहूंवा आत्मघात करै है पण, बारै मरणौ सूं कुणसी दुयिना उजड़ै है? दोय चार दिन सच्चै झूठै मन सूं, रोय धो'र सगळा पाछा मगण होय जावै है। अपणै अपणै कामकाज अर राग-रंग में हां, बिना बे मां-बाप रा टाबर बापड़ा जरूर रौवत फिरै है अर जिंदगाणी बरबाद होज्या है बांरी।

दस साल होयग्या, धणी अर सासरलां रा जुलम सैता, दुख भुगतता। अब और नीं सैवैगी। बीं री सैण-सगती अर नरमाई खतम होयगी। क्यूं कै सगळा सूं नरम रबड़ बी घणौ खींच्या सूं टूट जाया करै है। बा तो मिनख है। पढ़ी गुणी है । आधौ जीवण है सामीं। बेटी वास्तै इण नै बचाणौ ईज पड़सी। बी में दमखम है मान सम्मान सूं जीणै रो। फेर क्यूं वा धन-दायजै में फंसी रै वै। धणी री गाळां घी री नाळा समझणौ रो जुग बीतग्यो। अबै तो जमाणौ है 'राख पत, रखा पत'

इयां सोचा विचारी र दीपा घणी नै आपरौ फैसलों सुणा दियौ खड़काय र। फेर बेटी रौ हाथ पकड़'र चाल पड़ी। बीं रौ पारौ चढ़यो देख, धणी अर घरआळा री जीभ ताळवै रै जाय चिपगी। जदी तो किणी चूं ईज नी करी।

मां कन्ने पूगी, तो दीपा रौ हाल-बेहाल देख'र बा समझगी। की इज नी पूछयै बेटी सूं। बस बीनै गळै लगाली-हिमळास देवतां नै, बींरै सिर अर पीठ पै मोह-ममता भर्‌यौ हाथ फेरयौ तो दीपा रै मन-प्राण में हिम्मत अर हौसलौ जाणै अगथाग बधग्यो।●

संकल्प - किसी समय अमेरिका के राष्ट्रपति 'लिंकन'

लिंकन को एक बार पता चला कि नदी के दूसरी ओर ओगमोन नामक गांव में एक अवकाशप्राप्त न्यायाधीश रहते हैं, जिनके पास कानून की पुस्तकों का अच्छा संग्रह है। सो वह कड़ाके की सर्दी के दिनों में उस बर्फानी नदी में नाव में बैठ गया। नाव वह स्वयं खे रहा था। आधी नदी उसने पार की होगी कि नाव बड़े बर्फ के पत्थर से टकराकर चूर-चूर हो गयी। फिर भी साहस का धन नौजवान लिंकन निराश नहीं हुआ। उसने बड़ी मुश्किल से तैरकर नदी पार की और जा पहुंचा रिटायर्ड जज के घर।

इत्तफाक से उस समय जज का घरेलू नौकर भी नहीं था, सो लिंकन को जज के छोटे-मोटे घरेलू काम भी करने पड़ते। वह जंगल से लकड़ियां बटोरकर लाता और घर में पानी भी भरता।

पारिश्रमिक के नाम पर लिंकन ने सिर्फ एक ही इच्छा जाहिर की कि वह उक्त जज की सारी किताबें पढ़ने भर को पा सके। जज ने खुशी-खुशी उसे अपनी पुस्तकों को पढ़ने का मौका दिया। संकल्प का धनी यही लिंकन आगे चलकर अमरीका के राष्ट्रीय जीवन में छाया रहा और देश के सर्वोच्च आसन पर जा विराजा, राष्ट्रपति के रूप में। सच है, संकल्प दृढ़ हो, तो आदमी क्या नहीं कर सकता, सब कुछ कर सकता है।

कुली

***एक** दिन एक नवयुवक कलकत्ता स्टेशन पर गाड़ी से उतरा और कुली-कुली पुकारने लगा। हालांकि उसके पास इतना सामान था कि वह आसानी से उसे ढो सकता था।*

एक सीधे-सादे सज्जन उसके पास आये और बोले, ''कहां चलना है?'' वह युवक किसी स्कूल में पढ़ने (ट्रेनिंग के लिए) आया था। सो उसने स्कूल का नाम बताया। वह सज्जन उसका सामान उठाकर चलने लगे। स्कूल पास ही में था, जल्दी ही पहुंच गए। जब वह सामान रखकर जाने लगे तो उसने उन्हें कुछ इनाम देना चाहा।

सामान ढोने वाले ने कहा, ''मुझे कोई इनाम नहीं चाहिए। अपना काम स्वयं करने की कोशिश करें, यही मेरा इनाम है।'' इतना कहकर वह व्यक्ति चला गया।

अगले रोज जब वह विद्यार्थी कॉलेज पहुंचा तो प्रार्थना स्थल पर उसने देखा कि वही व्यक्ति प्राचार्य के आसन पर विराजमान है। उसे काटो तो खून नहीं।

*प्रार्थना के बाद जब विद्यार्थी अपनी-अपनी कक्षाओं में चले गये तो उसने प्राचार्य के चरणों में अपना सिर रखकर माफी मांगी। प्राचार्य **ईश्वर चन्द्र विद्यासागर** ने उसे क्षमा कर दिया।*

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

युग पथ चरण

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा ५८वां स्वाधीनता दिवस समारोह सम्मेलन सभापति श्री मोहनलाल तुलस्यान की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से मारवाड़ी सम्मेलन भवन में मनाया गया। **राष्ट्रीय ध्वजारोहण राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान के कर-कमलों द्वारा किया गया। राष्ट्रीय गान के सामूहिक गायन के उपरान्त माननीय अध्यक्ष ने उपस्थित सदस्य वृन्दों से सम्मेलन की सांगठनिक शक्ति को विकसित करने एवं मारवाड़ी सम्मेलन भवन को वर्षों का सपना पूरा होने का केन्द्र बिन्दु बताते हुए इसे बहुपयोगी बनाने की सम्मेलन की जो योजना है उसमें तन-मन-धन से सहयोग देने की अपील की। सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने उपस्थित सदस्य वृन्दों को धन्यवाद दिया। इस अवसर पर उपस्थित थे सर्वश्री रामअवतार पोद्दार (संयुक्त महामंत्री), लोकनाथ डोकानिया, आत्माराम तोदी, रामगोपाल बागला, आदि।**

कलकत्ता मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा स्वाधीनता दिवस बड़े उत्साह एवं हर्षोल्लास के साथ सम्मेलन कार्यालय के समक्ष मनाया गया। ध्वजारोहण अखिल भारतीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी तुलस्यान के कर कमलों द्वारा हुआ। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री तुलस्यानजी ने देशवासियों को आज के पावन दिवस पर समाज के प्रति प्रतिबद्धता को अक्षुण रखते हुए राष्ट्र को वैभव के शिखर पर ले जाने का आग्रह किया। उन्होंने देश की आजादी के लिए समर्पित योद्धाओं को नमन करते हुए उन्हें याद करने का आह्वाहन किया। अखिल भारतीय महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने राष्ट्र के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए समाज को अधिक सुसंगठित एवं मजबूत करने पर जोर दिया। प. बंग मा. स. अध्यक्ष श्री लोकनाथ डोकानिया एवं कलकत्ता मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश पोद्दार ने भी अपने विचार प्रगट किये। इस अवसर पर गरीब तबके के बच्चों में फल, दूध एवं मिठाई का वितरण भी किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री राजाराम शर्मा, श्री सांवरमल अग्रवाल, श्री आत्माराम तोदी, श्री वासुदेव खेतान आदि का सक्रिय योगदान रहा। इस अवसर पर बड़ा बाजार थाना के अतिरिक्त प्रभारी भी उपस्थित होकर कार्यक्रम की गरिमा को बढ़ाये।

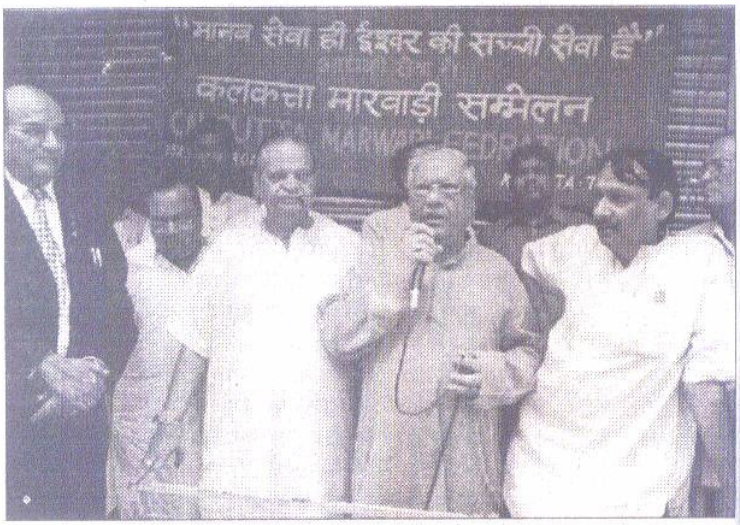

'राजस्थान फाउण्डेशन का सम्मेलन के पदाधिकारियों से विचार विमर्श

राजस्थान फाउण्डेशन के कार्यकारी निदेशक मनोज कुमार शर्मा के कलकत्ता आगमन पर सम्मेलन के पदाधिकारियों से **'राजस्थानी ऐतिहासिक स्थलों की देखभाल'** निजी क्षेत्रों, व्यक्तियों एवं संस्थाओं द्वारा किये जाने के राजस्थान सरकार के निर्णय के विषय में विस्तृत बातचीत हुई। श्री शर्मा ने कहा कि फाउण्डेशन का मुख्य उद्देश्य है प्रवासी राजस्थानियों को राजस्थान से दिल से जोड़ना। इसके पूर्व मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने सम्मेलन के उद्देश्यों की जानकारी देते हुए फाउण्डेशन के साथ मिलकर कार्य करने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि सम्मेलन के आगामी स्थापना दिवस समारोह पर २५ दिसम्बर २००४ को राजस्थान पर्यटन विभाग के कलाकारों के दल को आमंत्रित किया जायेगा। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने फाउण्डेशन के कार्यक्रम की सराहना करते हुए उनकी वेबसाइट में कुछ आवश्यक सुधार के लिए सुझाव दिए।

राजस्थान सरकार द्वारा कलकत्ता में आयोजित पर्यटन व व्यापार मेला में आए हुए राजस्थान फाउंडेशन के पदाधिकारीगणों के साथ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन से विचार-विमर्श हेतु एक बैठक आयोजित की गयी। चित्र में परिलक्षित हैं- दाएं से बैठे हुए- सम्मेलन के अध्यक्ष सर्वश्री मोहनलाल तुलस्यान, महामंत्री भानीराम सुरेका, संयुक्त महामंत्री राम औतार पोद्दार, फाउण्डेशन के मुख्य निदेशक मनोज कुमार शर्मा, रतनलाल शाह, खड़े हैं दाएं से-सर्वश्री ओमप्रकाश अग्रवाल, सूर्यकरण सारस्वा, उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा, आत्मा राम सोंथलिया, गौरी शंकर कांया, लोकनाथ डोकानिया, राम गोपाल बागला, गोपाल अग्रवाल, एवं फाउंडेशन के एक्जिक्यूटिव द्वय श्री मनोज कुमार शर्मा एवं सुश्री-जुही सालूजा।

श्री रतन शाह ने फाउण्डेशन को राजस्थानी भाषा की मान्यता के लिए ही कार्य करने का सुझाव दिया।

सम्मेलन ने फाउण्डेशन से अनुरोध किया कि वे पश्चिम बंगाल राज्य सरकार से एक जमीन का प्लाट का आबंटन कराकर राजस्थान भवन का कोलकाता में निर्माण करें। सम्मेलन ने इस निर्माण कार्य में पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया।

सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने कार्यक्रम का संचालन किया एवं संयुक्त महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने सम्मेलन साहित्य भेंट की।

अखिल भारतीय समिति की बैठक २२ अगस्त २००४ राउरकेला में

समिति की बैठक प्रारंभ होते ही उत्कल प्रान्तीय अध्यक्ष श्री विश्वनाथ मारोठिया द्वारा आगत सदस्यों एवं अतिथियों का स्वागत किया गया। आपने कहा कि गौरव की बात है कि ६७ वर्ष के सम्मेलन के इतिहास में उत्कल प्रदेश में अ.भा. समिति की पहली बैठक हुई। इसके लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान एवं अन्य पदाधिकारियों को धन्यवाद, विशेष रूप से राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा केप्रति जिसने अपने महामंत्रित्व काल में ही आश्वासन दिया था कि आगामी बैठक उत्कल प्रदेश में करने का प्रयास किया जायेगा।

अध्यक्ष की अनुमति से महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने कार्यवाही आरंभ की एवं सर्वप्रथम गत बैठक की कार्यवाही महामंत्री ने प्रस्तुत की जिसे राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री नन्दलाल रूंगटा के प्रस्ताव पर सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया।

महामंत्री श्री सुरेका ने रपट प्रस्तुत की जिसे करतल ध्वनि के साथ स्वीकार किया गया। प्रादेशिक सम्मेलनों की सांगठनिक स्थिति पर रिपोर्ट वितरित की गयी।

महामंत्री श्री सुरेका के अनुरोध पर उपस्थित प्रादेशिक पदाधिकारियों ने अपने प्रदेशों की गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की। उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विश्वनाथ मारोठिया ने सर्वप्रथम उत्कल प्रदेश के कार्यक्रमों के विषय में जानकारी देते हुए कहा कि प्रांत बहुत कुछ गतिविधियां तो नहीं कर पाया लेकिन हमने सभी राष्ट्रीय कार्यक्रमों में हिस्सा लेने का प्रयास किया है।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष डा. रमेश कुमार केजड़ीवाल ने पदाधिकारियों के विभिन्न दौरा के बारे में जानकारी दी एवं खुसखबरी दी कि प्रान्तीय प्रकाशन 'सम्मेलन संवाद' का पुनः नियमित प्रकाशन किया जा रहा है। डा. केजरीवाल ने भाग्यशाली दान पत्र योजना द्वारा लगभग ३,२५००० रु. की

बचत की जानकारी दी। प्रान्त में बड़ी संख्या में नये सदस्य बनाये गये हैं।

प. बंगाल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री लोकनाथ डोकानिया एवं महामंत्री श्री गोपाल अग्रवाल ने प. बंगाल सम्मेलन की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए सदस्यता अभियान एवं डायरेक्ट्री प्रकाशन की बात की। बुलेटिन का भी नियमित प्रकाशन किया जा रहा है।

झारखंड के अध्यक्ष श्री बासुदेव बुधिया ने कहा कि उनके साथ ६-७ प्रतिनिधि राँची से पधारे हैं। हालांकि प्रान्तीय सम्मेलन पिछले वर्षों में कुछ विशेष कार्य नहीं कर पाया है, लेकिन संगठन को मजबूत करने का प्रयास किया गया है एवं नये सदस्यों को जोड़ा गया है। नये प्रादेशिक कार्यालय का उद्घाटन किया गया। उन्होंने बिहार एवं झारखंड के आजीवन सदस्य के शुल्क के विभाजन के विषय में राष्ट्रीय सम्मेलन से ध्यान देने का अनुरोध किया।

उपाध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने उक्त विचारार्थ विषय पर बोलते हुए कहा कि मैं सदैव इस बात को कहता आया हूं कि सम्मेलन प्रांतों एवं जिलों में बसता है। अगर प्रांत संगठित एवं सक्रिय हैं तो राष्ट्रीय सम्मेलन सक्रिय हैं। उन्होंने झारखंड एवं बिहार के आजीवन सदस्य कोष के विभाजन के प्रश्न पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री नन्दलाल रूंगटा को भार देने का प्रस्ताव दिया। श्री रूंगटा ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए सुझाव दिया कि इस संबंध में राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री को यह भार दिया जाये। अन्ततोगतत्वा श्री प्रेम कटारुका के प्रस्ताव पर यह तय किया गया कि राष्ट्रीय सम्मेलन इसके लिए एक उप-समिति गठित करे।

उपाध्यक्ष श्री नन्दलाल रूंगटा ने बैंक में नये पदाधिकारियों की सही संबंधी प्रस्तुत किया जिसे अन्य उपाध्यक्ष श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल ने समर्थित किया। इस संदर्भ में सभी प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किये गये।

उपाध्यक्ष श्री रूंगटा के प्रस्ताव पर एजेंडा ६(क) एवं (ख) के अन्तर्गत राष्ट्रीय अध्यक्ष को अधिकार दिया गया। साथ ही एजेंटा ८ एवं ९ के अन्तर्गत कार्यकारिणी एवं उपसमितियों के गठन का अधिकार उपाध्यक्ष श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल के प्रस्ताव पर अध्यक्ष श्री तुलस्यान को दिया गया। उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा को बेलारूस के कन्सुल बनने पर माल्यदान द्वारा स्वागत किया गया। इसके उपरान्त देश की वर्तमान राजनैतिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति पर सम्मेलन के भावी कार्यक्रमों पर एक लम्बी बातचीत हुई जिसमें कई प्रतिनिधियों ने भाग लिया जिनमें प्रमुख थे- सर्वश्री १. घनश्याम शर्मा, २. रतन शाह, ३. श्याम सोमानी, ४. डा. आर.एस. अग्रवाल, ५. संतोष पारिख, राउरकेला, ६. सावरमल अग्रवाल, ७. विश्वम्भर नेवर, ८. सीताराम शर्मा, ९. महावीर प्रसाद अग्रवाल- बगहा (चम्पारण), १०. रामगोपाल बागला- कोलकाता, ११. गोपाल अग्रवाल- कोलकाता (१२. सुभाष चन्द्र सितानी- उत्कल, १३. मौजीराम जैन- उत्कल, १४. बासुदेव बुधिया- रांची, १५. किशनलाल सुल्तानिया- झारखंड, १६. गोपी धुलालिया- कोलकाता, १७. गौरीशंकर अग्रवाल- बलांगीर, १८. रामनिवास चोटिया- कोलकाता, १९. श्रीराम बगड़िया- राउरकेला, २०. गोविन्द प्रसाद शर्मा- कोलकाता, २१. आत्माराम तोदी- कोलकाता, २२. प्रेम कटारूका- रांची, २३. राजकुमार केडिया- उपाध्यक्ष- झारखंड, २४. दिनेश अग्रवाल- सम्बलपुर।

अपने समापन भाषण में अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने कहा कि मेरी ताकत आप सभी है एवं आपके सहयोग से ही मैं सम्मेलन के उद्देश्यों की ओर अग्रसर हो सकता हूं। मारवाड़ी सम्मेलन के संगठन को हमें मिलकर मजबूत करना है, इसमें प्रान्तीय एवं शाखा सम्मेलनों की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। महामंत्री श्री सुरेका ने बैठक का संचालन किया। श्री सुरेका ने कहा कि सम्मेलन ने पिछले दिनों कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम हाथों में लिया है।

मंच पर राष्ट्रीय एवं प्रांतीय सम्मेलन के पदाधिकारीगण उपस्थित थे जिनमें शामिल थे- अध्यक्ष श्री तुलस्यान, उपाध्यक्ष- सीताराम शर्मा, नन्दलाल रूंगटा, जगदीश प्रसाद अग्रवाल, महामंत्री भानीराम सुरेका, संयुक्त महामंत्री रामअवतार पोद्दार, विश्वनाथ मारोठिया- अध्यक्ष, उत्कल, डा. रमेश केजरीवाल- अध्यक्ष- बिहार, बासुदेव बुधिया- अध्यक्ष झारखंड, लोकनाथ डोकानिया- अध्यक्ष प. बंगाल, मौजीराम जैन- पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, रतन शाह- पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, किशनलाल अग्रवाल- उपाध्यक्ष उत्कल, राधेश्याम अग्रवाल- उपाध्यक्ष उत्कल, नन्द किशोर अग्रवाल- उपाध्यक्ष उत्कल, गोपाल कृष्ण जाखोटिया- महामंत्री उत्कल, गौरीशंकर अग्रवाल- बलांगीर सचिव आदि।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री शर्मा ने प्रस्तावों पर बहस में उठाये गये मुद्दों पर बोलते हुए कहा कि कुछ महत्वपूर्ण सुझाव वक्ताओं ने रखे हैं जैसे शिक्षा प्रणाली पर सम्मेलन को विचार करना चाहिए। राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय स्तर पर एक ही संविधान होना चाहिए जिस पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए श्री शर्मा ने कहा कि सम्मेलन के संविधान में प्रावधान है कि जिस प्रांत का अपना संविधान नहीं है वहां राष्ट्रीय संविधान लागू होगा। राजस्थानी भाषा की मान्यता के प्रश्न पर श्री शर्मा ने कहा कि इस विषय पर पिछले २०-२५ वर्षों से सम्मेलन एवं अन्य कई संस्थाओं ने लगातार प्रयास किया है जिसके चलते गत वर्ष राजस्थान विधान सभा ने एक सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित किया है। सम्मेलन अब इस ओर सचेष्ट है कि केन्द्रीय सरकार इसे अपनी आठवीं सूची में जल्द से जल्द शामिल करे। इस संदर्भ में उन्होंने बताया कि श्री नन्दलाल रूंगटा के सहयोग से राष्ट्रीय सम्मेलन द्वारा राजस्थान भाषा साहित्य पुरस्कार की स्थापना की गई है एवं बम्बई राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया है।

श्री शर्मा ने कतीपय वक्ताओं द्वारा उठाये गये प्रश्नों पर स्पष्टीकरण किया कि महिला सम्मेलन एवं युवा मंच की स्थापना सम्मेलन ने ही की थी। ये दोनों संस्थाएं सम्मेलन के अभिन्न हिस्से हैं एवं राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय स्तर पर अनेक पदाधिकारी युवा मंच से ही उभरे हैं।

अन्त में उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विश्वनाथ मारोठिया ने धन्यवाद भाषण दिया एवं घोषणा की कि आगामी उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का अधिवेशन बालांगीर में किया जाना है।

झारखंड के अध्यक्ष श्री बासुदेव बुधिया ने आगामी अखिल भारतीय समिति की बैठक को रांची में आयोजित करने का निमंत्रण दिया।●

पश्चिम बंगीय प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

कोलकाता : प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का चुनाव सम्पन्न एवं पदाधिकारियों के नामों की घोषणा

श्री डोकानिया

३१ जुलाई, २००४, कलकत्ता हाईकोर्ट के निर्देशानुसार पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पदाधिकारियों का चुनाव कलकत्ता हाईकोर्ट द्वारा नियुक्त विशेष अधिकारी श्री विद्युत बनर्जी व अधिवक्ता श्रीमती सरोज तुलस्यान की देखरेख में सम्पन्न हुआ। मतदान के बाद विशेष चुनाव अधिकारी श्री विद्युत बनर्जी ने चुने गये पदाधिकारियों के नामों की घोषणा की, जो इस प्रकार है- सर्वश्री लोकनाथ- अध्यक्ष, गोपाल अग्रवाल- महासचिव, विश्वनाथ सराफ (रानीगंज), अशोक काजरिया (दुर्गापुर), सांवरमल अग्रवाल, विश्वनाथ सुल्तानिया, रामनिवास शर्मा व श्री भगवान खेमका - उपाध्यक्ष। १३२ लोगों ने मतदान किया जिसमें श्री लोकनाथ डोकानिया को १२५ मत प्राप्त हुए।

श्री सराफ

स्व. भंवरमल सिंघी जयन्ती समारोह उत्पन्न

९ अगस्त। प्रादेशिक सम्मेलन की ओर से स्व. भंवरमल जी सिंघी की ९०वीं जयंती श्रद्धा व उत्साह से मनायी गयी। कार्यक्रम का प्रारंभ परिवारिकी संस्था की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत प्रेरणा गीत से किया गया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए श्री रतन शाह ने उनके जीवन से जुड़े हुए संघर्षों की विभिन्न गाथाओं के संदर्भ में कहा कि स्व. सिंघी उपेदश नहीं देते थे, वरन् जो कुछ कहते थे, उसे जीवन में करते भी थे। बड़े से बड़े प्रलोभनों को छोड़ कर गलत को गलत कहने की ताकत रखते थे। वे ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने शिक्षा समाजसुधार व विचारों के क्षेत्र में अमिट छाप छोड़ी है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने स्व. सिंघी के सामाजिक अवदान को श्रद्धा के साथ याद किया। विशिष्ट वक्ता श्री गीतेश शर्मा ने स्व. सिंघी जी द्वारा किये गये प्रदर्शनों की महत्ता पर प्रकाश डाला। सम्मेलन के महामंत्री श्री भानीराम सुरेका ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर रंगकर्मी उमा झुनझुनवाला को नाटक के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियों के लिए विशेष रूप से सम्मानित किया गया। श्री प्रमोद शाह ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस अवसर पर 'परिवारिकी' की अध्यापिकाओं के साथ स्व. सिंघी के पुत्र श्रीकांत व सुपुत्री सुस्मिता गुप्ता भी उपस्थित थे। समारोह को सफल बनाने में सर्वश्री रामगोपाल बागला, गोपी धुवलिया, पूरनमल तुलस्यान, विश्वनाथ भुवालका, सांवरमल अग्रवाल, विश्वनाथ सुल्तानिया, रामनिवास शर्मा, श्री भगवान खेमका, विश्वनाथ सराफ, विमला डोकानिया आदि सक्रिय रहे। धन्यवाद ज्ञापन प्रांतीय सम्मेलन के अध्यक्ष श्री लोकनाथ डोकानिया ने किया।

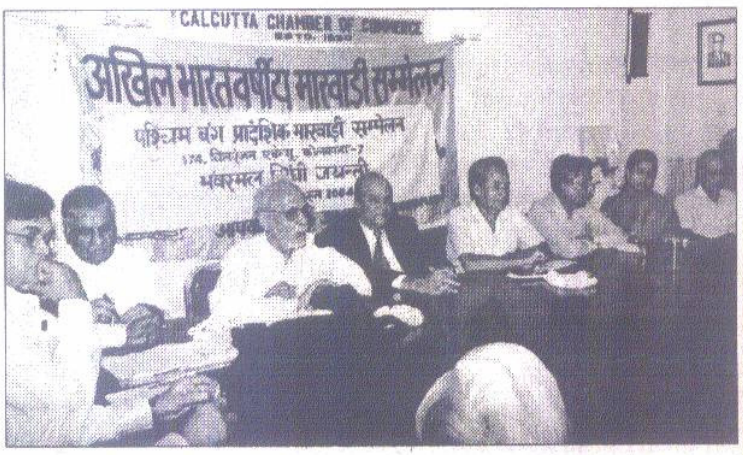

भानीराम सुरेका, गीतेश शर्मा, मोहनलाल तुलस्यान, रतन शाह, लोकनाथ डोकानिया, श्रीमती उमा झुनझुनवाला एवं श्री कान्ति।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

पटना : बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति के सदस्य बनने की अपील

बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति के संरक्षक- सर्वश्री विजय कुमार बुधिया, प्रबंध न्यासी, सीताराम छपरिया, अध्यक्ष- महेन्द्र कुमार चौधरी, महासचिव- प्रह्लाद राय शर्मा ने एक अपील जारी करते हुए कहा है कि समिति ५५ वर्षों के समाज के मेधावी जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को उच्च शिक्षा हेतु छात्रवृत्ति प्रदान कर समाज में शिक्षा के प्रचार-प्रसार में योगदान करती आ रही है। उन्होंने समाज के सभी लोगों से अनुरोध किया है कि वे ५१०१/- रुपया से पारिवारिक आजीवन, २५०१/- रुपया से आजीवन सदस्य एवं मासिक २००/-, ४००/-, ५००/- एवं १०००/- से पोषक सदस्य बनकर आर्थिक सहायता प्रदान करें।

बिरौली शाखा का पुनर्गठन

२३.७.२००४ को श्री मोहनलाल केडिया की अध्यक्षता में बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की एक बैठक में भवानीपुर राजधाम एवं बिरौली शाखा का पुनर्गठन किया गया। बैठक में प्रांतीय अध्यक्ष डॉ. रमेश कुमार केजड़ीवाल उपस्थित थे। उन्होंने दो आजीवन सदस्य बनाए एवं शाखा की उपयोगिता बताते हुए शाखा का पुनर्गठन किया। निम्नलिखित पदाधिकारियों का चयन सर्वसम्मति से किया गया :- अध्यक्ष- श्री धनराज लोढ़ा, उपाध्यक्ष- श्री शम्भु प्रसाद यादुका, श्री छेदीप्रसाद जालान (बिरौली), महामंत्री- श्री मुन्नालाल केडिया, संयुक्त महामंत्री- सर्वश्री गोपाल अग्रवाल, शम्भु केडिया, अशोक कुमार यादुका, गोपाल जालान, राजपाल अग्रवाल, कोषाध्यक्ष- श्री श्यामलाल गोपालका, संरक्षक- सर्वश्री मोहनलाल केडिया, शंकरदयाल यादुका, भोलाराम डोकानिया, मंत्री- सर्वश्री प्रभु गोपालका, घनश्यामलाल यादुका, रतनकुमार यादुका, विनोद केडिया।

मुजफ्फरपुर : एक्युप्रेशर शिविर

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. रमेश कुमार केजड़ीवाल द्वारा प्राप्त सूचनानुसार श्री बाल हनुमान मंडल, सूतापट्टी के तत्वावधान में २.७.२००४ से एक्युप्रेशर शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर में अब तक ३३२२ रोगियों का चुम्बकीय पद्धति से उपचार किया जा चुका है। मंडल के अध्यक्ष श्री विश्वनाथ भरतिया और महामंत्री श्री बद्रीप्रसाद अग्रवाल ने उपस्थित रहकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

हैदराबाद : शिक्षा समिति द्वारा छात्र-वृत्तियां प्रदत्त

आंध्र प्रदेश मारवाड़ी शिक्षा कोष ट्रस्ट का २५वां वार्षिक छात्रवृत्ति वितरण समारोह १५ अगस्त २००४ को मारवाड़ी हिन्दी विद्यालय, बेगम बाजार, हैदराबाद में सम्पन्न हुआ। ट्रस्ट द्वारा शैक्षणिक वर्ष २००४-०५ के लिए कालेजों में अध्ययनरत ८९ छात्रों को ४३,८५०/- रुपये की छात्रवृत्ति प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त आंध्र प्रदेश महेश बैंक लि. की ओर से कालेज में अध्ययनरत छात्राओं को ५,०००/- एवं उच्च माध्यमिक के छात्राओं को १०,०००/- का नकद अनुदान दिया गया। छात्रवृत्ति का यह अनुदान निर्धन एवं प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को प्रतिवर्ष नियमित रूप से दिया जाता है। छात्रवृत्ति वितरण समारोह में ट्रस्ट के प्रबंध न्यासी डा. आर.एम. साबू, चेयरमैन श्री गुलजारीलाल केडिया, आंध्र प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री रामकिशन गुप्ता, महामंत्री श्री रमेश कुमार बंग, सहमंत्री श्री राम प्रकाश भण्डारी विशेष रूप से उपस्थित थे। डा. साबू ने ट्रस्ट की विकास यात्रा का संक्षिप्त वितरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि स्थायी निधि में अभिवृद्धि नितान्त आवश्यक है क्योंकि बैंकिंग संस्थान ब्याज दरों में निरंतर कमी करते जा रहे हैं। इसका सीधा असर वितरित की जाने वाली छात्रवृत्ति पर पड़ रहा है।

प्रान्तीय महामंत्री श्री रमेश कुमार बंग ने उपस्थित छात्र-छात्राओं एवं उनके अभिभावकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि यद्यपि वर्तमान शिक्षा प्रणाली अत्यंत व्यय साध्य होती जा रही है तथापि योग्य छात्रों के लिए अर्थ की कोई कमी नहीं है और न होने दी जाएगी। आजकल स्वयंसेवी संस्थाओं के साथ-साथ सरकार, सरकार की वित्तीय संस्था एवं सहकारी वित्तीय संस्थान शिक्षा सहायता उपलब्ध करा रहे हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि छात्र-छात्राएं अपनी अन्तर्निहित प्रवृत्तियां एवं मानसिक क्षमता का सम्पूर्ण रूप से प्रयोग करें।

बिहार एवं असम में बाढ़ ग्रसित लोगों के बीच सम्मेलन व समाज द्वारा राहत कार्य

मुजफ्फरपुर प्राकृतिक आपदा के मद्देनजर आपात बैठक

• १७.७.२००४ को प्रांतीय सम्मेलन की मुजफ्फरपुर शाखा द्वारा प्राकृतिक आपदा को देखते हुए प्रान्तीय अध्यक्ष डॉ. रमेश कुमार केजड़ीवाल के निवास स्थान पर एक आपात बैठक बुलाई गई जिसमें नगर शाखाध्यक्ष श्री काशीप्रसाद हिसारिया एवं नगर शाखामंत्री श्री जयदेव प्रसाद मिमानी को प्रदेश अध्यक्ष द्वारा ११ हजार रुपयों की राशि राहत अनुदान के रूप में प्रदान की गई। उक्त राशि से चुड़ा, चीनी, नमक, मिर्च आदि खरीदकर बाढ़ पीड़ितों के मध्य २० से २५ जुलाई तक वितरित किए गए।

• बिहार प्रांतीय मारवाड़ी युवा मंच बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए पिछले १४ जुलाई से मुजफ्फरपुर जिले के विभिन्न क्षेत्रों में राहत वितरण कार्यक्रम लगातार जारी है। उक्त बातें मंच की बाढ़ राहत अभियान समिति के संयोजक गणेश ड्रोलिया एवं सह संयोजक कृष्ण मुरारी भरतिया ने कही। प्रशासन से मोटरबोट उपलब्ध कराए जाने पर कॉटी के अत्यधिक प्रभावित गांव मिठनसराय में चूड़ा एवं गुड़ का वितरण किया गया। श्री ड्रोलिया ने बताया कि अजय विराजका, श्रवण मुरारका, प्रदीक बंका, महेन्द्र तुलस्यान, शंभू सराफ सहित मंच के दर्जनों कार्यकर्ता दिन-रात बाढ़ पीड़ितों की सेवा में लगे हुए हैं।

• उत्तर बिहार वाणिज्य एवं उद्योग परिषद मुजफ्फरपुर ने सिही स्टेशन के निकट रेल पटरी पर शरण लिए बाढ़ पीड़ितों के बीच राहत सामग्री का वितरण रेल प्रशासन के सहयोग से शनिवार को किया।

मुजफ्फरपुर : बाढ़ पीड़ितों के लिए राहत कार्यक्रम

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. रमेश कुमार केजड़ीवाल द्वारा प्राप्त सूचनानुसार मोहिनीदेवी चोखानी मारवाड़ी महिला महाविद्यालय और लायन्स क्लब की ओर से गायघाट एवं मुशहरी प्रखण्ड में बाढ़ पीड़ितों के बीच खाद्य सामग्री और २ सौ पीस कपड़ा वितरित किया गया।

• मोहिनी देवी चोखानी मारवाड़ी महिला महाविद्यालय और लायंस क्लब की ओर से प्रो. शशिरंजन कुमार सिंह प्रवीण, डॉ. नीलू के नेतृत्व में गायघाट और मुशहरी प्रखंड में खाद्य सामग्री और २०० पीस कपड़ा वितरित किया गया।

उत्तर बिहार वाणिज्य परिषद ने बाढ़ राहत की समीक्षा करते हुए कहा कि अगर सभी संस्था आपस में तालमेल कर लें तो अधिक से अधिक बाढ़ पीड़ितों तक राहत पहुंचाने में अधिक मदद मिलेगी। उत्तर बिहार में बाढ़ की जो भयानक स्थिति है उसे देखते हुए राहत कार्य के लंबा खिंचने की संभावना है। यह बात बुधवार को उत्तर बिहार वाणिज्य एवं उद्योग परिषद मुजफ्फरपुर की ओर से स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा बाढ़ पीड़ितों के लिए की जा रही राहत कार्यों की समीक्षा के दौरान निकलकर आयी। बैठक में परिषद से अध्यक्ष श्री हनुमानमल बोथरा, पूर्व अध्यक्ष श्रीराम बंका, रामवतार नाथानी, बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन नगर शाखा मुजफ्फरपुर के अध्यक्ष श्री काशी प्रसाद हिसारिया, प्रांतीय अध्यक्ष डॉ. रमेश कुमार केजड़ीवाल, दिलीप तुलस्यान सहित कई सदस्य उपस्थित थे।

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

गुवाहाटी : बाढ़ पीड़ितों को खाद्य-सामग्री वितरित चिकित्सा शिवर आयोजित

१३ जुलाई को सम्मेलन एवं सूरजमल जुहारमल सांगानेरिया धर्मशाला ट्रस्ट की ओर से बाढ़ पीड़ितों में चावल, दाल, नमक, तेल, चीनी तथा बच्चों को दूध, बिस्कुट व पावरोटी वितरित किए गए। कार्य को सफल बनाने में ट्रस्ट बोर्ड के सभी सदस्य, ट्रस्टकी सेवा समिति के अध्यक्ष श्री प्रभुदयाल जालान, सदस्य सर्वश्री वेणीप्रसाद शर्मा, श्रवण कुमार, चंद्रप्रकाश, हर्ष सांगानेरिया व अंकित सुरेका ने पूर्ण सहयोग दिया।

२२ जुलाई को प्रांतीय सम्मेलन, गुवाहाटी शाखा की महिला सम्मेलन एवं मारवाड़ी दातव्य औषधालय द्वारा रंगिया के बाढ़ग्रस्त गांव कोलमारी, बारकुरिया तथा जयंतीपुर में संयुक्त रूप से एक चिकित्सा शिविर लगाकर बाढ़ पीड़ित मरीजों का इलाज कर उन्हें नि:शुल्क दवाइयां उपलब्ध कराई गईं। चिकित्सक टीम के डॉ. प्रमोद पहाड़िया, कांग्रेस कमेटी के नवनियुक्त अध्यक्ष एवं पूर्व उद्योग मंत्री श्री भुवनेश्वर कलिता ने इस कार्य को मानवता की श्रेष्ठ सेवा बताया। सर्वश्री वेणीप्रसाद शर्मा, ओमप्रकाश चौधरी एवं पुरुषोत्तम अजितसरिया ने शिविर हेतु एम्बुलेंस, दवा, डाक्टर सहित सभी जरूरी सहयोग प्रदान किया। शिविर संचालन में सर्वश्री जयचंद्र अग्रवाल, के. आर. चौधरी, श्रीमती उर्मिला अग्रवाल व उमा शर्मा का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ।

सिलचर शाखा : बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में बांटी राहत सामग्री तथा सैकड़ों लोगों का नि:शुल्क दवाइयों के साथ किया उपचार

बायें जो खड़े हैं सम्मेलन के उपाध्यक्ष परमेश्वर काबरा, सचिव ...विन्द प्रसाद मुंदड़ा, कार्यकर्ता मूलचन्दजी, सचिव विमल कुमार चौरड़िया, दायें जो खड़े हैं सम्मेलन के अध्यक्ष देवकीनन्दन जालान, पीछे खड़े हैं सम्मेलन के कार्यकर्ता। निचे बैठे सभी सम्मेलन का कर्मठ कार्यकर्ता हैं।

सिलचर शाखाध्यक्ष श्री देवकी नन्दनजालान के अनुसार २२.७.०४ को एक सभा में यह निर्णय लिया गया कि सभी सामाजिक मारवाड़ी समितियां पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के बैनर के नीचे एकजुट होकर कार्य करें। सिलचर के डी.सी. द्वारा आदेश प्राप्त कर २८ स्कूल, कालेज के अलावा यातायात बाधित स्थानों पर नौका द्वारा, जीप द्वारा जाकर २३.७.०४ से २८.७.०४ तक ५९ जगहों पर जहां शिविर थे, सैकड़ों कार्यकर्ताओं द्वारा खिचड़ी, पेयजल, पावरोटी, पुलाव करीब ३० से ३५ हजार लोगों में वितरण किया।

३०.७.०४ को सभा बुलाकर निर्णय लिया गया कि बाढ़ के बाद बीमारियों तथा भूख से रक्षा जहां तक संभव हो, करने का प्रयत्न करना है।

१. दिनांक १.८.०४ से श्रीकोना के मोहनपुर में १५० मरीजों की जांच कर नि:शुल्क दवाइयां वितरित की गई।

२. दिनांक ५.८.०४ को कुंवारपाड़ा में चिकित्सा शिविर लगाया गया एवं ६९९ मरीजों को जांच कर नि:शुल्क दवाइयां दी गई।

३. दिनांक ८.८.०४ को बड़खोला (कालीनगर) में चिकित्सा शिविर लगाकर ३६२ मरीजों की स्वास्थ्य जांच कर उनको नि:शुल्क दवाइयां वितरीत की गई।

४. दिनांक २.८.०४ से ८.८.०४ तक सिलचर शाखा में कीटनाशक दवाइयों का छिड़काव प्राय: सभी स्कूल, कालेजों तथा बाढ़ के पानी जमाव वाले जगह पर श्री कमल शारडा की देखरेख में की गई।

५. दिनांक ४.८.०४ को ५ बाढ़ पीड़ित जगहों पर गायों की प्राण रक्षा के लिए चारा डलवाया गया।

६. दिनांक ८.८.०४ को मच्छरदानी, बिस्कुट, गमछा आदि वितरण किया गया।

मारवाड़ी सम्मेलन नौगांव शाखा द्वारा व्यापक बाढ़ राहत कार्य

गत १९ जुलाई को सम्मेलन की नौगांव शाखा के अध्यक्ष बजरंगलाल नाहटा के नेतृत्व में व स्थानीय विधायक गिरीन्द्र कुमार बरुआ की अगुवाई में सदस्यों ने तुलसीमुख, पखे, देवरीगांव, बालीगांव, चक्रीगांव, दखिन-पाट आदि के लगभग २० शिविरों का दौरा कर करीब १२०० पैकेट चिवड़ा, ब्रेड, गुड़ आदि का वितरण किया।

गत २५ जुलाई को सम्मेलन की नौगांव शाखा के सदस्यों ने खलोईगांव अंचल के बाढ़ पीड़ितों की सुध ली एवं एक शिविर स्थापित कर एक हजार से ज्यादा लोगों को भरपेट भोजन उपलब्ध कराया जिसमें असम के पूर्व मुख्यमंत्री प्रफुल्ल महंत इस समस्त कार्यक्रम के दौरान साथ रहे। सम्मेलन की नौगांव शाखा ने इस दौरान करीब दो हजार पैकेट चिवड़ा, चीनी, बिस्कुट एवं मिल्क पाउडर वितरित किया गया।

बाढ़ राहत कार्य के दौरान भूतपूर्व मुख्यमंत्री प्रफुल्लो कुमार महन्तो के साथ मारवाड़ी सम्मेलन के सदस्यगण। नौगांव शाखा।

अगली कड़ी में एक अन्य अंचल ब्रह्मपुर, पाथरी एवं समीपवर्ती अंचल के शरणार्थी शिविरों में तकरीबन एक हजार खाद्य पैकेटों का वितरण किया। इन समस्त कार्यों में नौगांव शाखा के अध्यक्ष बजरंगलाल नाहटा एवं सचिव अनिल शर्मा के अलावा श्रीचन्द्र कुंडलिया, पवन गाड़ोदिया, जगदीश लोहिया, संजय मित्तल, सुरेन्द्र कर्वा, पवन बगड़िया, राजेन्द्र मंधड़ा, विनोद खोतावत, रामौतार खेतान, हनुमानमल कोठारी, कैलाश मूंधड़ा, प्रकाश पोद्दार, महेश गोड़ोदिया एवं पप्पू खेतान ने सराहनीय सहयोग प्रदान किया।

बाढ़ प्रभावित अंचल के लोगों ने भावुक शब्दों में मारवाड़ी समाज के प्रयास के प्रति आभर व्यक्त किया।

नौगांव राजस्थानी युवक संघ द्वारा बाढ़ सहायता कार्य

नौगांव राजस्थानी युवक संघ बुरी तरह प्रभावित फुलगुड़ी अंचल में एक सहायता शिविर का आयोजन कर करीब १५०० पैकेट चिवड़ा, गुड़, ब्रेड, बिस्कुट आदि बांटे। कैम्प में रह रहे लोगों हेतु जनरेटर की व्यवस्था की गई। स्थानीय मारवाड़ी हिन्दी विद्यालय में स्थापित शिविर में संघ ने पीड़ितों में दल, चावल, आलू आदि का वितरण किया।

फुलगुड़ी अंचल में ही बीमारी के बढ़ते प्रकोप को देखकर वृहत नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन मारवाड़ी महिला मंच के सहयोग से किया गया। डॉ. श्रीराम मोर एवं डॉ. प्रकाश अग्रवाल ने करीब ४५० मरीजों की स्वास्थ्य परीक्षा की। मरीजों में दवाइयों का नि:शुल्क वितरण किया गया।

संघ की महिला एवं युवती शाखा की सदस्यों ने बिस्कुट एवं वस्त्रों का वितरण किया एवं दोनों शिविरों में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

नगांव राजस्थानी युवक संघ, असम द्वारा बाढ़-पीड़ितों हेतु चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया।

राहा शाखा द्वारा राहत कार्य

२४-६-०४ को अचानक कोलंग नदी का बांध टूट जाने से करीबन १५-१६ किलोमीटर का क्षेत्र बाढ़ की चपेट में आ गया। सिर्फ १६ घंटे में इतनी जोर से बाढ़ का पानी आया कि कोई भी अपना सामान सुरक्षित नहीं कर सका। राहा शाखा ने पंचायती ठाकुरबाड़ी संचालन कमेटी के मुख्य संचालक नृसिंहलाल अग्रवाल, सह संचालक विष्णु खेतान एवं अन्य सदस्यों के सहयोग से स्थानीय विधायक श्री आनन्द राम बरुवा द्वारा १०० पैकेट चिवड़ा व १० मन गुड़ बाढ़ पीड़ित क्षेत्र में तुरंत वितरण किया गया। हमारे युवा कार्यकर्ता अनूप चौधरी, संदीप खेतान, जगदीश अग्रवाल, संदीप खाटूवाला आदि के सहयोग से दो किलोमीटर एरिया के अन्दर बिस्कुट, सरसो का तेल आदि का वितरण किया गया। बाढ़ का पानी चले जाने के बाद असहाय व्यक्तियों के बीच पैंट, शर्ट, साड़ी, सलवार-कुर्ता, धोती, कुर्ता व बच्चों के कपड़े लगभग ५०० घरों में वितरित किया गया। ५०० नइ मच्छेरी, डबल बेड तथा ३० जोड़ा स्कूल ड्रेस नया बनाकर वितरित किया गया। अभी भी सहयोग जाती है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

सत्र २००४-२००६ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति का चुनाव

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन के नये चुनाव घोषित किए गए हैं, जिसके अनुसार राष्ट्रीय अध्यक्षा- श्रीमती सावित्री बापना, औरंगाबाद, उपाध्यक्षा- श्रीमती प्रेमलता खण्डेलवाल, गोहाटी, श्रीमती विमला डोकानिया, कोलकाता,

श्रीमती पुष्पा खेतान, राउरकेला, श्रीमती संगीता सुल्तानिया, देवघर एवं श्रीमती वीरबाला कासलीवाल, उज्जैन। राष्ट्रीय सचिव- श्रीमती रेखा राठी, औरंगाबाद, सह सचिव - डॉ. सुजाता लाहोटी, श्रीमती छाया अग्रवाल, राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा- श्रीमती पुष्पा गुप्ता, सिडकी, सह कोषाध्यक्षा- श्रीमती मंजु अग्रवाल। पैटर्न- श्रीमती आशु दडी, औरंगाबाद, सलाहकार- श्रीमती सुशीलाजी मोहनका, पटना, श्रीमती सरोजजी बजाज, हैदराबाद, श्रीमती प्रेमा पंसारी, संबलपुर, श्रीमती जया डोकानिया, जमशेदपुर। श्रीमती अरुणा जैन, रामगढ़ केंट। कार्यकारिणी सदस्यायें :- श्रीमती रजनी मेहता, खामगांव, श्रीमती पुष्पा सुराणा हिंगोली, श्रीमती प्रभा माच्छर, औरंगाबाद, श्रीमती कुमकुम अग्रवाल, नागपुर, श्रीमती कल्पना लड्ढा, औरंगाबाद, श्रीमती अनिता बाफना, औरंगाबाद, श्रीमती गीता अग्रवाल, औरंगाबाद एवं श्रीमती शशि जैन, औरंगाबाद। इनके अतिरिक्त संपादिका श्रीमती सरोज बागडीया, औरंगाबाद, सह संपादिका- श्रीमती बबिता लीला, औरंगाबाद, सह संपादिका- श्रीमती निर्मला जैन, खामगांव।

सम्मान / बधाई

● सुप्रसिद्ध व्यवसायी एवं सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि एवं अ.भा.मा. सम्मेलन की कुमाऊ मण्डल के अध्यक्ष प्रमोद अग्रवाल गोल्डी को कुमाऊं विश्वविद्यालय नैनीताल द्वारा पी.एच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। एम.कॉम की परीक्षा प्रथम श्रेणी एवं सर्वोच्च स्थान (स्वर्ण पदक) के साथ उत्तीर्ण करने वाले श्री अग्रवाल ने **''उत्तर प्रदेश में सराधन की कार्य प्रणाली का मूल्यांकन''** वाणिज्य विषय पर अपना शोध कार्य वाणिज्य संकाय के प्रमुख प्रो. जगदीश चन्द्र तिवारी की देखरेख में पूरा किया।

४३ वर्षीय श्री अग्रवाल ने एम.कॉम की परीक्षा उत्तीर्ण करने के ठीक २१ वर्ष बाद अपनी पीएचडी पूरी की। डॉ. प्रमोद अग्रवाल गोल्डी अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के कुमाऊं मण्डल के अध्यक्ष हैं।

● ख्यातिप्राप्त साहित्यकार डा. गिरजाशरण अग्रवाल का 'सफर साठ साल का' पुस्तक का चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के कुलपति की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में लोकार्पण किया गया।

अन्य संस्थाएं

कोलकाता : मनीषिका द्वारा चेतना कविता प्रतियोगिता

शोध संस्कृति संस्कार सेवा संस्थान **'मनीषिका'** द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर सामाजिक चेतना कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। कविता के प्रस्तावित विषय निम्न हैं :- ● बेटी का जन्म (वातावरण), ● बेटे का जन्म (वातावरण), ● शादी में कुछ नहीं चाहिए, ● सुन्दर बहू चाहिए (लड़के की फरमाइश), ● ससुराल से पत्र मां के नाम (व्यथा का), ● लड़का जाने (पिता का जवाब), ● ताऊ के विवाह की स्वर्ण जयंती (घर में भाई की विवाह योग्य बेटी कंवारी), ● विवाह सम्बन्धों के बिचौलिए दलाल, ● लड़की भ्रूण हत्या, ● बलिवेदी (दहेज उत्पीड़न द्वारा), ● अज्ञात भय (पुत्री जन्म से ही), ● गीत सम्मेलन (अनुदेश्य अश्लील गीत, भौंडे नाच), ● फिजुल खर्ची की शान, ● तलाक का बढ़ता ग्राफ, ● ईजीओ आत्मवाद की कलह आदि।

कविता प्राप्ति की अंतिम तिथि ३० दिसम्बर २००४ है। प्रथम सम्मान- ५१००/-, द्वितीय सम्मान- ३१००/- एवं तृतीय सम्मान- २१००/- रुपये का है।

प्रार्थी 'मनीषिका' ४३, कैलाश बोस स्ट्रीट, कोलकाता-६, फोन : २३५०-२९६७ में अध्यक्ष श्री पुष्करलाल केडिया, प्रधान सचिव श्री कृष्ण कुमार सराफ या संयोजक श्री जयकुमार रूसवा से सम्पर्क कर सकते हैं।

कोलकाता : बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के नए अध्यक्ष

५ अगस्त। प्रखर राष्ट्रवादी, साहित्यकार, ओजस्वीवक्ता एवं सुरेन्द्रनाथ कॉलेज (सांध्य) के हिन्दी विभाग के रीडर एवं अध्यक्ष डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के नए अध्यक्ष निर्वाचित हुए। इसके पूर्व डॉ. त्रिपाठी कुमारसभा के साहित्यमंत्री एवं उपाध्यक्ष रह चुके हैं। २००४-०५ के लिए सम्पन्न हुए वार्षिक चुनाव में डॉ. त्रिपाठी के अलावा उपसभापति श्री कृष्णस्वरूप दीक्षित एवं श्री गोविन्द नारायण काकड़ा चुने गए। मंत्री श्री महावीर बजाज, उपमंत्री श्री अरूण प्रकाश मल्लावत, श्री अरूण सोनी, अर्थमंत्री श्री नन्दकुमार लढ़ा, साहित्यमंत्री डॉ. उषा द्विवेदी निर्वाचित हुए। कार्यकारिणी समिति के सदस्यों में सर्वश्री आचार्य विष्णुकांत शास्त्री, जुगलकिशोर जैथलिया, डॉ. विश्रांत वशिष्ठ, नेमचन्द कन्दोई, घनश्याम दास बेरीवाल, शान्तिलाल जैन, विमल लाठ, रामगोपाल सूंधा, अंजनी कुमार मूंधड़ा, दाऊलाल कोठारी, त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, नारायण दास व्यास, नन्दलाल सिंघानिया, संजय रस्तोगी, गजानन्द राठी, श्रीमती सुधा जैन एवं श्री राजू सुल्तानिया।

दिल्ली में परिचय सम्मेलन रविवार २६ सितम्बर २००४ को

अग्रवाल निदेशिका समिति के महामंत्री श्री कैलाश चंद गुप्ता के सूचनानुसार समिति के तत्वावधान में विवाह योग्य अग्रवाल युवक-युवतियों, विधुर-विधवाओं, परित्यक्त-परित्यक्ताओं का ३९वां परिचय सम्मेलन रविवार २६ सितम्बर २००४ को धर्मभवन, साउथ एक्सटेंशन भाग एक, नई दिल्ली- ११००४९ में होगा।

इस परिचय-सम्मेलन के विवरण-फार्म महामंत्री - अग्रवाल निदेशिका समिति, डी- ३६, साउथ एक्सटेंशन- एक नई दिल्ली ४९ के कार्यालय में नि:शुल्क उपलब्ध हैं।

विवरण-फार्म १३ सितम्बर २००४ तक कार्यालय में पहुंच जाने चाहिए।

१४वां राजस्थानी नृत्य महोत्सव दिल्ली में २५ सितम्बर को

राजस्थानी अकादमी के अध्यक्ष श्री रामनिवास लाखोटिया ने सूचना दी है कि १४वां राजस्थानी नृत्य महोत्सव २००४ अकादमी के तत्वावधान में २५ सितम्बर २००४ को कमानी सभागार, नई दिल्ली में आयोजित होगा। महोत्सव में श्रेष्ठ राजस्थानी लेखक को ११वां लखोटिया पुरस्कार २००४ प्रदान किया जायेगा। इसके अतिरिक्त दिल्ली एवं आसपास के विद्यालयों के छात्र और छात्राओं के लिए उसी दिन १४वीं राजस्थानी सामूहिक लोक नृत्य प्रतियोगिता २००४ आयोजित होगा।

माहेश्वरी क्लब दिल्ली द्वारा आयोजित प्रतिभा प्रयोगिता

माहेश्वरी क्लब द्वारा अपने सदस्यों एवं बच्चों के लिए प्रतिभा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य था कि उनके अन्दर छुपी हुई प्रतिभा को उभारना एवं आत्म विश्वास बढ़ाना। इसमें ५ वर्ष से लेकर ५० से भी ऊपर के सदस्यों तथा उनके परिवारवालों ने हिस्सा लिया।

प्रतियोगिता में चित्रकारी, गायन, मारवाड़ी गायन, वाद्य यंत्र, नृत्य, रचनात्मक लेखन विषय को सम्मिलित किया गया था।

प्रतियोगियों को ट्रस्ट दाउलाल राधाकृष्ण डागा स्मृति कोष द्वारा पुरस्कार वितरण किया गया।

मंत्री श्री प्रभाकर काबरा ने सभी निर्णायकों का परिचय दिया तथा इस कार्यक्रम की रूपरेखा बताई। अंत में माहेश्वरी क्लब के सभापति श्री अनिल जाजू ने आये हुए सदस्यों एवं प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतियोगियों तथा निर्णायकों मण्डली को अध्यक्ष दिया।

श्रद्धांजलि

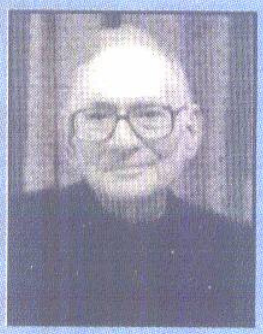

❊ सम्मेलन के निर्वतमान अध्यक्ष श्री नन्दकिशोर जालान के बड़े भाई शुभकरण जी जालान का ९३ वर्ष की उम्र में शनिवार, १४ अगस्त को स्वर्गवास हो गया। आप एक सफल व्यवसायी एवं शिक्षा प्रेमी थे तथा अनेक वर्षों तक उच्च माध्यमिक विद्यालय के निदेशक भी रहे। आप पांच ट्रस्टों के ट्रस्टी थे तथा हर वर्ष काफी रकम विभिन्न संस्थाओं को अनुदान में किया करते थे। आप अपने पीछे पांच पुत्रों से भरे पूरे परिवार को छोड़ गये हैं। सम्मेलन परिवार की ओर से श्रद्धांजलि देते हुए उनकी आत्मा की शांति एवं सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना है।

❊ सम्मेलन की दुर्गापुर शाखा के मंत्री श्री अशोक काजरिया के पिता रामकुमार जी काजरिया का दिनांक १७ मई को स्वर्गवास हो गया था। आप पांच बेटों सहित समृद्ध परिवार छोड़ गये हैं। दुर्गापुर में विभिन्न सामाजिग संगठनों से जुड़े रहे एवं समाज सेवा के कार्य में अपना अतुलनीय अवदान दिया। सम्मेलन की ओर से श्रद्धांजलि देते हुए उनकी आत्मा की शांति एवं सद्मति के लिए ईश्वर से प्रार्थना है।

❊ मोतीपुर प्रखंड के विभिन्न राजनीतिक दल के नेताओं एवं जनप्रतिनिधियों ने अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व उपाध्यक्ष श्री नारायण प्रसाद अग्रवाल के बड़े भाई ओम प्रकाश अग्रवाल की सुपुत्री समाज सेविका तारा अग्रवाल के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट किया है। सम्मेलन की ओर से श्रद्धांजलि देते हुए उनकी आत्मा की शांति व सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना है।

भूल सुधार

समाज विकास के जुलाई अंक के पृष्ठ २९ पर हमें खेद है कि 'प्रूफ रीडिंग' के कारण उस पृष्ठ पर छपी 'गीत' शीर्षक कविता में एक पंक्ति के शब्द गलत छप गये। यानी 'फिर बाहों में बंध जाए हम' के स्थान 'फिर बांहों में बंद जाओ तुम' छप गया। पाठकों से निवेदन है कि वे इन शब्दों को ठीक कर कविता का आनन्द लेंवे।

REGISTERED Postal Registration No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2004-06 SAMAJ VIKAS - AUGUST 2004 RNI Regd. No. 2868/68

21 Years of excellence

1983 - 2004

MODERN
MULTIMODAL
TRANSPORT LOGISTICS

ROADWINGS INTERNATIONAL (P) LTD.

WE PROVIDE HIGH PRODUCTIVITY EQUIPMENT
AND LOGISTIC SERVICES TO PORTS & RAILWAYS

MOBILE HARBOUR CRANES, REACH STACKERS, CRANES, FORK-LIFTS, TANKERS, TRAILERS

HEAD OFFICE
8, CAMAC STREET
KOLKATA- 700 017
TEL. NO. 2282-5784, 2282-5849
FAX NO. 033-2282 8760
e-mail : roadwings@vsnl.com

ZONAL OFFICE
"NIRMA PLAZA"
MAROL MAKWANA ROAD
ANDHERI (E), MUMBAI - 400 059
TEL. NO. 28507899, 9821075128
FAX NO. 022-28507928

We are a professionally managed multi-crore growing concern with vast experience in handling and transportation, having branches and agencies in all most all important cities of India & Nepal

DAILY DOOR TO DOOR SERVICES IN 22 TON. CAP. CONTAINERS
EX. KOLKATA TO DELHI, AHMEDABAD VICE-VERISA

COURTESY :- BHANI RAM SUREKA
Secretary General,
All India Marwari Federation

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700007
Phone : 2268-0319

To,